पड़ेगी। फलत: भाग्योदय हेतु काफी संघर्ष करना पड़ेगा। यात्राओं से रुपया खर्च होगा। जीवन में दुर्घटना का भय रहेगा। जातक अपने व्यक्तित्व के निखार हेतु रुपया खर्च करेगा।

लग्नभंग योग—लग्नेश छठे जाने से यह योग बना। फलत: ऐसे जातक को अपने आपको स्थापित करने के लिए काफी परिश्रम करना पड़ेगा।

विपरीतराज योग—अष्टमेश मंगल छठे होने से विमल नामक विपरीत राजयोग बनेगा। जातक के पास उत्तम वाहन, भौतिक ऐश्वर्य की कमी नहीं रहेगी।

अनुभव—**'बुधक्षेत्र युते कुष्ठरोग'** यदि इस मंगल पर शुभग्रह की दृष्टि न हो तो जातक को कुष्ठरोग या चर्मरोग होने की सम्भावना रहती है।

दशा—मंगल की दशा मिश्रित फल देगी। 'भोजसंहिता' के अनुसार यदि बुध की स्थिति अच्छी हो तो मंगल की दशा शुभफल देगी। मंगल शुभग्रहों में दृष्ट हो तो 60% उत्तम फल मिलेगा।

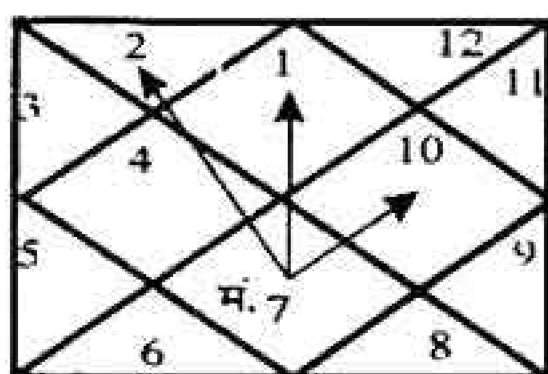
मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **मंगल+चन्द्र**—यहां चन्द्र+मंगल की युति ज्यादा सार्थक नहीं होगी फिर भी जातक धनवान होगा। जातक को रक्त चाप रहेगा।
2. **मंगल+सूर्य**—मंगल के साथ सूर्य **'विद्या बाधा योग' 'सन्तति हीन योग'** भी बनाता है।
3. **मंगल+बुध**—मंगल के साथ यदि बुध हो तो जातक का पराक्रम निश्चित रूप से भंग होगा। जातक असावधान रहा तो उसे जेल भी हो सकती है।
4. **मंगल+गुरु**—मंगल के साथ गुरु **'भाग्यभंग योग'** बनाता है परन्तु व्ययेश छठे होने से विपरीत राजयोग भी बना। जातक धनवान होगा। उत्तम वाहन, भवन का स्वामी होगा।
5. **मंगल+शुक्र**—मंगल के साथ शुक्र **'धनहीन योग' 'विवाहभंग योग'** बनाएगा। जातक का जीवन संघर्षमय होगा। दाम्पत्य सुख चिन्ताजनक रहेगा।
6. **मंगल+शनि**—मंगल के साथ शनि **'राजभंग योग' 'लाभभंग योग'** बनाएगा। जातक को सरकारी नौकरी नहीं मिलेगी। ठेकेदारी में नुकसान होगा।
7. **मंगल+राहु**—मंगल के साथ राहु जातक शत्रुओं का सम्पूर्ण नाश करने में समर्थ होगा। शत्रु भयभीत रहेंगे।
8. **मंगल+केतु**—मंगल के साथ केतु होने से जातक शुद्ध में सदैव विजयी रहेगा।

षष्टम भाव में मंगल का उपचार—

1. संतान के जन्म पर मीठे की जगह नमक बांटना (मीठे को नमकीन बनाकर बांटे)।
2. घर में हर वक्त दो बोरी अनाज रखना।
3. बजरंग बाण का पाठ करें।

मेषलग्न में मंगल की स्थिति सप्तम स्थान में



मेषलग्न में मंगल लग्नेश व अष्टमेश होता है पर लग्नेश को अष्टमेश का दोष नहीं होता। मंगल यहां तुला राशि में है। तुला राशि में मंगल प्रसन्न नहीं रहता क्योंकि शुक्र मेषलग्न में मुख्य मारक ग्रह है। ऐसा जातक **इंसाफ तौलने वाला**, दण्ड देने वाला 'जज' होता है। राज्य में अधिकार पाता है तथा इच्छित वस्तु को पाकर ही दम लेता है।

निशानी–विष्णु की तरह पोषक, भाई की औलाद को पालने वाला। जातक के जन्म से घर-परिवार बढ़े। पर जातक की पत्नी झगड़ालू होगी।

दृष्टि–तुला राशि गत मंगल की दृष्टि राज्यभाव, लग्नस्थान एवं धनस्थान पर होगी। फलत: राज में पाशा, व्यक्तित्व का रौब जमाने में, एवं धन कमाने में जातक को बराबर सफलता मिलेगी।

जातकतत्त्व अ. 3/85 के अनुसार **'द्यूते बलवति भौमे क्रोधी'** सातवें स्थान में बलवान मंगल हो तो जातक क्रोधी होगा।

अनुभव–तुलाराशि गत मंगल सप्तम में होने यह कुण्डली 'मांगलिक' कहलाएगी। जातक का चरित्र संदिग्ध होगा। उसके विवाह हेतु जीवन साथी की जन्मकुण्डली भी मांगलिक होनी चाहिए, तभी पूर्ण विवाह सुख मिलेगा।

दशा–'भोजसंहिता' के अनुसार मंगल की महादशा अति उत्तम फल देगी। मंगल की दशा जातक को धनवान बनाएगी। राज (सरकार) से लाभ दिलाएगी। मंगल की दशा-अंतर्दशा में जातक के व्यक्तित्व का बहुमुखी विकास होगा।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+चन्द्र**–मंगल के साथ चन्द्रमा हो तो **'महालक्ष्मी योग'** बनेगा। तथा मांगलिक दोष भी समाप्त होगा। जातक धनाढ्य होगा।
2. **मंगल+सूर्य**–मंगल के साथ सूर्य नीच का होगा। ऐसे जातक की पत्नी तेज स्वभाव की होती है।
3. **मंगल+बुध**–मंगल के साथ बुध जातक के जीवनसाथी को स्थाई रोग देता है।
4. **मंगल+गुरु**–मंगल के साथ भाग्येश गुरु की युति जातक का भाग्योदय विवाह के बाद कराती है।
5. **मंगल+शुक्र**–मंगल के साथ यदि शुक्र हो तो जातक का भाग्योदय विवाह के तत्काल बाद होगा। पत्नी रम्भा के समान सुन्दर होगी। **'मालव्ययोग'** के कारण जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा।
6. **मंगल+शनि**–यदि मंगल की शनि से युति हो या शनि से दृष्टि सम्बन्ध भी हो तो जातक

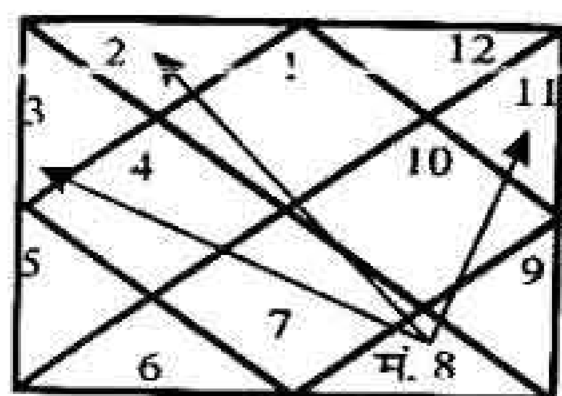
व्यभिचारी होगा। उसका अनेक स्त्रियों से सम्बन्ध होंगे। 'मन्दयुते दृष्टे शिश्नचुम्बन पर:' द्विभार्या योग बनता है।

7. **मंगल+राहु**–मंगल के साथ राहु हो तो पत्नी की मृत्यु पहले होगी।
8. **मंगल+केतु**–मंगल के साथ केतु हो तो जातक अधैर्यशाली होकर रजस्वला स्त्री के साथ भी सम्भोग करेगा।

सप्तम भाव में मंगल का उपचार–

1. बहन, लड़की, साली को मीठा खिलाना।
2. भाई की संतान को पालने से शुभ फल मिलेगा।
3. बेलदार पौधें घर में न लगावे।
4. जातक दही एवं लस्सी का अधिक उपयोग करे।

मेषलग्न में मंगल की स्थिति अष्टम स्थान में



मेषलग्न में मंगल लग्नेश व अष्टमेश होता है पर लग्नेश को अष्टमेश का दोष नहीं लगता। यहां अष्टम स्थान में मंगल स्वगृही है। ऐसा व्यक्ति दीर्घजीवी एवं कठोर परिश्रमी होता है। ऐसा जातक युद्ध में शत्रु को जीतने वाला एवं स्त्री को काम में सन्तुष्ट करने वाला होता है। विपत्तियों को हंसकर झेलने वाला, साहसी जातक होता है।

निशानी–मौत का फन्दा 1, 4, 8, 12 वर्ष की आयु बल्कि 15 वर्ष की आयु के बाद दूसरा भाई होगा। कई बार तो जातक अकेला ही रह जाता है। जीवन में लड़ाई-झगड़े का माहौल सदैव बना रहेगा।

अनुभव–अष्टमेश अष्टम स्थान में स्वगृही हो तो **'सरल योग'** नामक विपरीत राजयोग बनता है। जातक दीर्घजीवी, विद्वान एवं ख्यातिप्राप्त व्यक्ति होता है। जातक की भाषा कठोर होगी।

दृष्टि–अष्टमस्थ मंगल की दृष्टि लाभस्थान, धनस्थान एवं पराक्रम स्थान पर पड़ेगी। भला व्यक्ति गड्ढे में गिरा हुआ भी अपने आत्मीय जनों का भला करता है। फलत: मंगल इस जातक को व्यापार में लाभ देगा। 28 वर्ष के बाद यथेष्ट धन देगा तथा मित्रों व कुटम्बीजनों में पराक्रम (कीर्ति) बढ़ाएगा।

लग्नभंग योग–लग्नेश होकर मंगल आठवें जाने से यह योग बना। फलत: जातक को अपने आपको स्थापित करने के लिए काफी संघर्ष करना पड़ेगा।

दशा–'भोजसंहिता' के अनुसार मंगल की महादशा मिश्रित फल देगी। यदि मंगल शुभग्रह से दृष्ट हो तो मंगल की दशा शुभफल देगी।

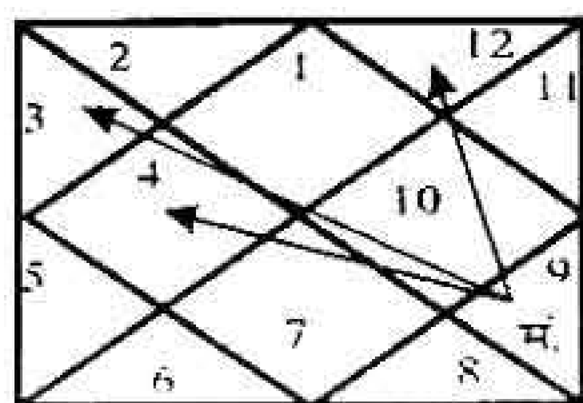
मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+चन्द्र**–यदि मंगल के साथ चन्द्रमा हो तो **'नीचभंग राजयोग'** बनेगा। चन्द्र+मंगल की युति से **'महालक्ष्मी योग'** भी बनेगा। जातक खूब पैसे वाला होगा। यहां मांगलिक दोष भी समाप्त होगा।
2. **मंगल+सूर्य**–मंगल के साथ सूर्य **'विद्याभंग योग'** बनाता है। ऐसे जातक के विद्या में बाध I, सन्तति में बाधा आती है।
3. **मंगल+बुध**–मंगल के साथ बुध जहां **'पराक्रमभंग योग'** बनाता है वही षष्टेश का अष्टम स्थान में जाने से विपरीत राजयोग बना। जातक धनवान, ऐश्वर्यवान होगा।
4. **मंगल+गुरु**–मंगल के साथ गुरु जहां **'भाग्यभंग योग'** बनाएगा। वहीं व्ययेश का अष्टम स्थान में जाने से विपरीत राजयोग भी बनेगा। जातक धनवान एवं ऐश्वर्यवान होगा।
5. **मंगल+शुक्र**–मंगल के साथ शुक्र **'धनहीन योग' 'विवाहभंगयोग'** भी कराता है। जातक का जीवन संघर्षमय होगा। वैवाहिक सुख भी विवादास्पद रहेगा।
6. **मंगल+शनि**–मंगल के साथ शनि **राजभंग योग** एव **'लाभभंग योग'** बनाता है। जातक को व्यापार-व्यवसाय में नुकसान होगा।
7. **मंगल+राहु**–यदि मंगल के साथ राहु हो तो पत्नी की मृत्यु पहले होगी।
8. **मंगल+केतु**–मंगल के साथ केतु जीवनदायी को स्थाई बीमारी या कष्ट देता है।

अष्टम भाव में मंगल का उपचार–

1. दक्षिण का दरवाजा घर में न रखे।
2. विधवा औरतों का आशीर्वाद समय-समय पर लें।
3. मीठी रोटी या लड्डू कुत्ते को खिलावें।
4. रोटी पकाने के समय तवे पर पानी के छींटे दे।
5. बंजरग बाण का नियमित पाठ करें।

मेषलग्न में मंगल की स्थिति नवम स्थान में



मेषलग्न में मंगल लग्नेश व अष्टमेश होता है। लग्नेश को अष्टमेश का दोष नहीं लगता। मंगल यहां धनु राशि में बैठकर भाग्यभवन में होगा। धनु राशि में मंगल हर्षित रहता है तथा अग्निसंज्ञक राशि में रहकर भी उद्दण्ड नहीं होता। ऐसा जातक राज्याधिकारी, भाग्यशाली एव स्वाभिमानी होता है। अपनी किस्मत आप चमकाता है। ऐसा जातक युद्ध के मैदान में, कोर्ट-कचहरी में विजय पाने वाला, शत्रुओं का मानमर्दन करने में सक्षम होता है। मंगल यहा उच्चाभिलाषी है अतः जातक बहुत महत्वाकांक्षी होगा।

निशानी–तख्त शाही खजाना। **जितने बाबा के भाई, उतने ही खुद के भाई।**

दृष्टि–धनु राशि में स्थित मंगल यहां व्ययभाव, पराक्रम एवं चतुर्थ भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। फलतः जातक यात्राओं द्वारा धनार्जन करेगा। मित्रों से एवं सघन जनसम्पर्क से लाभ होगा। जातक को वाहन का सुख, माता या माता की सम्पत्ति का सुख मिलेगा।

अनुभव–धनुराशि गत नवम भावस्थ मंगल जातक को जमीन का लाभ देता है। जातक को पिता के धंधे में रुचि होगी।

दशा–'भोजसंहिता' के अनुसार मंगल की महादशा शुभफल देगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+चन्द्र**–मंगल के साथ चन्द्रमा **'महालक्ष्मी योग'** बनाएगा। जातक धनवान होगा। यदि यहां गुरु भी हो तो जातक लालबत्ती की गाड़ी का हकदार होगा।
2. **मंगल+सूर्य**–मंगल के साथ सूर्य जातक को महाभाग्यशाली बनाएगा। जातक का भाग्योदय प्रथम सन्तति के बाद होगा।
3. **मंगल+बुध**–मंगल के साथ बुध जातक को महान पराक्रमी बनाएगा। जातक व्यापार प्रिय होगा।
4. **मंगल+गुरु**–यदि मंगल के साथ गुरु हो तो जातक कूटनीतिज्ञ एवं राजनीतिज्ञ होता है। वह चुनाव जीतता है तथा राजनीति में विधायक सांसद या मन्त्री का पद प्राप्त करने में सफल होता है।
5. **मंगल+शुक्र**–मंगल के साथ शुक्र जातक को महाधनी बनाएगा। जातक के विवाह के बाद महाधनी होगा।
6. **मंगल+शनि**–मंगल के साथ शनि जातक को ठेकेदारी से लाभ दिलाएगा।
7. **मंगल+राहु**–मंगल के साथ राहु भाग्योदय में हल्की रुकावट का संकेत देता है।
8. **मंगल+केतु**–मंगल के साथ केतु व्यापार में सफलतादायक है।

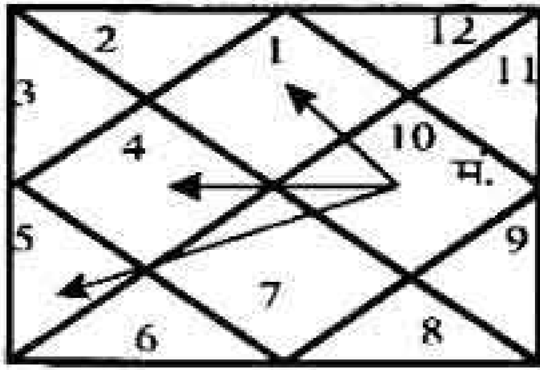
नवम भाव में मंगल का उपचार–

1. भाई की पत्नी की सेवा करें।
2. भाई की आज्ञा मानने से सबकुछ ठीक रहेगा।
3. सुगंधित लाल रुमाल हर वक्त जेब में रखें।
4. 'मंगल यंत्र' गले में धारण करे तो मंगल अनुकूल होगा।

मेषलग्न में मंगल की स्थिति दशम स्थान में

मेषलग्न में मंगल लग्नेश व अष्टमेश है। पर यहां मंगल को अष्टमेश का दोष नहीं लगता।

दिक्बली एवं कुलदीपक योग–मंगल दशम स्थान में होने से दिक्बली है। मंगल दशम



में होने से '**कुलदीपक योग**' भी बना। ऐसे बालक के जन्म लेते ही घर में धन व कीर्ति की वृद्धि होती है। बालक कुटुम्ब परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करता है।

रुचक योग–मेषलग्न में दशम भाव में मंगल उच्च का होने से यह योग बना।

परिणाम–इस योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति जिला, शहर या गांव का मुखिया होता है। उत्तम भवन एवं वाहन का सुख उसे सहज में प्राप्त होता है। ऐसा जातक जीवन में सभी प्रकार के भौतिक संसाधनों एवं ऐश्वर्य की प्राप्ति बलपूर्वक करता है। जातक शूरवीर व साहसी होता है तथा शत्रुओं का मानमर्दन करने में सक्षम होता है।

दृष्टि–बलवान मंगल की दृष्टि लग्नस्थान, चतुर्थस्थान एवं पंचम स्थान पर होने से जातक के तीन तेजस्वी पुत्र होते हैं।

निशानी–ब्रह्म तुल्य राजा। पत्री में यदि शनि ग्रह शुभ हो तो जितनेताये-चाचे उतने स्वयं के भाई। जातक के जन्म से धन-परिवार बढ़े।

दशा–'भोजसंहिता' के अनुसार मंगल की महादशा अत्यन्त शुभफल देगी।

व्यवसाय–जातक पुलिस, मिल्टरी या प्रशासन में होगा। उच्च श्रेणी का ठेकेदार, विद्युत व्यवसायी, मैकेनिकल, इंजीनियरिंग कार्यों में दक्ष, भूमि-भवन के क्रय-विक्रय से लाभ कमाने वाला, साहसी होता है।

भाग्योदय–जातक का भाग्योदय मंगल की दशा-अंतर्दशा में होगा। 28 वर्ष की आयु में होगा। प्रथम पुत्र के बाद भाग्योदय होगा। 32 वर्ष की आयु में भी पुन: भाग्योदय होगा।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

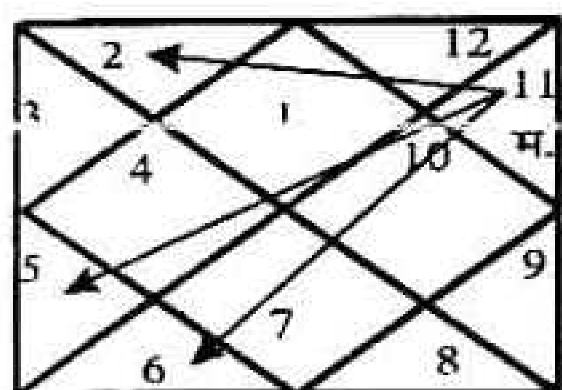
1. **मंगल+चन्द्र**–यदि यहां मंगल के साथ चन्द्रमा हो तो '**यामिनीनाथ योग**' एवं '**महालक्ष्मी योग**' बनेगा। जातक के पास दो-तीन उत्तम वाहन एवं श्रेष्ठ बंगले होंगे।
2. **मंगल+सूर्य**–मंगल के साथ सूर्य जातक को उच्च राज्याधिकारी बनाएगा।
3. **मंगल+बुध**–मंगल के साथ बुध जातक को महान् पराक्रमी बनाएगा।
4. **मंगल+गुरु–नीचभंगराजयोग**–यदि मंगल के साथ गुरु हो, तो गुरु का नीचत्व भंग हो जाएगा। जातक भाग्य पग-पग पर उसकी सहायता करेगा। जातक परोपकारी एवं दयालु होगा।
5. **मंगल+शुक्र**–यदि मंगल के साथ शुक्र हो तो जातक खुद तो बहुत कमाएगा ही परन्तु स्त्री से धन मिलेगा। स्त्री जातक के लिए लक्की साबित होगी।
6. **मंगल+शनि–किम्बहुना योग**–यदि मंगल के साथ शनि हो तो '**किम्बहुना योग**' बनेगा। अर्थात् इससे अधिक और क्या? शनि यहां राज्येश+लाभेश होकर स्वगृही होगा। जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा परन्तु दम्भी व हठी होगा। यदि यहां गुरु भी हो तो जातक लालबत्ती की गाड़ी वाला होगा।

7. **मंगल+राहु**–ऐसा व्यक्ति निरंकुश राजा होगा। अभिमानी होगा तथा अपने से बड़ा किसी को नहीं समझेगा।
8. **मंगल+केतु**–मंगल के साथ केतु व्यक्ति को शत्रुघ्ना, पराक्रमी व शूरवीर बनाता है।
9. यहां चन्द्र+मंगल+शनि+गुरु की युति जातक को निश्चित ही राजा (मिनिस्टर) बनाएगी।

दशम भाव में मंगल का उपचार–

1. काले व्यक्ति, काना, नि:स्तान की सेवा करने से लाभ होगा।
2. घर के स्वर्ण आभूषण बुरे वक्त में न बेचे। बेचने से संतान हानि एवं परिवार में बरबादी की शुरुआत होगी।
3. दूध को आग पर उफनने से बचावे।

मेषलग्न में मंगल की स्थिति एकादश स्थान में



मेषलग्न में मंगल लग्नेश व अष्टमेश होता है। लग्नेश को अष्टमेश का दोष नहीं लगता। मंगल यहां कुम्भ राशि में है। कुम्भ शनि की राशि में है। शनि मेषलग्न हेतु पापफल देने वाला है। फिर भी ऐसा जातक गुरुभक्त एवं उच्च पदाधिकारी होगा। उसे राजनीति में अनायास सफलता मिलती है।

निशानी–फकीरी वेष लग्न से जिस राशि तक गुरु हो, उतने भाई होंगे।

दृष्टि–कुम्भ राशि में स्थित मंगल की दृष्टि धनस्थान, पंचमभाव एवं षष्टम् भाव पर होगी। ऐसा जातक जीवन में यथेष्ट धन कमाता है। प्रथम सन्तति के बाद तीव्रता से भाग्योदय होता है। जातक अपने शत्रुओं को परास्त करता है तथा शत्रुओं को परास्त करने में किसी की सहायता लेना पसन्द नहीं करता है।

अनुभव–कुम्भ राशिगत एकादश स्थान में स्थित मंगल जातक को सरकारी नौकरी दिलाता है पर जातक अपने अधिकारी के साथ तकरार करता है।

दशा–'भोजसंहिता' के अनुसार मंगल की महादशा उत्तमफल देगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

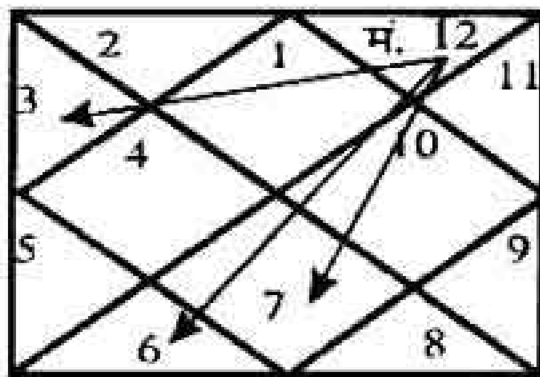
1. **मंगल+चन्द्र**–यहां चन्द्र+मंगल युति **लक्ष्मी योग** बनाएगी। जातक धनवान होगा।
2. **मंगल+सूर्य**–मंगल के साथ सूर्य जातक को विद्या के द्वारा लाखों रुपये कमाने में सफलता देगा।
3. **मंगल+बुध**–मंगल के साथ बुध जातक को मित्रों द्वारा धन दिलाएगा।
4. **मंगल+गुरु**–मंगल के साथ गुरु जातक को महान् उद्योगपति बनाएगा।
5. **मंगल+शुक्र**–मंगल के साथ शुक्र जातक विवाह के बाद महाधनी बनाएगा।

6. **मंगल+शनि**—मंगल के साथ यदि शनि हो तो जातक न्यायाधीश (जज) होगा। स्वत: ही भले-बुरे का लेखा-जोखा करता रहेगा। धन भी न्याय से कमाएगा पर मंगल के कारण दम्भी होगा।
7. **मंगल+राहु**—मंगल के साथ राहु व्यापार में नुकसानदायक है।
8. **मंगल+केतु**—मंगल के साथ केतु उद्योग में तनाव देगा।
9. 'शुभद्वययुते महाराजाधिपत्य योग' यदि इस मंगल के साथ कोई भी दो शुभ ग्रह हो तो जातक महाराजाधिराज के समान ऐश्वर्यशाली होगा।
10. यदि यहां चन्द्र+मंगल+सूर्य+शनि हो तो जातक निश्चित ही (राजा) मिनिस्टर होगा और उसका लड़का राजकुमार (उसके पद का उत्तराधिकारी) होगा।

एकादश भाव में मंगल का उपचार—

1. सिन्दूर या शहद मिट्टी के बर्तन में रखकर श्मशान की जमीन में दबावे।
2. 'मंगल यंत्र' धारण करें।
3. लाल कुत्ता पाले।
4. छोटे बच्चों को घर में रखे।

मेषलग्न में मंगल की स्थिति द्वादश स्थान में



मेषलग्न में मंगल लग्नेश व अष्टमेश होता है, पर लग्नेश मंगल को अष्टमेश का दोष नहीं लगता। मंगल यहां मीन राशि होकर बारहवें स्थान पर होगा। मीन राशि गुरु की राशि है। गुरु मेषलग्न वालों के लिए योगकारक है। फलतः मीन राशि में मंगल हर्षित एवं नियंत्रित रहेगा। ऐसा जातक शत्रुओं को परास्त करने में समर्थ एवं घर का मुखिया होता है। जाताक यात्राएं अधिक करता है एवं बाप-दादाओं की कीर्ति को बढ़ाता है। हाथ खर्चीला होता है। जातक दानी होता है।

निशानी—प्राण जाए पर वचन न जाए। गुरु भक्त होगा। जातक का बड़ा भाई जरूर होगा पर जीवित रहने की कोई शर्त नहीं।

अनुभव—'भोजसंहिता' के अनुसार मंगल द्वादश में जातक का रुपया मुकदमे में, अपराध प्रवृत्ति एवं शत्रुनाश में खर्च कराता है।

दृष्टि—मीन राशि गत मंगल यहां पराक्रम स्थान, छठे स्थान एवं सप्तम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। फलत: ऐसे जातक को मित्रों से लाभ, सघन जनसम्पर्क से लाभ होता है। जातक अपने पराक्रम से शत्रुओं का नाश करता है। उसे पत्नी का सुख मिलता है। पत्नी आज्ञा में रहता है।

दशा–भोजसंहिता के अनुसार जातक को मंगल की महादशा मिश्रित फल देगी। यदि शुभग्रहों की दृष्टि मंगल पर हो तो मंगल की दशा शुभ फल देगी।

मंगल का अन्यग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+चन्द्र**–मंगल के चन्द्र की युति जातक को धनवान बनाएगी। मांगलिक दोष भी नष्ट करेगी।
2. **मंगल+सूर्य**–मंगल के साथ सूर्य **'विद्याभंग योग'** एवं **'संतानहीन योग'** बनाता है। जातक उच्चविद्या प्राप्ति या उत्तम सन्तति प्राप्ति में बाधा महसूस करेगा।
3. **मंगल+बुध**–मंगल के साथ बुध **'विपरीतराज योग'** बनाएगा। ऐसे जातक के पास गाड़ी, बंगला, नौकर-वाहन सबकुछ होगा।
4. **मंगल+गुरु**–मंगल के साथ गुरु **'विपरीतराज योग'** बनाएगा। साथ ही **'भाग्यभंग योग'** के कारण संघर्ष की स्थिति भी उत्पन्न करेगा।
5. **मंगल+शुक्र**–मंगल के साथ शुक्र **'धनहीन योग'** **'विवाहभंग योग'** बनाता है पर द्वादश शुक्र उच्च का विदेश-व्यापार में, स्त्री मित्रों से धन दिलाएगा।
6. यदि गुरु या सूर्य मंगल के साथ हो तो जातक को पुत्र सन्तति का पूर्ण सुख मिलता है। अपने बेटों-पोतों का खिलाएगा एवं उनकी तरक्की होते देखेगा।
7. यदि यहां मंगल के साथ गुरु+बुध की युति हो तो यह भी जबरदस्त राजयोगकारक है।
8. यदि यहां पर चंद्र+मंगल+गुरु+शुक्र की युति हो तो जातक (राजा) मिनिस्टर होगा एवं लालबत्ती का हकदार होगा।

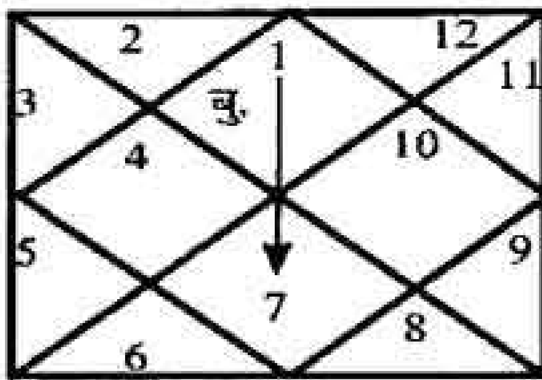
द्वादश भाव में मंगल का उपचार–

1. सूर्य के अर्घ्य की मीठा डालकर जल चढ़ाये।
2. लाल-भूरे कुत्तों को मीठी रोटियां खिलाना।
3. मंदिर में पताशा चढ़ाकर बच्चों को बांटने से अशुभ फल नष्ट होगा।
4. घर में जंग लगा हुआ, हथियार, चाकू, बर्तन न रखें।
5. बंजरग बाण का नियमित पाठ करें।
6. ऋणमोचन मंगल स्तोत्र का पाठ करें।

❑❑❑

मेषलग्न में बुध की स्थिति

मेषलग्न में बुध की स्थिति प्रथम स्थान में



मेषलग्न में बुध तृतीयेश व षष्टेश होने से पापी है। लग्नेश मंगल बुध का मित्र नहीं है। प्रथम स्थान में बुध मेष राशि का होगा। जातक विद्यवान्, विद्वान, उच्च शिक्षित होगा। जातक ज्योतिषी, मंत्र शास्त्र ज्ञाता एवं विदेशी विद्या, कम्प्यूटर से लाभ कमाने वाला होता है। शास्त्र कहते हैं–

हयरथनरनागोद्यानरत्नैः प्रपूर्णो,
जलधितटनिवासी, रत्नतुल्यं च धान्यम्।
बहुजनकुलमित्रैः सत्यवादी प्रसूतो,
भवति यदि च केद्री, दैत्यपूज्यो बुधश्च॥ मानसागरी श्लोक8/पृ. 243

निशानी–राजा या हाकिम, खुदगर्ज, शरारती, बदनाम। जातक का जन्म दिन के समय का होगा।

अनुभव–लग्न में बुध वाला जातक व्यापारिक बुद्धि से ओत-प्रोत होता है। प्राय: सी.ए. या अच्छा सलाहकार होता है। जातक को कम्प्यूटर लाईन से लाभ होता है। **'भोजसंहिता' के** अनुसार जातक उतावला होगा।

दशा–बुध की दशा उत्तम फल देगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

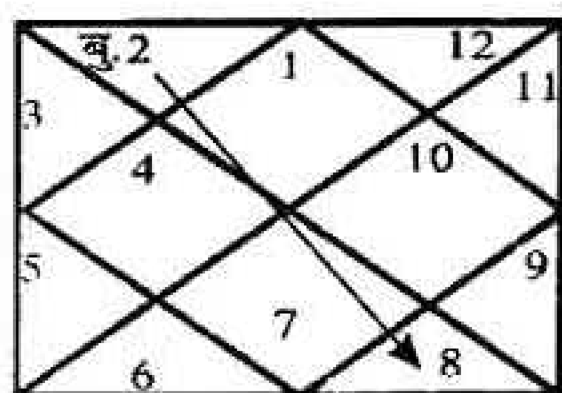
1. **बुध+सूर्य**–बुध के साथ यदि सूर्य हो तो जातक का जन्म वैशाख मास में सूर्योदय के समय का होगा। पंचमेश सूर्य की तृतीयेश+षष्टेश। बुध के साथ लग्न में युति होने के कारण बुधादित्य योग बना। यह एक प्रकार का शक्तिशाली राजयोग है। जातक महान पराक्रमी एवं इन्द्रतुल्य ऐश्वर्य को भोगने वाला, राज्यमंत्री या सांसद होगा।
2. **बुध+चन्द्र**–बुध के साथ यदि सुखेश चन्द्रमा हो तो जातक का जीवन साथी सुन्दर होगा। जातक की माता बीमार रहेगी।
3. **बुध+मंगल**–बुध के साथ मंगल हो तो भोजसंहिता के अनुसार जातक शूरवीर, साहसी होने के साथ-साथ बुद्धिमान भी होगा तथा शत्रु को परास्त करने में बुद्धिबल का प्रयोग करेगा। **'रुचक योग'** के कारण राजा का मंत्री होगा। केबिनेट मिनिस्टर होगा।

4. **बुध+गुरु**—बुध के साथ गुरु होने पर जातक परम भाग्यशाली होगा।
5. **बुध+शुक्र**—बुध के साथ धनेश+सप्तमेश शुक्र हो तो जातक का जीवन साथी अति सुन्दर एवं पुष्ट शरीर वाला होगा। जातक के पास सुन्दर वाहन एवं सुन्दर मोबाईल होगा।
6. **बुध+शनि**—शनि यहां नीच का होगा। पराक्रमेश बुध की लाभेश के साथ युति व्यक्ति को बुद्धिमान होने के साथ-साथ हठी व जिद्दी बनाती है। व्यक्ति निःसदेंह धनवान होगा।
7. **बुध+राहु**—राहु यहां जातक को लड़ाकू बनाएगा। जातक महान् बुद्धिमान एवं चालाक होगा।
8. **बुध+केतु**—बुध के साथ केतु जातक को युद्ध में विजय दिलाएगा। जातक बुद्धिबल में शत्रुओं को निरुत्तरित कर देगा।

प्रथम भाव में बुध का उपचार–

1. शुभ काम (धर्म-कर्म) करे, मांसाहार न करे।
2. गणपति की उपासना करें।
3. हरे रंग का प्रयोग कम किया करें।

मेषलग्न में बुध की स्थिति द्वितीय स्थान में



मेषलग्न में बुध तृतीयेश व षष्टेश होने से पापी है। लग्नेश मंगल भी बुध का मित्र नहीं है। द्वितीय स्थान में बुध वृष राशि का होगा। ऐसा जातक सबको तारने वाला, हाजिर जबाब, धनवान-सुखी, वक्ता एवं वाचाल होता है। जातक पुस्तकों के व्यापार से लाभ कमाने वाला, व्यापारी होता है।

अनुभव—भोजसंहिता के अनुसार ऐसा जातक बुद्धि बल से धन कमाएगा। जातक अच्छा वक्ता होगा। बुध यहां स्वगृहाभिलाषी होने से जातक महत्वाकांक्षी होगा। तथा अन्जान व्यक्ति को अपना हितैषी मित्र बनाने में कुशल होगा। जातक मीठी-मधुर वाणी बोलता है।

निशानी—योगी, राजा, मतलब परस्त, ब्रह्मज्ञानी।

दशा—बुध की दशा जातक को धनवान बनाएगी। मित्रों द्वारा लाभ होगा। बुध की दशा में जातक व्यापार द्वारा धन अर्जित करेगा।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध+सूर्य**—बुध के साथ सूर्य होने से 'बुधादित्य योग' बनेगा। यह एक प्रकार का राजयोग है। जो जातक की उन्नति हेतु विविध आमदनी के जरिए खोलेगा।
2. **बुध+चन्द्र**—बुध के साथ यदि चन्द्रमा हो तो जातक अत्यधिक धनी व्यक्ति होगा। वाणी विनम्र होगी पर कभी-कभी अपनी बात को खुद ही काट देगा। विरोधाभाषी बयान देगा। धन का अपव्यय जीवन में होता रहेगा।

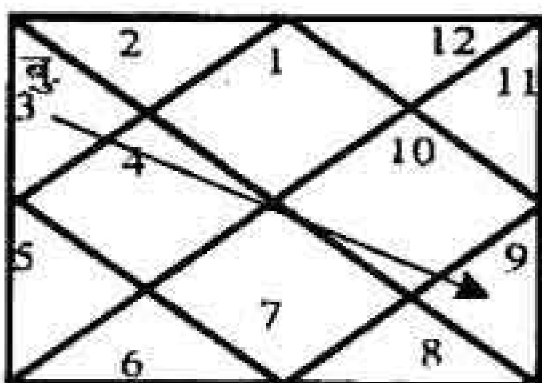
3. **बुध+मंगल**—बुध के साथ लग्नेश+अष्टमेश मंगल हो तो जातक स्व पराक्रम से खूब कमायेगा।
4. **बुध+गुरु**—यदि बुध के साथ गुरु हो या बुध गुरु से दृष्ट हो तो जातक गणितशास्त्र, कम्प्यूटर क्षेत्र का विलक्षण विद्वान् होगा।

   'गुरुणायुते वीक्षिते वा गणितशास्त्रीधिकारेण सम्पन्नः
5. **बुध+शुक्र**—बुध के साथ यदि शुक्र हो तो **'मित्रमूल धनयोग'** एवं **'शत्रुमूल धनयोग'** की सृष्टि होगी। जातक को मित्रों द्वारा एवं शत्रुओं द्वारा यथेष्ट धन की प्राप्ति होगी।
6. **बुध+शनि**—बुध के साथ दसमेश+लाभेश शनि जातक को निसंदेह धनवान बनाएगा। जातक व्यापारी होगा। वाणी कुटिल एवं व्यंग्यात्मक होगी।
7. **बुध+राहु**—बुध के साथ राहु धन के घड़े में भारी छेद को बताता है। जातक भारी आर्थिक संघर्ष में से गुजरेगा।
8. **बुध+केतु**—बुध के साथ केतु वाणी में लड़खड़ाहट देगा।
9. यदि यहां बुध+चन्द्र+शुक्र+गुरु की युति हो तो जातक (राजा) मिनिस्टर होगा। इसके आवक के अनेक जरिए होने से वह अति धनवान व्यक्ति होगा।

द्वितीय भाव में बुध का उपचार–

1. तोता, भेड़, बकरी न पालना।
2. दूध या चावल मंदिर में देना।
3. गणपति की नित्य उपासना करना।

मेषलग्न में बुध की स्थिति तृतीय स्थान में



मेषलग्न में बुध तृतीयेश व षष्टेश होने से पापी है। लग्नेश मंगल बुध का मित्र नहीं है। तृतीय स्थान में बुध मिथुन राशि का स्वगृही होगा। ऐसा जातक भाइयों के सुख से युक्त, लम्बी आयुवाला, उच्च शिक्षा वाला व्यक्ति होता है। भृगुसूत्र के अनुसार– भ्रातृवान बहुसौख्यावान् पंचदशवर्षे क्षेत्रपुत्रयुतः ऐसा जातक पच्चीस वर्ष की आयु में धनवान हो जाता है। ऐसा जातक अध्ययन-अध्यापन कार्यों में लाभ प्राप्त करने वाला होता है।

निशानी—थूकने वाला, कोढ़ी मन्दा।

अनुभव—'भोजसंहिता' के अनुसार तृतीयस्थ स्वगृही बुध जातक को कम से कम दो बहिनों का सुख देगा। जातक को स्त्री-मित्र से लाभ होगा। तीसरे भाव में बुध भाइयों मे मतभेद पैदा करता है।

दशा—बुध की दशा बहुत अच्छी जाएगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध+सूर्य**–बुध के साथ यदि सूर्य हो तो '**बुधादित्य योग**' बनेगा। यहां तृतीयेश+पंचमेश की युति सार्थक होगी। जातक की सन्तति उत्तम होगी। जातक स्वयं विद्वान्, समाज का प्रतिष्ठित एवं पराक्रमी व्यक्ति होगा।
2. **बुध+चन्द्र**–बुध के साथ यदि चन्द्रमा हो तो जातक की पीठ पीछे निन्दा होगी। मित्र विश्वासनीय नहीं होगे।
3. **बुध+मंगल**–बुध के साथ लग्नेश मंगल जातक को महान् पराक्रमी बनाएगा। जातक को भाई-बहन दोनों का सुख होगा।
4. **बुध+गुरु**–बुध के साथ गुरु जातक को परम सौभाग्यशाली बनाता है। जातक को मित्रों से लाभ होगा।
5. **बुध+शुक्र**–बुध के साथ धनेश शुक्र मित्रों से धन दिलायेगा। जातक की बहन जातक की मददगार होगी।
6. **बुध+शनि**–बुध के साथ राज्येश+लाभेश शनि जातक को महान् पराक्रमी, कुशल व्यापारी एवं यशस्वी समाजसेवी बनाएगा।
7. **बुध+राहु**–बुध के साथ राहु जातक को कुटुम्बीजनों में विवाद कराता है।
8. **बुध+केतु**–बुध के साथ केतु जातक को धर्मध्वज बनाता है। जातक लेखन विद्या व ज्योतिष विद्या का जानकार होगा।
9. यदि यहां बुध के साथ सूर्य+चन्द्र+गुरु हो तो जातक महान पराक्रमी होगा। उसे पैतृक सम्पत्ति (धरोहर) मिलेगी, वह (राजा) मिनिस्टर तुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा।

तृतीय भाव में बुध का उपचार–

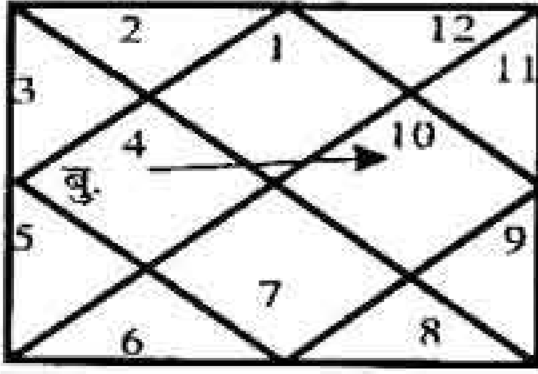
1. दुर्गा पूजन कर कन्याओं का आशीर्वाद लेना।
2. तोते को चुरी देना या मिर्च खिलाना।
3. रात को मूंग साबित भिगोकर सुबह पक्षियों को डालना।
4. दम की दवाई मुफ्त बांटना।
5. गणपति की आराधना करना।
6. द्वार पर हरे रंग के वास्तुदोष नाशक गणपति लगावे।

मेषलग्न में बुध की स्थिति चतुर्थ स्थान में

मेषलग्न में बुध तृतीयेश व अष्टेश होने से पापी है। लग्नेश मंगल बुध का मित्र नहीं है। बुध चतुर्थ स्थान में कर्क राशि का, शत्रुक्षेमी होगा। शास्त्रों में केन्द्रवर्ती बुध का शुभफल इस प्रकार कहा गया है–

हयरथनरनागोद्यानरत्नैः प्रपूर्णो
जलधितट निवासी रत्नतुल्यं च धान्यम्।

बहुजनकुलमित्रै: सत्यवादी प्रसूतो,
भवति यदि च केन्द्री, दैत्यपूज्यो बुधश्च॥–मानसागरी श्लोक 23/पृ. 243



ऐसा जातक अपने 'कुल का दीपक' होता है। दूसरों का कष्ट अपने ऊपर झेलने वाला राज्याधिकारी, लम्बी आयु वाला, उत्तम मकान, उत्तम वाहन से युक्त, धन-धान्य, रत्नों से परिपूर्ण सुखी जातक होता है। ऐसा जातक कम्प्यूटर एवं विदेशी व्यापार से लाभ कमाता है।

निशानी–राजयोग

अनुभव–'भोजसंहिता' के अनुसार जातक की मां बीमार रहेगी। उसे उत्तम वाहन सुख की प्राप्ति होगी। मामा के साथ सम्बन्ध अच्छे नहीं रहेंगे।

दशा–बुध की दशा अच्छी जाएगी।

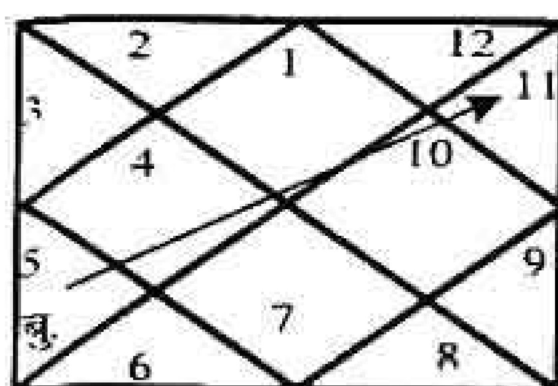
बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध+सूर्य**–बुध के साथ सूर्य होने से **'बुधादित्य योग'** बनेगा। यहां तृतीयेश व पंचमेश की युति राजयोग प्रदाता साबित होगी।
2. **बुध+चन्द्र**–बुध के साथ यदि चन्द्रमा हो तो जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा। उसे मां की ननिहाल की सम्पत्ति मिलेगी। जातक को मित्रों से लाभ होगा। उसका पराक्रम तेज रहेगा।
3. **बुध+मंगल**–बुध के साथ नीच का मंगल जातक की माता को बीमार करेगा एवं भूमि में विवाद उत्पन्न करेगा।
4. **बुध+गुरु**–बुध के साथ भाग्येश गुरु उच्च का होकर **'हंसयोग'** बनाएगा। जातक चक्रवर्ती राजा होगा।
5. **बुध+शुक्र**–बुध के साथ धनेश शुक्र जातक को शत्रु से धन दिलाएगा।
6. **बुध+शनि**–बुध के साथ दसमेश+लाभेश शनि होने से जातक बुद्धिबल से, व्यापार से धन कमाएगा।
7. **बुध+राहु**–बुध के साथ राहु जातक को मातृपक्ष से, मामा से नुकसान कराएगा।
8. **बुध+केतु**–बुध के साथ केतु जातक को शल्य चिकित्सा कराएगा।
9. यदि यहां बुध+सूर्य+चन्द्रमा+गुरु की युति हो तो जातक (राजा) मिनिस्टर होगा। लालबत्ती की गाड़ी का स्वामी होगा एवं पूर्ण ऐश्वर्य को भोगेगा।

चतुर्थ भाव में बुध का उपचार–

1. तोता, बकरी की पालना न करना।
2. 101 पलाश (ढाक) के पत्ते दूध से धोकर जल में प्रवाहित करें।
3. गणपति को नित्य अथवा प्रति बुधवार दूर्वा चढ़ावे।
4. प्रवेश द्वार पर वास्तुदोषनाशक गणपति लगावे।

मेषलग्न में बुध की स्थिति पंचम स्थान में



मेषलग्न में बुध तृतीयेश व षष्टेश होने से पापी है। यह लग्नेश मंगल का मित्र नहीं है। पंचम स्थान में बुध सिंह राशि का मित्रक्षेत्री होगा। ऐसा जातक शिक्षित, बुद्धिमान, मुकाबले की परीक्षा में सफलता प्राप्त करने वाला, सी.ए. कानूनी सलाहकार, ज्योतिष, कर्मकाण्ड, आयुर्वेद का पंडित (जानकार) होता है।

अनुभव–भोजसंहिता के अनुसार पंचमस्थ सिंह का बुध एक कन्या सन्तति जातक को अवश्य देगा।

निशानी–मुंह से निकला ब्रह्मवाक्य, उत्तम होगा।

दशा–बुध की दशा अच्छा फल देगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

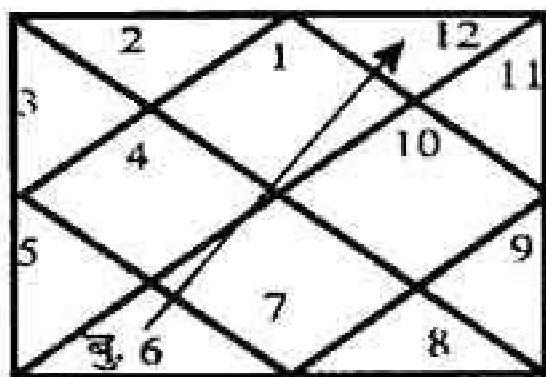
1. **बुध+सूर्य**–यदि बुध के साथ सूर्य हो तो **'बुधादित्य योग'** बनेगा। जातक का पुत्र पराक्रमी होता है। उसे कुटम्बीजनों एवं मित्रों से लाभ होता है। बलवान पंचमेश की तृतीयेश से युति जातक को महान पराक्रमी बनाएगी।
2. **बुध+चन्द्र**–बुध के साथ सुखेश चन्द्रमा उत्तम विद्यायोग कराता है। जातक के तीन कन्याएं होगी। कल्पना शक्ति प्रखर होगी।
3. **बुध+मंगल**–बुध के साथ मंगल प्रथम पुत्र कराता है। जातक तकनीकी विद्या, मैकेनिकल कार्यों का जानकार होगा।
4. **बुध+गुरु**–बुध के साथ गुरु जातक को महान् भाग्यशाली बनाता है। जातक अध्ययन-अध्यापन के कार्य में रुचि लेगा।
5. **बुध+शुक्र**–बुध के साथ धनेश शुक्र स्त्री मित्रों से लाभ दिलाएगा। जातक धनवान होगा।
6. **बुध+शनि**–बुध के साथ दसमेश+लाभेश शनि होने से जातक गूढ़ एवं रहस्यमय विद्याओं का जानकार होगा। बड़ा व्यापारी होगा।
7. **बुध+राहु**–बुध के साथ राहु संतान उत्पत्ति में बाधक है।
8. **बुध+केतु**–बुध के साथ केतु गर्भपात कराएगा। प्रथम सन्तति शल्य चिकित्सा से होगी।
9. यदि यहां बुध+चन्द्र+सूर्य+गुरु की युति हो तो जातक राजातुल्य ऐश्वर्यशाली, पराक्रमी एवं लालबत्ती की गाड़ी का हकदार होगा।

पंचम भाव में बुध का उपचार–

1. चांदी का छल्ला बायें हाथ में पहनना चाहिए।
2. गाय की सेवा करे या नित्य चारा खिलावे।

3. गणपति की उपासना करे।
4. पन्ना रत्न अभिमंत्रित कर धारण करे।

मेषलग्न में बुध की स्थिति षष्टम स्थान में



मेषलग्न में बुध तृतीयेश एवं षष्टेश होने से पापी है। बुध लग्नेश मंगल का मित्र नहीं है। षष्टम स्थान में बुध कन्या राशि में उच्च का होता है। जातक को समुद्री यात्रा, हवाई यात्रा से लाभ होता है। जातक उच्च शिक्षित, डॉक्टर, केमिस्ट, आयुर्वेद, ज्योतिष का ज्ञाता होता है। जातक की छापाखाना, पुस्तक, व्यवसाय में रुचि होती है। जातक दम्भी, विवादशूर व राज्यपूज्य होता है। 32 वर्ष के बाद उच्च उन्नति के योग बनेंगे।

अनुभव–यदि छठे घर का स्वामी छठे स्थान में स्वगृही हो तो हर्ष नामक **विपरीतराज योग** बनता है। जातक भाग्यशाली सुखी, अजेय, स्वस्थ व धनी होता है। शत्रु, रोग, ऋण नहीं होगा।

निशानी–गुमनाम योगी एवं दिल का राजा। यदि मंगल 4 या 8 भाव में हो तो माता का साथ बचपन में छूट जाएगा।

अनुभव–यहां बुध पराक्रमेश होकर छठे जाने से **'पराक्रमभंग योग'** बना। जातक के मित्र दगा देंगे। कोई ऐसी घटना घटित होगी। जिससे जातक की कीर्ति भंग होगी। जातक का यश कलंकित होगा।

दशा–बुध की दशा मिश्रित फल देगी। भोजसंहिता के अनुसार जातक धार्मिक यात्राएं, तीर्थ यात्राएं करेगा।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध+सूर्य**–बुध के साथ सूर्य होने से **'बुधादित्य योग'** बनेगा। पंचमेश सूर्य की षष्टेश बुध से युति राजयोग कारक होते हुए भी सन्तान सुख में बाधक है।
2. **बुध+चन्द्र**–बुध के साथ चन्द्रमा **'सुखहीन योग'** की सृष्टि करेगा। जातक को माता सुख, ननिहाल का सुख नहीं मिलेगा।
3. **बुध+मंगल**–बुध के साथ मंगल **'लग्नभंगयोग'** एवं **'विपरीतराज योग'** दोनों बनाएगा। जातक धनी होगा। गाड़ी का सुख होगा।
4. **बुध+गुरु**–बुध के साथ गुरु **'भाग्यभंग योग'** एवं **'विपरीतराज योग'** दोनों बनायेगा। जातक धनी होगा। गाड़ी-बंगले का सुख होगा।
5. **बुध+शुक्र**–बुध के साथ यदि शुक्र हो तो **'नीचभंग राजयोग'** की सृष्टि होगी। शुक्र का नीचत्व समाप्त हो जाएगा। ऐसे में **'मित्रमूल धनयोग'** एवं **'शत्रुमूल धनयोग'** की सृष्टि होगी। जातक को शत्रु द्वारा धन लाभ मित्रों द्वारा धन लाभ एवं बीमा कम्पनी द्वारा धन लाभ की प्राप्ति होगी।

6. **बुध+शनि**–बुध के साथ **'राजभंग योग'** एवं **'लाभभंग योग'** दोनों बनाएगा। जातक को आजीविका की प्राप्ति हेतु काफी संघर्ष करना पड़ेगा।
7. **बुध+राहु**–यहां राहु योगकारक है तथा बुध भी **विपरीत राजयोग** कारक है। अत: जातक महान पराक्रमी एवं धनी होगा।
8. **बुध+केतु**–बुध के साथ केतु जातक को धनी बनाता है परन्तु गुप्त बीमारी की शल्य चिकित्सा भी कराता है। जातक के जीवन में गुप्त शत्रु रहेंगे।

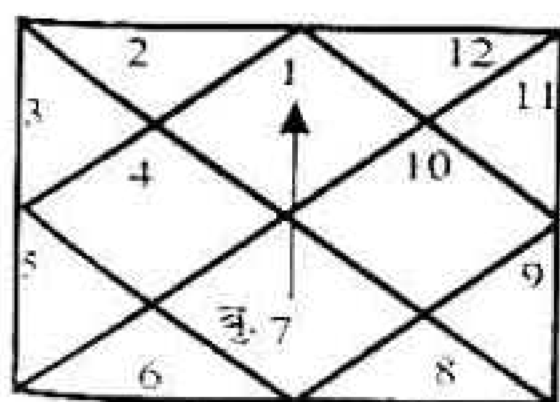
षष्टम भाव में बुध का उपचार–

1. चांदी की अंगूठी बांये हाथ में पहने।
2. गंगा जल बोतल में रखकर (शीशे के ढक्कन वाली) खेती की जमीन में बुधवार के दिन गाढ़े।
3. किसी शुभ कार्य हेतु जाते समय खस का अत्तर लगा कर जावे।
4. दोहती, भानजी को खुश रखे। कन्याओं का आशीर्वाद लें।
5. साबित मूंग या बुध की वस्तुओं का दान करें।
6. 'बुध कवच' का पाठ करें।
7. हरे रंग का सुगंधित रुमाल जेब में रखें।

मेषलग्न में बुध की स्थिति सप्तम स्थान में

मेषलग्न में बुध तृतीयेश व षष्टेश होने से पापी होगा। लग्नेश मंगल बुध का मित्र नहीं है। सप्तम स्थान में बुध तुला राशि में होकर केन्द्रवर्ती होगा। शास्त्रों के अनुसार–

हयरथ नरनागोद्यानरत्नै:प्रपूर्णो,
जलधितट निवासी, रत्नतुल्यं च धान्यम्।
बहुजनकुलमित्रै: सत्यवादी प्रसूतो,
भवति यदि च केन्द्री दैत्यपूज्यो बुधश्च।।–*मानसागरी श्लोक 81/पृ. 243*



कुलदीपक योग के कारण ऐसा जातक तेजस्वी एवं प्रतिष्ठित होता है। जातक विदेशी व्यापार, कम्प्यूटर-केमिस्टरी, दवाइयों के व्यापार से कमाएगा। जातक का जीवन साथी उच्चशिक्षित होगा। जातक अपनी पसन्द का विवाह करेगा।

निशानी–संसार के लिए पारस।

अनुभव–'भोजसंहिता' के अनुसार सप्तमस्थ तुला राशि का बुध होने से जीवनसाथी विनम्र होगा। ससुराल पक्ष व्यापारवर्गीय होगा। पत्नी बीमार रहेगी।

दशा–बुध की दशा उन्नति देगी। जातक का विवाह होगा। यदि विवाहित है तो गृहस्थ सुख में अपूर्व वृद्धि होगी।

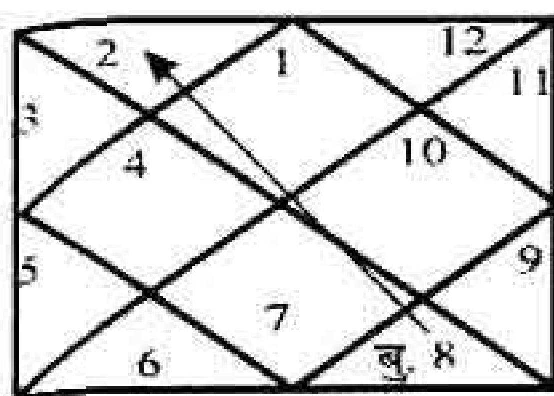
बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध+सूर्य**–बुध के साथ सूर्य होने से **'बुधादित्य योग'** बनेगा। पंचमेश सूर्य की युति षष्टेश तृतीयेश बुध के साथ केन्द्र में है यह राजयोगकारक है। ऐसा जातक राज्यपूज्य एवं विख्यात कीर्तियुक्त होता है।
2. **बुध+चन्द्र**–बुध के साथ यहां चन्द्रमा होने से जातक का जीवनसाथी सुन्दर, चंचल एवं बुद्धिमान होगा।
3. **बुध+मंगल**–बुध के कारण लग्नेश मंगल होने से कुण्डली 'मांगलोक' बनेगी। ऐसा जातक कठोर परिश्रमी होगा तथा उसे परिश्रम का फल भी मिलेगा परन्तु जीवन साथी में विचार नहीं मिलेंगे।
4. **बुध+गुरु**–बुध के गुरु होने से जीवनसाथी एवं जातक स्वयं भाग्यशाली होगा। पत्नी धार्मिक, पतिव्रता स्वामीभक्त होगी।
5. **बुध+शुक्र**–बुध के साथ स्वगृही शुक्र **'मालव्य योग'** बनाएगा। ऐसा जातक राजा के समान ऐश्वर्यशाली, वैभवशाली एवं धनी होगा। पत्नी अतिसुन्दर एवं पुष्ट गात्र वाली होगी।
6. **बुध+शनि**–बुध के साथ यहां शनि उच्च का होने से **'शशयोग'** बनेगा। ऐसा जातक राजा के समान परम पराक्रमी, धनवान, गाड़ी-बंगला, नौकर-चाकर से युक्त वैभवशाली मनुष्य होगा।
7. **बुध+राहु**–यहां बुध के साथ राहु जीवनसाथी का बिछोह तलाक अथवा पूर्व मृत्यु का संकेत देता है।
8. **बुध+केतु**–यहां बुध के साथ केतु गृहस्थ सुख में बाधक है। पत्नी-पत्नी के मध्य वैमनस्थता सम्भव है। गुप्त बीमारी भी सम्भव है।
9. यदि बुध के साथ सूर्य+गुरु+मंगल तो जातक राजातुल्य ऐश्वर्य भोगेगा। वह लालबत्ती की गाड़ी का हकदार होगा।
10. यदि यहां बुध+सूर्य+गुरु+मंगल+चन्द्र की युति हो तो जातक राजा (मिनिस्टर) ही होगा एवं लाल बत्ती की गाड़ी का स्वामी आजीवन रहेगा।
11. बुध सातवें एवं शुक्र छठे हो तो जातक की पत्नी स्थाई रूप से बीमार रहेगी।

सप्तम भाव में बुध का उपचार–

1. माता-लड़की के साथ एक जैसा व्यवहार करना।
2. पन्ने की अंगूठी पहनना। (पन्ने के अभाव में पन्नी पहन सकते हैं।)
3. अधिक थूकना या बार-बार थूकना, बंद करें। गुटका न खायें।
4. पन्ना जड़ा हुआ बुध यंत्र धारण करें।
5. गणपति की उपासना करें।

मेषलग्न में बुध की स्थिति अष्टम स्थान में



मेषलग्न में बुध तृतीयेश एवं षष्टेश होने से पापी है। बुध लग्नेश मंगल का मित्र नहीं है। अष्टम स्थान में बुध वृश्चिक राशि में होगा। जातक विद्वान्, धनवान, राज्यदरबार (सरकार) से मान-सम्मान, इज्जत पाने वाला, राज्याधिकारी होगा। स्त्री पक्ष से लाभ प्राप्त करने वाला होता है। पच्चीस वर्ष की आयु में अनेक कीर्ति-प्रतिष्ठा व सफलता प्राप्त करने वाला जातक होता है।

निशानी–छुपा तबाही का फन्दा, दो स्त्रियों वाला।

अनुभव–भोजसंहिता के अनुसार वृश्चिक राशि गत अष्टमस्थ बुध कीर्तिभंग कराता है। मित्र दगाबाज साबित होंगे। कोई ऐसी सामाजिक घटना परिवार में घटित होगी जिससे यश कलंकित होगा। साथ ही **विपरीत राजयोग** भी बनाता है। ऐसा जातक धनी होगा।

दशा–बुध की दशा अनिष्ट फल देगी।

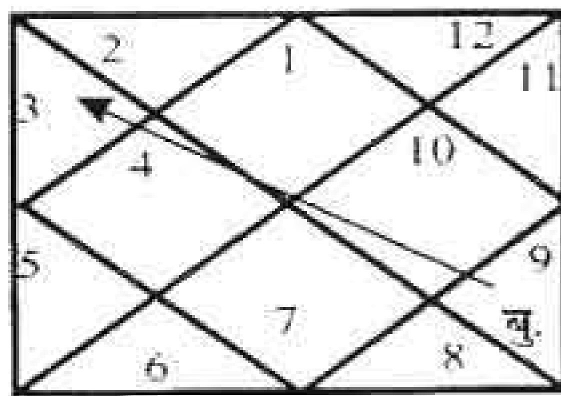
बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध+सूर्य**–बुध के साथ यदि सूर्य हो तो **'बुधादित्य योग'** बनेगा पर यह योग ज्यादा सार्थक नहीं होगा क्योंकि पंचमेश का आठवें जाना **संतानहीन योग** एवं अन्य दुर्योग की सृष्टि भी करता है।
2. **बुध+चन्द्र**–यदि बुध के साथ चन्द्रमा है तो चन्द्र नीच का होगा एवं **'सुखभंग योग'** बनेगा। मातृसुख में कमी आएगी। माता की अकाल मृत्यु होगी।
3. **बुध+मंगल**–यहां बुध के समय मंगल होने कुण्डली मांगलीक होगी पर अष्टमेश अष्टम स्थान में स्वगृही होने से विपरीत राजयोग बनेगा। जातक धनी होगा। गाड़ी-बंगले का स्वामी होगा।
4. **बुध+गुरु**–यहां बुध के साथ गुरु **'भाग्यभंग योग'** बनाता है परन्तु व्ययेश अष्टम में होने से **'विपरीतराज योग'** भी बनता है। ऐसा जातक धनी होगा। भागेदय संघर्ष के बाद होगा।
5. **बुध+शुक्र**–बुध के साथ **'विलम्बविवाह योग'** एवं **'धनहीन योग'** की सृष्टि करता है। ऐसा जातक आर्थिक विषमता का शिकार होता है। समय पर विवाह सुख नहीं मिलता।
6. **बुध+शनि**–बुध के साथ शनि **'राजभंग योग'** एवं **'लाभभंग योग'** बनाता है। ऐसा जातक ठेकेदारी एवं व्यापार में नुकसान उठाता है।
7. **बुध+राहु**–बुध के साथ राहु होने जीवन से गुप्त शत्रुओं का प्रकोप रहेगा। पैर की हड्डी टूटेगी।
8. **बुध+केतु**–बुध के साथ केतु होने से व्यक्ति विषय परिस्थिति में से गुजरेगा। दाये पांव में चोट पंहुचेगी।

अष्टम भाव में बुध का उपचार–

1. लड़का के नाम में चांदी का छल्ला डालना।
2. हरा अण्डरवियर पहने।
3. जन्म दिवस के दिन मिट्टी के बर्तन में शहद या चीनी भरकर वीरान जगह में दबाना।
4. सीढ़ियों की मरम्मत का ध्यान रखना।
5. गणपति की उपासना करें, प्रत्येक बुधवार को दूर्वा एवं लड्डू चढावें।

मेषलग्न में बुध की स्थिति नवम स्थान में



मेषलग्न में बुध तृतीयेश व षष्टेश होने से पापी है। मेषलग्न मे बुध लग्नेश मंगल का मित्र नहीं है। नवम स्थान बुध धनु राशि का होगा। ऐसा जातक परिवार की सेवा करने वाला, धार्मिक कार्य एवं परोपकार के कार्यों में रुचि रखने वाला होता है। भृगुसूत्र के अनुसार–वेदशास्त्रविशारद संगीतपाठकः दाक्षिण्यवान्' ऐसा जातक धर्मशास्त्र, नीति, संगीत का ज्ञाता एवं चतुर होता है। ऐसा जातक पिता का भक्त एवं परिजनों का प्यारा होता है।

निशानी–कोढ़ी तथा राजा एक साथ।

अनुभव–'भोज संहिता' के अनुसार धनु राशिगत नवमस्थ बुध जातक का भाग्योदय 32 वर्ष की आयु में कराएगा। मित्रों की मदद से जातक आगे बढ़ेगा। परिजनों का सहयोग रहेगा।

दशा–बुध की दशा उत्तम फल देगी। भाग्योदय कराएगी। यदि गुरु की स्थिति कुण्डली में अच्छी हो तो बुध की दशा का शुभत्व 40% और बढ़ जाएगा।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध+सूर्य**–बुध के साथ सूर्य होने से '**बुधादित्य योग**' बनेगा। पंचमेश तृतीयेश की युति यहां ज्यादा अच्छी तरह से मुखरित होकर जातक को प्रबल राजयोग देती है।
2. **बुध+चन्द्र**–बुध के साथ चन्द्रमा होने से जातक सुखी होगा। उत्तम वाहन एवं भवन का स्वामी होगा। माता सहायक होगी।
3. **बुध+मंगल**–बुध के साथ लग्नेश मंगल होने से जातक महापराक्रमी होगा। मंगल उच्चाभिलाषी होने से जातक महत्वाकांक्षी होगा।
4. **बुध+गुरु**–बुध के साथ यदि गुरु हो तो जातक राजातुल्य ऐश्वर्य भोगेगा। जातक को पुत्र सन्तति अवश्य होगी। प्रथम भाग्योदय 20 से 32 की आयु में हो जाएगा।
5. **बुध+शुक्र**–बुध के साथ शुक्र होने से जातक को पत्नी से, स्त्री-मित्रों से धनलाभ होता रहेगा।
6. **बुध+शनि**–बुध के साथ शनि होने से जातक उच्च श्रेणी का व्यापारी होगा। व्यापार से धन कमाएगा।

7. **बुध+राहु**–बुध के साथ राहु होने से जातक कठोर परिश्रमी होगा तथा संघर्ष के साथ आगे बढ़ेगा। पिता की सम्पत्ति नहीं मिलेगी।
8. **बुध+केतु**–बुध के साथ केतु संघर्ष में सफलता का द्योतक है। पिता से विचार नहीं मिलेंगे।
9. यदि यहां बुध+सूर्य+गुरु+चन्द्रमा हो तो जातक (राजा) मिनिस्टर होगा एवं लालबत्ती की गाड़ी का हकदार होगा।

नवम भाव में बुध का उपचार–

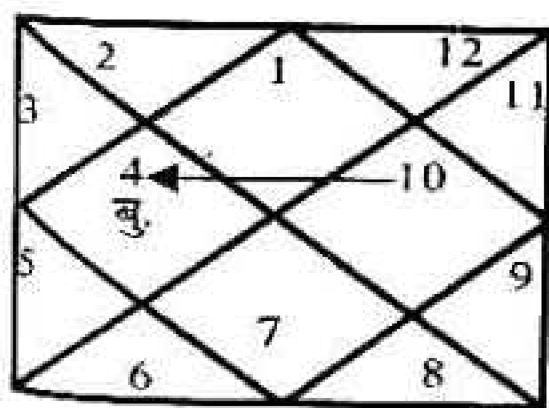
1. शरीर पर चांदी पहने।
2. कौवे को भोजन का हिस्सा देना।
3. गाय की सेवा करें, गायों को घास दे।
4. गणपति की उपासना करें। प्रति बुधवार को लड्डू चढ़ाये।

मेषलग्न में बुध की स्थिति दशम स्थान में

मेषलग्न में बुध तृतीयेश एवं षष्टेश होने से पापी होगा। बुध लग्नेश मंगल का मित्र नहीं है। दशम स्थान में बुध मकर राशि का केन्द्रवर्ती होगा–

हयरथनरनागोद्यानरतै द्यप्रपूर्णो,
जलधितटनिवासी रत्नतुल्य च धान्यम्।
बहुतजनकुलमित्रैः सत्यवादी प्रसूतो,
भवति यदि च केन्द्री, दैत्यपूज्यो बुधश्च॥

–मानसागरी श्लोक 8/ पृ. 243



'कुलदीपक योग' के कारण जातक तेजस्वी व यशस्वी होता है। ऐसा जातक शरारती व चालबाज होता है। ऐसा जातक समुद्री यात्रा, हवाई यात्रा से लाभ कमाने वाला, लेखन-सम्पादन में रुचि रखता है। जातक अनेक गुप्त व रहस्यमय विद्याओं का जानकार होता है। 'भृगुसूत्र' के अनुसार ऐसा जातक 'बहुलकीर्तिमान् बहुविद्यवान!' बहुत कीर्तिवाला व धनवान होता है।

निशानी–प्रसन्नता से निर्वाह करने वाला।

अनुभव–'भोज संहिता' के अनुसार से मकरस्थ बुध का दशम भाव में होना शुभ है। 32 वर्ष की आयु में जातक राजा (जिलाधीश) द्वारा सम्मानित होगा। व्यापार-व्यवसाय में लाभकारी स्थितियां बनेंगी। जातक अच्छा गणितज्ञ, लेखक या ज्योतिषी हो सकता है।

दशा–बुध की दशा शुभ फलदायक साबित होगी।

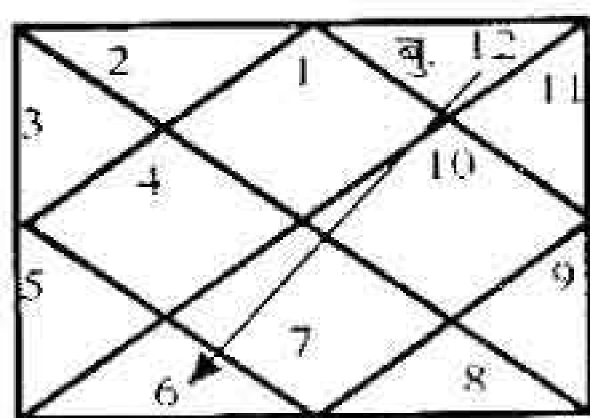
बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध+सूर्य**–बुध के साथ यदि सूर्य की युति हो तो **'बुधादित्य योग'** बनेगा। पंचमेश+तृतीयेश की यह युति शुभफलदाई एवं प्रबल राजयोग कारक है।
2. **बुध+चन्द्र**–बुध के साथ चन्द्रमा जातक के जीवन में सुख, वैभव, ऐश्वर्य से परिपूर्ण करेगा।
3. **बुध+मंगल**–बुध के साथ मंगल उच्च का होने से **'रुचक योग'** बनेगा। जातक राजा के समान ऐश्वर्यशाली एवं पराक्रमी होगा। व्यक्तित्व आकर्षक होगा।
4. **बुध+गुरु**–बुध के साथ गुरु नीच का होगा। जातक भाग्यशाली होगा पर भाग्य मन्दा होगा। खर्च जीवन में बहुत रहेगा।
5. **बुध+शुक्र**–बुध के साथ शुक्र होने से जातक महाधनी होगा। पत्नी का सुख उत्तम होगा।
6. **बुध+शनि**–बुध के साथ शनि होने से **'शशयोग'** बनेगा। जातक निश्चय ही राजातुल्य पराक्रमी, ऐश्वर्यशाली एवं सम्पन्न होगा।
7. **बुध+राहु**–बुध के साथ राहु जातक को राजपक्ष से दण्ड दिला सकता है।
8. **बुध+केतु**–बुध के साथ केतु जातक को राजकीय वैभव में कटौती कराएगा। सरकारी अधिकारी धोखा देंगे।
9. यदि यहां बुध के साथ सूर्य+मंगल+शनि हो तो जातक (राजा) मिनिस्टर होकर लालबत्ती की गाड़ी का स्वामी होगा।

दशम भाव में बुध का उपचार–

1. जबान का चसका कम करें, मांसाहार व शराब से दूर रहे तो बुध शुभ होगा।

मेषलग्न में बुध की स्थिति एकादश स्थान में



मेषलग्न बुध तृतीयेश एवं षष्टेश होने से पापी है। बुध लग्नेश मंगल का मित्र नहीं है। एकादश स्थान में बुध कुम्भ राशि में होगा। जातक की किस्मत 34 वर्ष बाद चमके। ऐसा जातक बहन-भाइयों को पालने वाला, जीवन सम्पूर्ण सुख-सुविधाओं से सम्पन्न होगा। ऐसे व्यक्ति की आमदनी के जरिए अनेक प्रकार के होंगे।

निशानी–धनी जन्म से।

अनुभव–भोज संहिता के अनुसार कुम्भ राशिगत बुध यदि लाभ स्थान में हो तो जातक प्रज्ञावान होगा। उसे पुत्र व पुत्री दोनों प्रकारों की सन्तति का लाभ होगा। सन्तान सत्पुत्र व सुयोग्य होंगे। जातक स्वयं पढ़ा-लिखा होगा।

दशा–बुध की दशा मिश्रित फल देगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

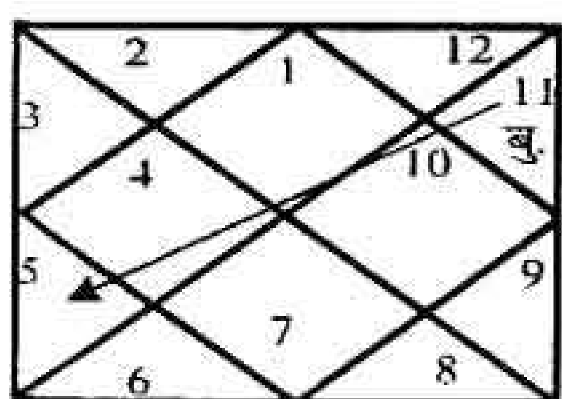
1. **बुध+सूर्य**–बुध के साथ सूर्य होने से '**बुधादित्य योग**' बनेगा। पंचमेश+तृतीयेश की युति कुम्भ राशि में राजयोग कारक है। जातक महान पराक्रमी होगा।
2. **बुध+चन्द्र**–बुध के साथ चन्द्रमा जातक को विद्यावान एवं प्रज्ञावान बनाएगा।
3. **बुध+मंगल**–बुध के साथ मंगल जातक को व्यापार किंवा उद्योग में लाभान्वित करेगा।
4. **बुध+गुरु**–बुध के साथ गुरु जातक को पुत्र सन्तति देगा एवं व्यापार में भी लाभ देगा।
5. **बुध+शुक्र**–बुध के साथ शुक्र जातक को धनवान बनाएगा। पत्नी एवं स्त्री-मित्रों से सहायता मिलती रहेगी।
6. **बुध+शनि**–यदि बुध के साथ शनि स्वगृही होने से जातक उद्योगपति होगा। बड़े कारोबार का स्वामी होगा।
7. **बुध+राहु**–बुध के साथ राहु जातक को व्यापार में अचानक नुकसान देगा। ऐसा जातक दो-तीन बार व्यापार बदलेगा।
8. **बुध+केतु**–बुध के साथ केतु जातक को चलते कारोबार में घाटा देगा।

0 यदि यहां बुध+सूर्य+शनि+गुरु की युति हो तो जातक (राजा) मिनिस्टर होगा या उससे कम नहीं होगा। उसके पुत्र भी जातक के समान ही पराक्रमी होंगे।

एकादश भाव में बुध का उपचार–

1. नया कपड़ा दरिया में धोकर गंगा जल का छींटा देकर पहने।
2. बुध यंत्र पन्ना डालकर गले में पहने तो धनहानि से बचाव होता है। पाठक चाहे तो यह यंत्र लेखक से सम्पर्क कर प्राप्त कर सकते हैं।

मेषलग्न में बुध की स्थिति द्वादश स्थान में



मेषलग्न में बुध तृतीयेश एवं षष्टेश होगा। बुध लग्नेश मंगल का मित्र नहीं है। द्वादश स्थान में बुध 'मीन राशि' का होगा। जो बुध की नीच राशि है। जातक गुप्त विद्याओं का तंत्र-मंत्र, ज्योतिष आयुर्वेद का ज्ञाता होगा। इसके जन्म से परिवार, धन-दौलत की वृद्धि पाने वाला, बुजुर्गों की सम्पत्ति पाने वाला होता है। जातक की बहन, लड़की अपने घर में दुःखी पर ससुराल में सुखी होता है।

विशेष–बुध द्वादश में जातक का रुपया शिक्षा कार्य में खर्च कराता है।

निशानी–नेक, लम्बी आयु, अच्छा जीवन बिताने वाला।

अनुभव–भोजसंहिता के अनुसार मीन राशिगत बुध यदि द्वादश भाव में हो तो जातक Export-Import विदेशी व्यापार में कमाएगा। ऐसे जातक का छोटा भाई नहीं होता है।

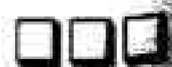
दशा–बुध की दशा अनिष्ट फल देगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध+सूर्य**–यदि बुध के साथ सूर्य हो तो, **'बुधादित्य योग'** बनेगा। वस्तुत: यह पंचमेश सूर्य की तृतीयेश, षष्ठेश बुध के साथ द्वादश भाव में युति होगी जहां बुध नीच का होगा। यह स्थिति राजयोग प्रदाता है, पर जातक को सन्तान सम्बन्धी चिन्ता भी मिलेगी। कीर्तिभंग योग बनता है।
2. **बुध+चन्द्र**–बुध के साथ चन्द्रमा माता की सम्पत्ति से जातक को वंचित कराएगा। **'सुखहीन योग'** के कारण जातक को आराम कम मिलेगा।
3. **बुध+मंगल**–बुध के साथ मंगल **'लग्नभंग योग'** के साथ कुण्डली को **'मांगलिक'** बनाता है। जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा।
4. **बुध+गुरु**–बुध के साथ गुरु होने से **'नीचभंग राजयोग'** बनेगा। ऐसा जातक धनी, ऐश्वर्यशाली एवं खर्चीले स्वभाव का होगा।
5. **बुध+शुक्र**–बुध के साथ यदि शुक्र हो तो **'नीचभंग राजयोग'** बनेगा। बुध का नीचत्व समाप्त होगा। जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा। सुन्दर स्त्री का पति होगा एवं अन्य स्त्रियां भी उस पर मोहित रहेंगी।
6. **बुध+शनि**–यहां बुध+शनि का युति अथवा बुध+राहु की युति हो तो जातक को जेल जाना पड़ सकता है।
7. **बुध+राहु**–बुध के साथ राहु व्यर्थ की यात्राएं कराएगा। जातक के खर्च इतने बढ़े चढ़े होंगे कि कई बार ऋण लेने की नौबत आएगी।
8. **बुध+केतु**– बुध के साथ केतु व्यवहार में कमी लाएगा। जातक के घर चोरी होगी।
9. यदि यहां बुध+शुक्र+गुरु+चन्द्र की युति हो तो जातक (राजा) मिनिस्टर होगा या उससे कम की हस्ती नहीं होगा। जातक अत्यधिक खर्चीले स्वभाव का होगा। धार्मिक, परोपकारी व दयालु होकर नगरसेठ या 'मेयर' होगा।

द्वादश भाव में बुध का उपचार–

1. एक स्टील का छल्ला जल प्रवाह करना एक (एक ही समय) पहनना।
2. कोरा घड़ा जल प्रवाह करना, 12 बार।
3. किया हुआ वायदा पूरा करना, जबान का पक्का रहना।
4. अपनी जबान का शब्द ले डूबेगा (गन्दा शब्द न बोलना)।
5. प्रति बुधवार गणपति का लड्डू चढ़ाना।
6. पन्ना जड़ित 'बुधयंत्र' गले में धारण करना।

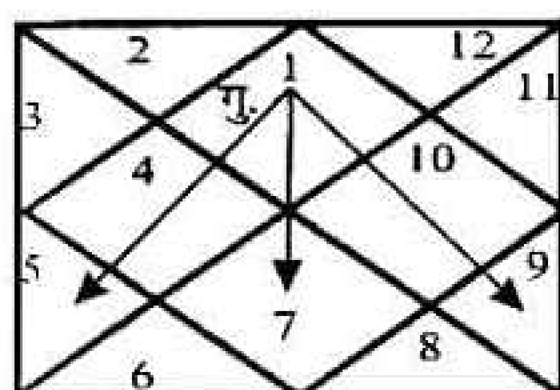


मेषलग्न में गुरु की स्थिति

मेषलग्न में गुरु की स्थिति प्रथम स्थान में

मेषलग्न में शुक्र नवम स्थान का स्वामी (त्रिकोणाधिपति) होने के कारण शुभफलदाई है। इसे व्ययेश होने का दोष नहीं लगता। कहा है–

एको जीवो यदा लग्ने, सर्वयोगस्तदा शुभा।
दीर्घजीवी महाप्रज्ञो, जातको नायको भवेत्।। –मानसागरी श्लोक 32



ऐसा जातक बुद्धिमान, उच्च शिक्षा प्राप्त, जज, बैरिस्टर, वकील, सम्पादक, एकाउण्टेंट होता है। जातक परिवार का नाम रोशन करने वाला, कुल का दीपक सबका प्यारा व चहेता होता है। जातक आकर्षक व्यक्तित्व वाला होगा।

निशानी–फकीरी पूर्ण। घर में सभी डिग्री/ डिप्लोमा धारक होंगे। इसके जन्म से पिता की सोई किस्मत जगती है।

दृष्टि–लग्नस्थ गुरु की दृष्टि सन्तान भाव, सप्तम भाव एवं नवम (भाग्य) भाव पर पूर्ण रूप से अमृत वर्षा करेगी। फलत: विवाह के तुरन्त बाद जातक का भाग्योदय होगा। पत्नी सुन्दर एवं कामी होगी। दूसरा भाग्योदय प्रथम सन्तति के बाद होगा। जातक के पुत्र जरूर होगा। जातक को पिता की सम्पत्ति या कारोबार वारिस में मिलेगा।

दशा–गुरु की दशा चंहुओर से उन्नति देगी। भाग्योदय कराएगी।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

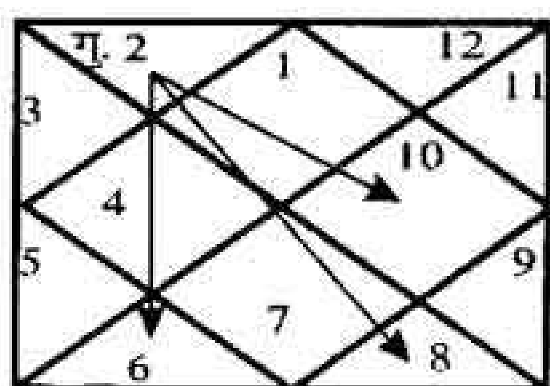
1. **गुरु+सूर्य**–गुरु के साथ सूर्य उच्च का होगा। पंचमेश सूर्य यहां परमयोगकारक होकर भाग्येश के साथ होने से जातक परम भाग्यशाली होगा। धनवान होगा। राज–दरबार में उसका प्रभाव होगा।
2. **गुरु+चन्द्र**–यदि गुरु के साथ चन्द्र हो तो **'गजकेसरी योग'** बनेगा। दोनों शुभग्रह पंचम, सप्तम एवं नवम स्थान को देखेंगे। फलत: विवाह के बाद जातक का भाग्योदय होगा। द्वितीय भाग्योदय प्रथम सन्तति के बाद होगा। आयु के 24 एवं 32 वर्ष महत्वपूर्ण रहेंगे।

3. **गुरु+मंगल**–यदि गुरु के साथ मंगल हो तो '**रुचकयोग**' बनेगा। ऐसा जातक जिला, शहर या गांव का मुखिया धर्मगुरु होता है। उसकी समाज व जाति में बड़ी भारी इज्जत होती है।
4. **गुरु+बुध**–गुरु के साथ पराक्रमेश बुध होने से जातक महान पराक्रमी होगा। महान् धार्मिक एवं बुद्धिशाली होगा।
5. **गुरु+शुक्र**–गुरु के साथ धनेश+सप्तमेश शुक्र होने से जातक धनवान होगा। जातक को परिश्रम का पूरा-पूरा लाभ मिलेगा। जातक कुल में धनिक व्यक्ति होगा।
6. **गुरु+शनि**–गुरु के साथ शनि यहां नीच का होगा। भाग्येश, दसमेश+लाभेश शनि की लग्न में यह प्रति जातक को व्यवहारिक ज्ञान से परिपूर्ण जीवन होगा।
7. **गुरु+राहु**–भाग्येश गुरु के साथ लग्न में राहु की स्थिति जातक को लड़ाकू विमान का स्वभाव का व्यक्तित्व देगी। चाण्डालयोग के कारण व्यक्ति भक्ष्य-यभक्ष्य का भेद नहीं कर पाएगा।
8. **गुरु+केतु**–गुरु के साथ केतु व्यक्ति को झगड़ालू स्वभाव का बनाएगा। जातक युद्ध में सदैव जीतेगा।
9. गुरु+चन्द्र+मंगल+सूर्य की युति लग्न में हो तो जातक (राजा) मिनिस्टर होगा एवं लाल बत्ती की गाड़ी उसके पास रहेगी।

प्रथम भाव में गुरु का उपचार–

1. दान न लेना, अपनी किस्मत पर भरोसा रखना।
2. यदि परिवार में जब कोई डिग्री/डिप्लोमा लेगा गुरु अशुभ न रहेगा।
3. पुखराज रत्न जड़ित गुरु यंत्र गले में धारण करे।

मेषलग्न में गुरु की स्थिति द्वितीय स्थान में



मेषलग्न में गुरु नवमेश (त्रिकोणाधिपति) होने के कारण शुभफलदाई है। द्वितीय स्थान में गुरु वृष राशिगत होगा। जातक धनवान, उच्च शिक्षित ससुराल के सम्बन्ध से तरक्की पाने वाला होता है। जातक को उच्च शैक्षणिक डिग्री मिलती है। ऐसा जातक धार्मिक कार्य, परोपकार के कार्य में अत्यधिक रुचि लेगा।

निशानी–जगत का धर्मगुरु और विद्या का स्वामी। ऐसे जातक को अपनी मौत का पहले पता चल जाता है।

दृष्टि–वृष राशिगत गुरु की पूर्ण दृष्ठि छठे स्थान, आठवें स्थान एवं दसवें स्थान पर होगी। फलत: जातक दीर्घजीवी होता हुआ, शत्रुओं का नाश करेगा। राजनीति में महत्वपूर्ण पद को प्राप्त करेगा।

अनुभव–देवगुरु गुरु की यह स्थिति जातक को उत्तम वाणी देती है। जातक उत्तम वक्ता होता है। जातक को पिता की सम्पत्ति मिलेगी पर साथ में बहुत-सी जिम्मेदारियां भी मिलेंगी।

दशा–'भोजसंहिता' के अनुसार गुरु की यह दशा उत्तम फल देती है। जातक धन प्राप्ति की ओर आगे बढ़ेगा।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

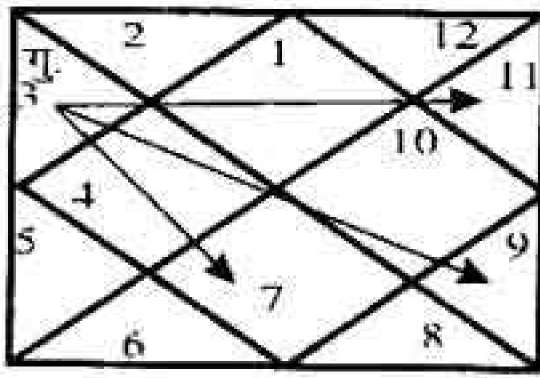
1. **गुरु+सूर्य**–गुरु के साथ सूर्य वस्तुत: पंचमेश+भाग्येश की युति परम धनदायक है। जातक प्रखर वक्ता होगा। वाणी के माध्यम से धनार्जन करेगा।
2. **गुरु+चन्द्र**–गुरु के साथ यदि चन्द्रमा हो तो **'गजकेसरी योग'** बनेगा परन्तु यहां चन्द्रमा उच्च का होगा। दोनों शुभग्रह छठे स्थान, आठवें स्थान एवं दसवें स्थान का पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलत: जातक को उच्च वाहन एवं भवन की प्राप्ति होगी। वह दीर्घजीवी होगा एवं राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा।
3. **गुरु+मंगल**–गुरु के साथ मंगल वस्तुत: पंचमेश+भाग्येश की युति परम धनदायक है। जातक प्रखर वक्ता होगा। वाणी के माध्यम से धनार्जन करेगा।
4. **गुरु+बुध**–गुरु के साथ पराक्रमेश बुध व्यक्ति को महान पराक्रमी बनाएगा। जातक बडबोला होगा।
5. **गुरु+शुक्र**–गुरु के साथ यदि शुक्र हो तो बलवान धनेश की नवमेश के साथ युति होने से **'भाग्यमूल धनयोग'** की सृष्टि होगी। जातक का भाग्य पग-पग पर जातक की सहायता करेगा। जातक को पिता की सम्पत्ति मिलेगी।
6. **गुरु+शनि**–भाग्येश गुरु के साथ दसमेश+लाभेश शनि की धनस्थान में यह युति लाभदायक रहेगी। जातक व्यापार प्रिय होगा।
7. **गुरु+राहु**–गुरु के साथ धनस्थान में राहु धन के घड़े में छेद के समान है। जातक धन संग्रह के मामले में भागफल रहेगा।
8. **गुरु+केतु**–गुरु के साथ मंगल धनस्थान में केतु होने से जातक फजूलखर्च होगा।
9. गुरु+चन्द्र+शुक्र+मंगल की युति हो तो जातक (राजा) मिनिस्टर होगा। लालबत्ती की गाड़ी उसके पास रहेगी।

द्वितीय भाव में गुरु का उपचार–

1. अपने घर का रास्ता साफ-स्वच्छ रखना।
2. मकान का कच्चा हिस्सा फौरन पक्का बनाए।
3. गुरु यंत्र पुखराज रत्न के साथ गले में धारण करें।

मेषलग्न में गुरु की स्थिति तृतीय स्थान में

मेषलग्न में गुरु नवम एवं द्वादश भाव में स्वामी होकर योगकारक है। तृतीय स्थान में गुरु मिथुन राशि का होगा। ऐसे जातक का जन्म माता-पिता के लिए शुभफलदाई होता है। इसके जन्म से पिता की उन्नति होती है। जातक उच्च शिक्षा पाने वाला, मकान-वाहन, चौपाए के सुख



से युक्त, जज, वकील, आई.एस.,आर.एस, अधिकारी होता है। इसे प्राय: निसन्तान व्यक्ति का धन मिलता है। 'अष्टात्रिंशद्वर्षे यात्रासिद्धः' 38वें वर्ष में हुई यात्रा से सफलता मिलेगी। भाग्य बदलेगा।

निशानी–ज्योतिष और आशीष का स्वामी।

दृष्टि–गुरु की दृष्टि सप्तम स्थान, भाग्य स्थान एवं लाभ स्थान पर होगी। गुरु यहां उच्चाभिलाषी है। फलत: विवाह के तत्काल बाद भाग्योदय होगा। पत्नी-ससुराल उत्तम मिलेंगे। यत्नपूर्वक किए गए व्यापार से लाभ होगा। जातक का जन्म पिता के लिए शुभ।

अनुभव–'भोजसंहिता' के अनुसार ऐसे जातक वृद्धजनों का सेवक होता है। वृद्धों से मित्रता करता है और उनकी सलाह को मान्यता देता है। जातक का पितृपक्ष धनवान होगा। तीसरा गुरु भाई-बहनों के लिए अच्छा होता है।

दशा–गुरु की दशा भाग्योदय कराएगी, विवाह कराएगी। सरकार से लाभ, मान्यता व महत्त्व दिलाएगी।

गुरू का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु+सूर्य**–पंचमेश सूर्य के साथ तृतीय स्थान में गुरु होने से जातक महान् पराक्रमी, परोपकारी एवं धर्मध्वज होगा।
2. **गुरु+चन्द्र**–यदि गुरु के साथ चन्द्रमा हो तो चन्द्रमा शत्रुक्षेत्री होगा। गजकेसरी योग तो बनेगा पर पीठ पीछे बुराई होगी। राज्यपक्ष से धोखा होगा। असावधानी रखने पर मुकदमा हार जाएंगे।
3. **गुरु+मंगल**–गुरु के साथ लग्नेश+अष्टमेश मंगल पराक्रम स्थान में होने से जातक परम पराक्रमी होगा। जातक को तीन से अधिक भाइयों का सुख होगा। बड़े भाई का सुख भी सम्भव है।
4. **गुरु+बुध**–यदि गुरु के साथ बुध हो तो जातक पराक्रमी होगा। मित्रों से लाभ होगा। जातक का भाग्योदय शीघ्र होगा।
5. **गुरु+शुक्र**–गुरु के साथ धनेश+सप्तमेश शुक्र तृतीय स्थान में होने से जातक को भाई-बहन दोनों का सुख होगा। जातक को स्त्री-मित्रों से विशेष लाभ होगा।
6. **गुरु+शनि**–गुरु के साथ दसमेश शनि यदि तृतीय स्थान में हो तो जातक पराक्रमी होगा।
7. **गुरु+राहु**–तृतीय स्थान में गुरु के साथ राहु जातक के परिवार में विग्रह कराएगा।
8. **गुरु+केतु**–गुरु के साथ तृतीय स्थान में केतु जातक को समाज में यशस्वी बनाएगा।
9. तृतीय स्थान में पापग्रह शनि, राहु, मंगल या केतु हो तो जातक दम्भी व झूठा होगा। 'चोरवंचनवान् दुर्वचन: अनृतप्रिय:।

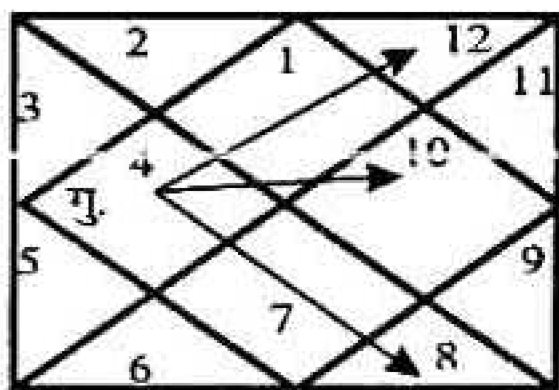
तृतीय भाव में गुरु का उपचार–

1. केसर-चंदन का तिलक लगावें।
2. दुर्गा-पूजन या कन्याओं को मीठा भोजन देकर आशीर्वाद लें।
3. गुरु यंत्र गले में धारण करें।

मेषलग्न में गुरु की स्थिति चतुर्थ स्थान में

मेषलग्न में गुरु त्रिकेणाधिपति होने से शुभफलदाई है। इसे व्ययेश होने का दोष नहीं है। चतुर्थ स्थान में गुरु कर्म राशि में उच्च का होगा फलतः **हंसयोग, कुलदीपक योग एवं केसरीयोग** बनेगा। शास्त्र कहते हैं–

किं कुर्वन्ति ग्रहाः सर्वे, यस्य केन्द्रे गुरुः।
मत्तमातंगयूथानाम्, एको हन्ति च केसरी॥ –मानसागरी



ऐसे जातक के जन्म के साथ ही माता-पिता का भाग्योदय होगा। जातक उच्च शिक्षित व संस्कारी होगा। जातक राजा तुल्य ऐश्वर्यवान, प्रतापी एवं धनवान होगा। ऐसे जातक को अनायास गढ़े धन की प्राप्ति, लॉटरी-सट्टा, शेयर बाजार के उतार- चढ़ाव से धन की प्राप्ति होती है। प्रायः निसन्तान व्यक्ति के धन की प्राप्ति होती है।

निशानी–चन्द्र की राजधानी, जातक को भूमि से लाभ होगा।

दृष्टि–उच्चस्थ गुरु की दृष्टि अष्टम स्थान, दशम स्थान एवं व्यय स्थान पर है फलतः जातक दीर्घायु होगा। राज्य (सरकार) में पद व सम्मान को प्राप्त करेगा। जातक खर्चीले स्वभाव का होगा, परोपकारी एवं दानशील होगा।

दशा–इस जातक को गुरु की दशा-अंतर्दशा में जबरदस्त शुभफलों की प्राप्ति होगी।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

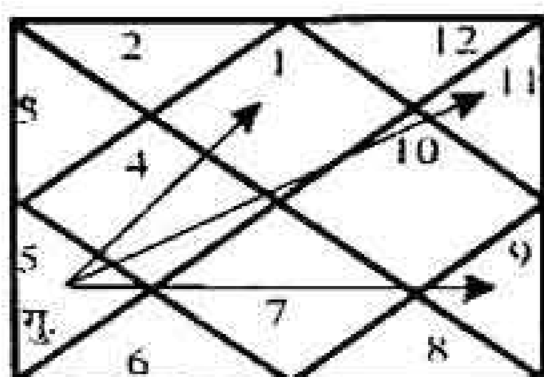
1. **गुरु+सूर्य**–बलवान भाग्येश के साथ पंचमेश सूर्य यदि सुखस्थान में हो तो जातक को सुख की कमी नहीं रहती। जातक को पिता की सम्पत्ति मिलेगी। जातक का राजयोग विशेष शक्तिशाली है। जातक को सरकार से मदद या पुरस्कार मिलेगा।
2. **गुरु+चन्द्र**–यदि गुरु के साथ चन्द्रमा हो तो गजकेसरी योग के साथ '**किम्बहुना योग**' बनेगा। इससे अधिक और क्या होगा? जातक के पास तीन-चार मंजिला बड़ा भवन होगा। एक से अधिक भवन होंगे, कई वाहन होंगे, 'अश्व वाहनयोग गृहविस्तारवान्' ऐसे जातक के गुरु व चन्द्रमा की दशा, अंतर्दशा में शुभफलों की प्राप्ति होगी। जातक को मातृपक्ष से खूब धन मिलेगा।

3. **गुरु+मंगल**–यदि यहां मंगल हो तो **'नीचभंग राजयोग'** बनेगा। जातक को माता की सम्पत्ति मिलेगी। भूमि से लाभ होगा। मंगल का नीचत्व समाप्त होने से जातक शत्रुओं का मान-मर्दन करने में सक्षम होगा।
4. **गुरु+बुध**–गुरु के साथ पराक्रमेश बुध चतुर्थ भाव में होने से जातक अनेक वाहनों का स्वामी होगा।
5. **गुरु+शुक्र**–गुरु के साथ धनेश+सप्तमेश शुक्र चतुर्थ भाव में होने से जातक सुन्दर भवन एवं वाहन का स्वामी होगा। भवन भी एक से अधिक होंगे।
6. **गुरु+शनि**–गुरु के साथ दसमेश+लाभेश शनि चतुर्थ भाव में होने से जातक उच्च दर्जे का व्यापारी होगा।
7. **गुरु+राहु**–यदि यहां गुरु के साथ राहु हो तो **'चाण्डाल योग'** बनेगा जातक अभक्ष्य भोजन करेगा। मातृतुल्य स्त्री या गर्भिणी स्त्री के साथ सम्भोग करेगा। जातक परगृहवास करेगा।
8. **गुरु+केतु**–गुरु के साथ केतु चतुर्थ भाव में होने से जातक के साथ वाहन दुर्घटना सम्भव है।
9. यदि यहां गुरु+चन्द्र+मंगल+सूर्य की युति हो तो जातक (राजा) मंत्री होगा। लालबत्ती की गाड़ी का स्वामी होगा।

चतुर्थ भाव में गुरु का उपचार–

1. लाल बनियान या कच्छा पहनें।
2. बुजुर्गों के व्यापार से लाभ, बुजुर्गों की सेवा करना।
3. धर्म मंदिर में सिर झुकाना, पूजा-पाठ करना।
4. कुल पुरोहित एवं गुरु का आशीर्वाद लेना।
5. पीपल का वृक्ष लगाना या पीपल के वृक्ष को प्रति गुरुवार पानी सीचे।
6. सच्चा पुखराज यंत्र में जड़वाकर गले में धारण करे।
7. राजयोग के लिए माणक+पुखराज+मोती का त्रिशक्ति लॉकेट अभिमंत्रित करके पहने।

मेषलग्न में गुरु की स्थिति पंचम स्थान में



मेषलग्न में गुरु नवम भाव (त्रिकोणाधिपति) होने से शुभफलदाई है। इसे यहां व्ययेश होने का दोष नहीं है। पंचम स्थान में गुरु सिंह राशि का होगा। ऐसे जातक के बाप से पोते तक सभी कुटुम्बी सुखी व धनवान होते हैं। यदि जातक के घर में गुरुवार को सन्तान हो तो सन्तान उत्पत्ति के साथ ही जातक का तत्काल भाग्योदय होता है। भृगुसुत्र के अनुसार– **'बुद्धिचातुर्यवान्, वाग्मीप्रतापी, अन्नदान, प्रिय:, कुलप्रिय:'** ऐसा जातक अत्यधिक विलक्षण बुद्धि वाला, वाक्यपटु, वक्ता, प्रतापी, अतिथिप्रिय व कुलप्रिय होता है।

अनुभव–नवमेश यदि पंचम में हो तो जातक का पिता प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा, सन्तति अल्प होगी।

निशानी–ब्रह्मज्ञानी परन्तु आग का बांस, गुस्से वाला।

दृष्टि–गुरु की दृष्टि यहां भाग्यभवन, लाभस्थान एवं लग्नस्थान पर होगी। फलत: जातक भाग्यशाली होगा प्रथम सन्तति के बाद तीव्रगति से भाग्योदय होगा। व्यापार-व्यवसाय में लाभ होगा। गुरु की दशा में किए गए प्रयत्नों में बराबर सफलता मिलेगी।

दशा–'भोज संहिता' के अनुसार गुरु की दशा बहुत उत्तम फल देगी। भाग्योदय कराएगी। व्यक्तित्व में उन्नति एवं व्यापार में लाभ देगी।

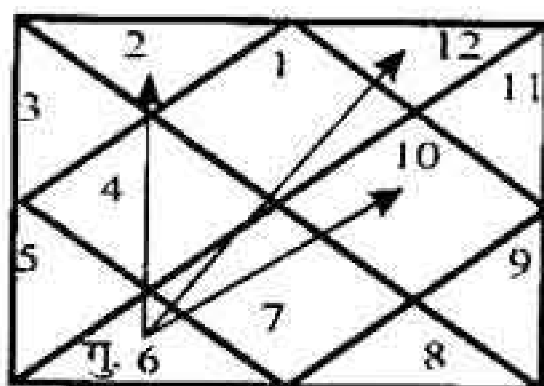
गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु+सूर्य**–भाग्येश गुरु के साथ स्वगृही सूर्य, जातक को अध्यात्म क्षेत्र में सफलता दिलाता है। जातक उच्च शिक्षा प्राप्त, प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा। प्रथम पुत्र होगा। पुत्र जन्म के बाद प्रतिष्ठा विशेष रूप से बढ़ेगी।
2. **गुरु+चन्द्र**–गुरु के साथ चन्द्रमा हो तो **'गजकेसरी योग'** बनेगा सुखेश व नवमेश की युति पंचम भाव में शुभफलदाई है। जातक को ननिहाल व माता की सम्पत्ति मिलेगी। पुत्र व पुत्री दोनों होंगे। दोनों आज्ञा में रहेंगे।
3. **गुरु+मंगल**–भाग्येश बृहस्पति के साथ लग्नेश+अष्टमेश मंगल की युति पंचम भाव में प्रथम पुत्र देगा। पुत्रों की संख्या तीन से पांच के मध्य होगी। जातक की संतान भाग्यशाली होगी।
4. **गुरु+बुध**–भाग्येश गुरु के साथ तृतीयेश+षष्टेश बुध की युति जातक को मन्त्र शास्त्र, ज्योतिष व गूढ़ विद्याओं का ज्ञाता बनाएगी। ऐसे जातक को पुत्र एवं कन्या, दोनों प्रकार की सन्तति का लाभ होगा।
5. **गुरु+शुक्र**–गुरु के साथ धनेश+सप्तमेश की युति पंचम स्थान में जातक को आध्यात्म-कला व अभिनय के क्षेत्र में भरपूर सफलता देता है।
6. **गुरु+शनि**–गुरु के साथ दसमेश+लाभेश शनि पंचम स्थान में जातक को व्यवहारिक ज्ञान सम्पन्न बुद्धि देगा। जातक विदेशी भाषा एवं विदेशी कार्यों में रुचि लेगा।
7. **गुरु+राहु**–गुरु के साथ राहु विद्या में बाधा पंहुचायेगा। जातक को पिता की सम्पत्ति नहीं मिलेगी।
8. **गुरु+केतु**–बृहस्पति के साथ केतु विद्याध्ययन में संघर्ष का संकेत देता है।
9. यदि गुरु के साथ राहु या केतु हो तो 'सर्पशापात् सुतक्षय:' सर्प के शाप से पुत्र सन्तान का नाश हो 'शुभदृष्टे परिहार:' यदि शुभग्रह की दृष्टि हो तो परिहार हो जाता है। यदि फिर भी बाधा हो तो **'कालसर्प योग'** की शान्ति से पुत्र सन्तान होगी।
10. यदि यहां गुरु के साथ सूर्य+चन्द्र+मंगल की युति हो तो प्रथम सन्तति उत्पन्न के बाद जातक राजातुल्य ऐश्वर्य व प्रतिष्ठा को प्राप्त करेगा।

पंचम भाव में गुरु का उपचार–

1. लंगर, धर्म स्थान का प्रसाद न लेना।
2. मुफ्त भोजन एवं माल से परहेज रखना।
3. सिर पर चोटी रखना।
4. साधु, सज्जनों की सेवा करना, धर्मशाला-धर्म मंदिर की सफाई सेवा करना।

मेषलग्न में गुरु की स्थिति षष्टम स्थान में



मेषलग्न में गुरु नवम स्थान (त्रिकोणाधिपति) का स्वामी होने से शुभफलदाई है। इसे यहां व्यमेश होने का दोष नहीं लगता। षष्टम् स्थान में गुरु कन्या राशि का होगा। ऐसा जातक चाल-चलन का नेक, राजदरबार (सरकार) में इज्जत-सम्मान पाने वाला, शत्रुओं को परास्त करने वाला, नौकरों-सेवकों से युक्त, सन्तान पक्ष से सुखी जातक होता है। जातक अपने पोते को हाथों में खिलाता है।

दृष्टि–गुरु की दृष्टि दशम भाव, द्वादश भाव एवं धन स्थान पर होगी। फलतः राज्य पक्ष, धन पक्ष, कुछ कमजोर रहेगा। खर्च अधिक होगा एवं धन प्राप्ति हेतु, भाग्योदय हेतु जातक को संघर्ष करना पड़ेगा। गुरु यहां रोग, ऋण व शत्रु में वृद्धि करता है।

निशानी–मुफ्तखोर मगर साधु स्वभाव। जातक उपदेशक व व्याख्याता होता है।

अनुभव–जातक का पिता बीमार रहेगा।

दशा–गुरु की दशा मिश्रित फल देगी। 'भोजसंहिता' के अनुसार दूसरी दशा में उत्तम धन की प्राप्ति होगी।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु+सूर्य**–यहां बृहस्पति के साथ सूर्य होने से **'विद्याभंग योग'** बनेगा। जातक को प्रारम्भिक विद्या में रुकावटें आएगी। पुत्र सन्तति में भी बाधा सम्भव है। पर उपाय करने पर शान्ति होगी।
2. **गुरु+चन्द्र**–गुरु के साथ चन्द्रमा होने से **'गजकेसरी योग'** बनेगा, चन्द्रमा यहां शत्रुक्षेत्री होगा। चन्द्रमा षष्टम में होने से सुखभंग योग बना। गुरु षष्टम् में होने से **'भाग्यभंग योग'** बना। ऐसे में गजकेसरी की सार्थकता काफी कमजोर हो गई है।
3. **गुरु+मंगल**–गुरु के साथ लग्नेश मंगल होने से **'लग्नभंग योग'** बनता है परन्तु अष्टमेश छठे जाने से **'विपरीत राजयोग'** की सृष्टि होगी। ऐसा जातक परम तेजस्वी विद्वान एवं धनी जातक होगा।
4. **गुरु+बुध**–गुरु के साथ तृतीयेश बुध होने से **'पराक्रमभंग योग'** बनता है परन्तु षष्टेश

षष्टम स्थान में स्वगृही होने से **'विपरीत राजयोग'** बना। ऐसा जातक धनी होगा। वाचाल एवं प्रबुद्ध होगा। उसके पास चार पहियों की गाड़ी होगी।

5. **गुरु+शुक्र**–गुरु के साथ धनेश शुक्र होने से **'धनहीन योग'** यह शुक्र सप्तमेश होने से **'विलम्बविवाह योग'** भी बनता है। ऐसा जातक धनी होगा। परन्तु धन आएगा व खर्च होता चला जाएगा। विवाह को लेकर भी जातक को परेशानी होगी।
6. **गुरु+शनि**–भाग्येश गुरु के साथ शनि होने से **राज्यभंग योग** एवं **लाभभंग योग** बनाएगा। जातक धनी तो होगा पर जीवन में संघर्ष बहुत रहेगा।
7. **गुरु+राहु**–भाग्येश गुरु के साथ राहु छठे राजयोग प्रदाता है। जातक अपने शत्रुओं के नाश करने में सक्षम होगा।
8. **गुरु+केतु**–गुरु के साथ केतु छठे जातक को गुप्तरोग एवं गुप्त शत्रु देगा पर जातक उनका समूल नाश करने में सक्षम होगा।
9. गुरु के साथ शनि या राहु हो तो जातक महारोग से ग्रसित होगा। शत्रु पिता का धन हरण कर लेंगे।

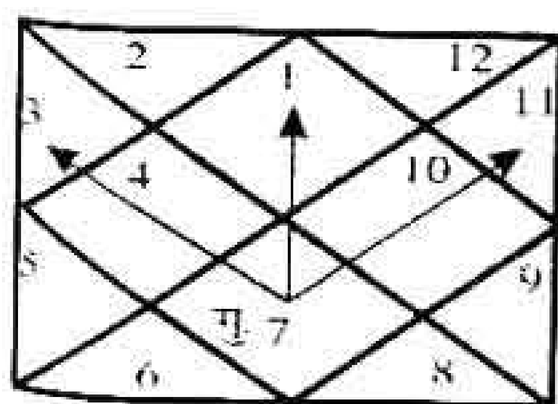
षष्टम भाव में गुरु का उपचार–

1. संतान के साथ या सलाह से व्यापार करना।
2. धर्म मंदिर के पुजारी को पीले वस्त्र देना।
3. पुखराज रत्न सोने में धारण करे।
4. पीला सुगन्धित रुमाल जेब में रखें।

मेषलग्न में गुरु की स्थिति सप्तम स्थान में

मेषलग्न में गुरु नवम भाव (त्रिकोणाधिपति) का स्वामी होने से शुभफलदाई है। उसे यहां व्ययेश होने का दोष नहीं लगता। सप्तम भाव में गुरु तुला राशि का होगा। फलत: **कुलदीपक योग** केसरी योग की सृष्टि होगी।

किं कुर्वन्ति ग्रहा: सर्वे, यस्य केन्द्रे गुरु:
मत्त मातगं यूथानाम्, एको हन्ति च केसरी॥ –मानसागरी



ऐसा जातक भागीदारी के कामों में लाभ कमाने वाला होता है। जातक धनी, मानी व दानी होने के साथ-साथ ज्योतिष शास्त्र, तंत्र-मंत्र, कर्मकाण्ड, आयुर्वेद का ज्ञाता होगा। जातक धार्मिक ग्रंथों का अध्यंता, विक्रेता, प्रकाशक होता है। ऐसा जातक मौत के समय घर पर होता है।

अनुभव–'भोज संहिता' के अनुसार नवमेश यदि सप्तम में हो तो पिता परदेश में कमाएगा। परदेश में जातक का पिता धार्मिक कार्य कराएगा।

निशानी—पिछले जन्म का साधु, राजा जनक की तरह संयासी व ज्ञानी। जातक का भाग्योदय विवाह के तत्काल बाद होगा। जातक की पत्नी पतिव्रता होगी।

दृष्टि—सप्तम भाव में बैठा तुला का गुरु लाभ स्थान, लग्न स्थान और पराक्रम स्थान को देखेगा। फलत: पत्नी पक्ष व ससुराल में लाभ, व्यापार-व्यवसाय में लाभ तथा व्यक्तित्व में बढ़ोतरी होती रहेगी। भाई-बहनों से सम्बन्ध अच्छे रहेंगे।

दशा—'भोज संहिता' के अनुसार गुरु की दशा सबसे उत्तम फल देगी। इसकी दशा में जातक का पराक्रम बढ़ेगा। उसके व्यक्तित्व का चहुंमुखी विकास होगा।

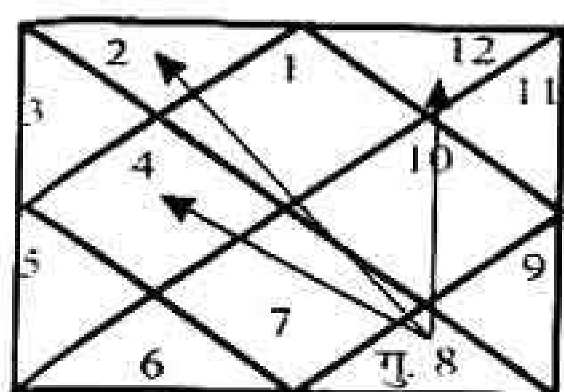
गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु+सूर्य**—भाग्येश गुरु के साथ पंचमेश सूर्य होने से जातक को पूर्ण गृहस्थ सुख मिलेगा। जातक का भाग्योदय दो टुकड़ों में होगा। प्रथम विवाह के बाद एवं द्वितीय प्रथम पुत्र सन्तति के बाद जबरदस्त भाग्योदय होगा।
2. **गुरु+चन्द्र**—यदि गुरु के साथ चन्द्रमा हो तो **'गजकेसरी योग'** बनेगा। सुखेश चन्द्रमा एवं भाग्येश गुरु की युति केन्द्र में होने के कारण बहुत शक्तिशाली, प्रभावशाली होगी। जातक का कद राजनीति में ऊंचा होगा।
3. **गुरु+मंगल**—लग्नेश व अष्टमेश मंगल गुरु के साथ होने से जातक का वैवाहिक जीवन सुखी होगा। जातक को परिश्रम का फल मिलेगा।
4. **गुरु+बुध**—भाग्येश गुरु के तृतीयेश+षष्टेश बुध सप्तम में होने से जातक का जीवन साथी सुन्दर होगा। वैवाहिक जीवन सुखी होगा।
5. **गुरु+शुक्र**—यदि गुरु के साथ शुक्र हो तो स्वगृही होगा। बलवान धनेश की भाग्येश से युति होने कारण **'भाग्यमूलधन योग'** **'मालव्य योग'** बना। जातक अपने भाग्य से खूब कमाएगा। उसे पिता की सम्पत्ति या व्यवसाय मिलेगा।
6. **गुरु+शनि**—यदि गुरु के साथ शनि हो तो उच्च का होगा। ऐसे में **'शशयोग'** एवं राज्येश भाग्येश की युति के कारण जातक राज्य सरकार में उच्चपद प्राप्त करेगा। आई.एस. अफसर, आर.एस. अफसर बनेगा।
7. **गुरु+राहु**—भाग्येश गुरु के साथ राहु सप्तम में वैवाहिक सुख में बाधक है।
8. **गुरु+केतु**—भाग्येश गुरु के साथ केतु सप्तम में वैवाहिक जीवन में कटुता देगा।
9. यदि यहां गुरु के साथ+चन्द्र+शनि+शुक्र हो तो जातक (राजा) मिनिस्टर होगा एवं राजातुल्य ऐश्वर्य-वैभव को भोगेगा।

सप्तम भाव में गुरु का उपचार–

1. रत्तियां (चिरमियां) पीले कपड़े में बांधकर रखना।
2. नशेबाज, साधु-फगड़ों से दूर रहना।
3. गुरुवार का व्रत रखें।
4. पुखराज रत्न धारण करे, गुरु यंत्र में।

मेषलग्न में गुरु की स्थिति अष्टम स्थान में



मेषलग्न में गुरु नवम स्थान (त्रिकोण) का स्वामी होने से शुभफलदाई है। इसे व्ययेश होने का दोष नहीं लगेगा। अष्टम स्थान में गुरु वृश्चिक राशि का होगा तथा **'भाग्यभंग योग'** की सृष्टि करेगा परन्तु दु:स्थान का स्वामी दु:स्थान में होना **'विपरीत राजयोगदायक'** एवं शुभ माना गया है।

ऐसा जातक धनवान, हर बात को गुप्त रखने वाला, किसी के अधीन न रहने वाला, जंगल में मंगल करने वाला, दु:खियों की सेवा करने वाला सज्जन व्यक्ति होता है। ऐसा जातक स्त्री पक्ष से धन पाता है पर पिता की सम्पत्ति नहीं मिलती।

दृष्टि–वृश्चिक के गुरु की दृष्टि व्ययभाव, धनभाव एवं चतुर्थभाव पर होगी। फलत: जातक सुख में कमी, धन में कमी महसूस करेगा। खर्च पर नियंत्रण रखना पड़ेगा।

अनुभव–'भोज संहिता' के अनुसार यदि नवमेश अष्टम में हो तो जातक की युवावस्था में ही पिता की मृत्यु हो जाएगी। जातक पैतृक सम्पत्ति से वंचित रहेगा।

निशानी–मुसीबत के समय परमात्मा की सहायता का मालिक।

दशा–भोज संहिता के अनुसार गुरु की दशा मिश्रित फलकारी साबित होगी। यदि मंगल की स्थित यहां शुभ है तो गुरु की दशा का शुभत्व 60% बढ़ जाएगा।

गुरु के साथ अन्य ग्रहों का सम्बन्ध

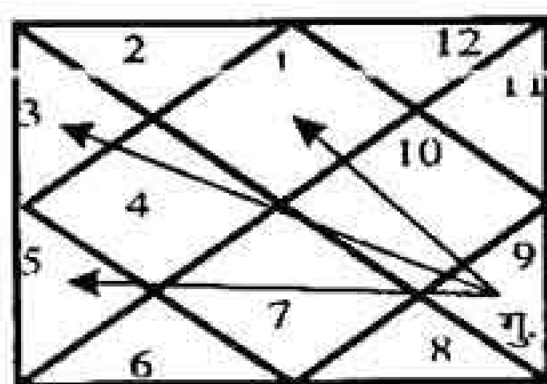
1. **गुरु+सूर्य**–यहां गुरु के साथ सूर्य होने से **'विद्याभंग योग'** बनेगा। जातक को प्रारम्भिक विद्या में बाधा आएगी। लापरवाही रखने पर जातक को राजदण्ड भी मिलेगा।
2. **गुरु+चन्द्र**–गुरु के साथ यदि चन्द्रमा हो तो नीच का होगा। गजकेसरी योग बनेगा परन्तु साथ-साथ सुखभंग योग, भाग्यभंग योग भी बनेगा। फलत: गजकेसरी योग ज्यादा सार्थक नहीं रहेगा।
3. **गुरु+मंगल**–गुरु के साथ मंगल होने से **'लग्नभंग योग'** बनेगा। साथ ही अष्टमेश अष्टम स्थान में स्वगृही होने से **'विपरीत राजयोग'** भी बनेगा। ऐसा जातक धनी होगा। उसके पास चार पहियों वाली गाड़ी होगी, वैभव, ऐश्वर्य होगा परन्तु संघर्ष बना रहेगा।
4. **गुरु+बुध**–भाग्येश गुरु के साथ तृतीय+षष्टेश बुध अष्टम स्थान में **पराक्रमभंग योग** के साथ **विपरीत राजयोग** भी बनाएगा। जातक धनी होगा पर मित्रों में यश नहीं मिलेगा।
5. **गुरु+शुक्र**–भाग्येश गुरु के साथ धनेश+सप्तमेश शुक्र होने से **'धनहीन योग'** एवं **विलम्ब विवाह योग** बनाएगा। जातक का विवाह देरी में होगा। धन आएगा पर खर्च होता चला जाएगा।
6. **गुरु+शनि**–भाग्येश गुरु के साथ दसमेश+लाभेश शनि अष्टम में होने से **'राजभंग योग'** एवं **'लाभभंग योग'** बनता है। जातक को आजीविका हेतु काफी संघर्ष करना पड़ेगा।

7. **गुरु+राहु**—गुरु साथ राहु हो तो **'चाण्डाल योग'** बनेगा। जातक की आमदनी अनैतिक तरीके से होगी।
8. **गुरु+केतु**—भाग्येश गुरु के साथ केतु जातक को अल्पायु एवं दुर्घटना का भय देता है।
9. गुरु के साथ यदि शनि, राहु या केतु इत्यादि पापग्रह हो तो 'विधवासंगमो भवति' जातक विधवा या अपने से बड़ी आयु की स्त्री के साथ संगम करता है।

अष्टम भाव में गुरु का उपचार—

1. शरीर पर सोना पहनने से अच्छा होगा।
2. शुक की चीज घी, दही, आलू, कपूर धर्म स्थान देना फकीर के बर्तन में दान डालना।
3. पुखराज रत्न जड़ित 'गुरु यंत्र' गले में धारण करें।
4. गुरुवार का व्रत रखें।

मेषलग्न में गुरु की स्थिति नवम स्थान में



मेषलग्न में गुरु नवम स्थान (त्रिकोण) का स्वामी होने से शुभफलदाई है। इसे व्ययेश होने का दोष नहीं लगता। नवम स्थान में गुरु धनु राशि का स्वगृही होगा। यह गुरु की सबसे उत्तम स्थिति है।

ऐसा व्यक्ति राजातुल्य प्रतापी एवं फकीर तुल्य त्यागी होगा। कभी शाह, कभी मलंग (फकीर), धर्म का प्रचारक होगा। धार्मिक कार्यों में रुचि रखने वाला, धर्मार्थ चीजें बनाने वाला होगा। जातक लेखन, सम्पादन एवं प्रकाशन कार्यों में रुचि रखने वाला होगा।

दृष्टि—स्वगृही गुरु की दृष्टि लग्न स्थान, पराक्रम स्थान एवं सन्तान भाव पर होगी। फलत: जातक को प्रत्येक कर्म, जो काम हाथ में लेगा, सफलता मिलेगी। पराक्रम तेज होगा। भाइयों, परिजनों व मित्रों का पोषक होगा। जातक को सन्तान सुख उत्तम मिलेगा। उसे पुत्र अवश्य होगा। जातक प्रबल भाग्यशाली होगा।

निशानी—योगी एवं धन का त्यागी, सुनहरी खानदान।

दशा—'भोज संहिता' के अनुसार देवगुरु गुरु की दशा अमृत बरसाएगी। अत्यंत लाभकारी साबित होगी। जातक का चहुंमुखी विकास होग।

अनुभव—जातक छोटे भाई-बहनों व सन्तति के ऊपर खूब रुपया खर्च करेगा।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **गुरु+सूर्य**—गुरु के साथ सूर्य जातक को परम सौभाग्यशाली तेजस्वी जीवन देगा। जातक विद्यावान् होगा। विद्या भाग्योदय में सहायक होगी। जातक पुत्रवान् होगा। पराक्रमी होगा।
2. **गुरु+चन्द्र**—गुरु के साथ यहां चन्द्रमा होने से **'गजकेसरी योग'** बनेगा।

गजकेसरीसंजात: तेजस्वी धनधान्यवान्।
मेधावी गुणसम्पन्नो, राज्यप्राप्तिकरो भवेत्॥

यहां गुरु (नवमेश) का सुखेश (केन्द्रपति) चन्द्रमा से युति अत्यन्त सौभाग्यदायक साबित होगा। जातक को सुन्दर भवन, सुन्दर वाहन का सुख मिलेगा। गुरु के साथ चन्द्रमा हो तो **'गजकेसरी योग'** बनेगा। गुरु स्वगृही होने से बलवान होगा। 'गजकेसरी योग' के कारण राज्य सरकार के उच्चपद मिलेगा। जातक आई.एस., आर.एस. अधिकारी, न्यायाधिकारी या सांसद होगा।

3. **गुरु+मंगल**—गुरु के साथ मंगल होने से जातक बड़ी भू-सम्पत्ति का स्वामी होगा तथा अपने शत्रुओं को परास्त करने में सक्षम होगा।
4. **गुरु+बुध**—भाग्येश गुरु के साथ पराक्रमेश +षष्टेश बुध भाग्यस्थान में जातक को महान् पराक्रमी एवं व्यापारप्रिय बनाएगा।
5. **गुरु+शुक्र**—गुरु के साथ शुक्र प्रबल राजयोग देगा। जातक महान् धनी होगा।
6. **गुरु+शनि**—भाग्येश गुरु के साथ दसमेश+लाभेश शनि भाग्यस्थान में जातक को बहुत बड़ा व्यापारी, ठेकेदार बनाएगी।
7. **गुरु+राहु**—गुरु के साथ राहु भाग्योदय में बाधा का काम करेगा। प्रत्येक नये काम में एक बार बाधा जरूर आएगी।
8. **गुरु+केतु**—गुरु के साथ क़ेतु भाग्य में विशेष चमक लाएगा।
9. यदि गुरु धनु में व शनि तुला में हो तो यह जबरदस्त राजयोग होगा। शश योग व्यक्ति को मिनिस्टर पद पर पहुंचाएगा।
10. यदि यहां गुरु के साथ शुक्र+चन्द्र+मंगल हो तो जातक (राजा) मिनिस्टर होगा एवं लालबत्ती की गाड़ी का हकदार होगा।

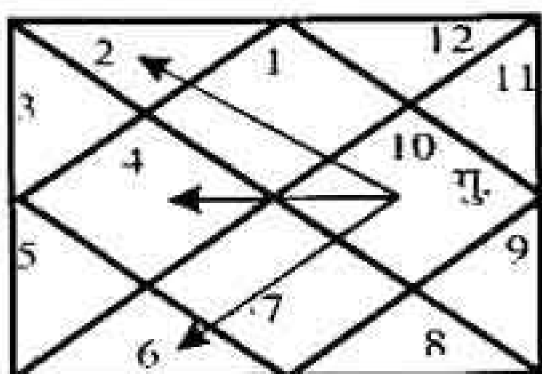
अष्टम भाव में गुरु का उपचार—

1. गंगा स्नान करना, प्रत्येक जन्म दिन पर सफलतापूर्वक।
2. तीर्थ यात्रा करना/करवाना।
3. झूठा वायदा न करना।
4. झूठा भोजन न खाना न खिलाना बुफे पार्टी से दूर रहे।
5. किसी के शामिल बैठकर भोजन न करे एवं बफर पार्टी में भाग न ले।
6. पुखराज पहने एवं गुरु की सेवा करे।

मेषलग्न में गुरु की स्थिति दशम स्थान में

मेषलग्न में गुरु नवम (त्रिकोण) स्थान का स्वामी होने से शुभफलदाई है। इसे यहां व्ययेश होने का दोष नहीं लगेगा। दशमस्थान में गुरु मकरराशि का नीच का होगा। फिर भी कुलदीपक योग, केसरी योग की सृष्टि होगी। शास्त्र कहते हैं—

किं कुर्वन्ति ग्रहाः सर्वे, यस्य केन्द्रे गुरुः।
मत्तमातंगयूथानाम्, एको हन्ति च केसरी॥ –मानसागरी



ऐसा जातक नौकर-सेवकों से युक्त, बड़े भवन का स्वामी, चारों पहियों वाली गाड़ी का स्वामी होता है। ऐसा जातक चालाक व होशियार होता है–'योग्यतावान्, प्रौढकीर्ति बहुजनपूज्य' परन्तु गुरु नीच का होने से धन, कीर्ति में कुछ न कुछ कमी रहेगी। मामा से सम्बन्ध अच्छे होंगे।

अनुभव–जातक धार्मिक कार्यों में बढ़चढ़ कर रुचि लेगा।

निशानी–पहाड़ी इलाके का गृहस्थी। पिता की सम्पत्ति में विघ्न मिलेगा।

दृष्टि–नीच के गुरु की दृष्टि धन स्थान, सुख स्थान एवं षष्टम भाव पर होगी। फलतः जातक धनवान होगा, सुखी होगा तथा रोग व शत्रु का नाश करने में समर्थ होगा।

दशा–'भोज संहिता' के अनुसार गुरु की दशा अति उत्तम फल देगी। जातक के धन व सुख में अद्वितीय वृद्धि कराएगी।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

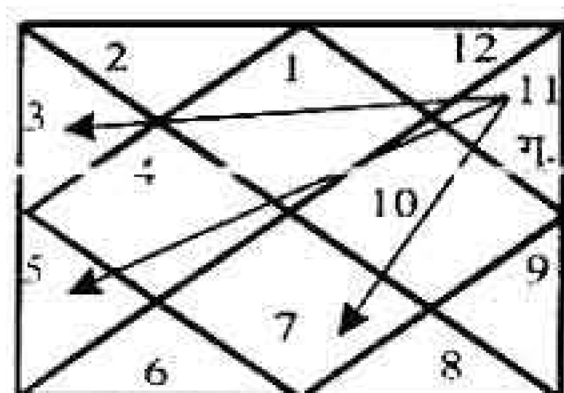
1. **गुरु+सूर्य**–गुरु के साथ सूर्य होने से जातक को राजा द्वारा सम्मान मिलेगा। सरकारी अधिकारी उसकी मदद में रहेगे।
2. **गुरु+चन्द्र**–गुरु के साथ चन्द्रमा होने से चन्द्रमा अपने घर सुख स्थान को पूर्ण दृष्टि में देखेगा। केन्द्रवर्ती चन्द्र+गुरु की युति **'गजेकसरी योग'** की बलवान स्थित को बताती है। जातक उत्तम वाहन, उत्तम भवन का स्वामी होगा। जलीय पदार्थों में कमाई कर सकता है। लाभ प्राप्त कर सकता है। यथा–रत्न, ज्वैलरी, कांच, नमक, शक्कर, पाउडर, सफेद रंग की वस्तु वगैरा।
3. **गुरु+मंगल**–गुरु के साथ मंगल होने से **'नीचभंग राजयोग'** बनेगा। गुरु का नीचत्व यहां समाप्त हो गया। ऐसा जातक राजा, राजमंत्री, सांसद या उनके समकक्ष प्रभावशाली जातक होता है।
4. **गुरु+बुध**–गुरु के साथ बुध होने से जातक महान् पराक्रमी होगा। वाचाल होगा। विद्वान् होगा एवं सरकारी क्षेत्र से सम्मानित होगा।
5. **गुरु+शुक्र**–भाग्येश गुरु के साथ धनेश+सप्तमेश शुक्र दसम भाव में जातक को विशेष राजयोग बनाता है। जातक महान् धनी एवं व्यापारी होगा।
6. **गुरु+शनि**–गुरु के साथ शनि होने से **'नीचभंग राजयोग'** बनेगा तथा **'शश योग'** बनेगा। यहां गुरु का नीचत्व समाप्त हो जाता है। नवमेश व राज्येश, लाभेश की युति जातक को उद्योगपति या बड़ा व्यापारी बनाती है।
7. **गुरु+राहु**–भाग्येश गुरु के साथ राहु दसम में राज्यसुख में बाधक है।

8. **गुरु+केतु**–भाग्येश गुरु के साथ केतु जातक को राजा से सम्मान दिलाएगा।
9. गुरु+मंगल+शनि+चन्द्र की युति हो तो जातक (राजा) मिनिस्टर होगा एवं लाल बत्ती की गाड़ी का हकदार होगा।

दशम भाव में गुरु का उपचार–

1. पीले वस्त्र एवं सोना न पहनना।
2. 40-43 दिन तांबें का पैसा चलते पानी में डाले तो पिता श्री के कष्ट दूर होंगे। यह प्रयोग गुरुवार के प्रारम्भ करें।
3. गुरुवार को व्रत रखे।
4. पुखराज रत्नजड़ित 'गुरु यंत्र' धारण करें।

मेषलग्न में गुरु की स्थिति एकादश स्थान में



मेषलग्न में गुरु नवम (त्रिकोण) का स्वामी होने से शुभफलदाई है। उसे यहां द्वादशेश होने का दोष नहीं लगता। एकादश स्थान में गुरु कुलराशि का होगा। ऐसा जातक जीवन में सभी प्रकार की सुख-सुविधाओं को पाने वाला, राजदरबार (सराकार) से मान-इज्जत पाने वाला, उत्तम भवन सुख से युक्त, उत्तम मकान सुख से युक्त, होते हुए भी, अपने आप में अकेला व धर्मभीरु होता है।

अनुभव–ऐसे जातक का विवाह के तत्काल बाद भाग्योदय होता है। जातक धनवान होगा।

निशानी–खजूर के पेड़ की भांति अकेला बड़े भाई-बहन न हो। 32वें वर्ष में घर में कार आएगी।

दृष्टि–गुरु की पूर्ण दृष्टि तीसरे स्थान पर, पंचम स्थान पर, एवं सप्तम स्थान पर पड़ेगी। ऐसे जातक का पराक्रम तेज होगा, सन्तान सुख उत्तम होगा। पत्नी धनवान होगी। ससुराल अच्छा होगा।

दशा–'भोज संहिता' के अनुसार गुरु की दशा अत्यन्त शुभफल देगी। जातक के पराक्रम, व्यक्तित्व का चहुमुखी विकास होगा।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

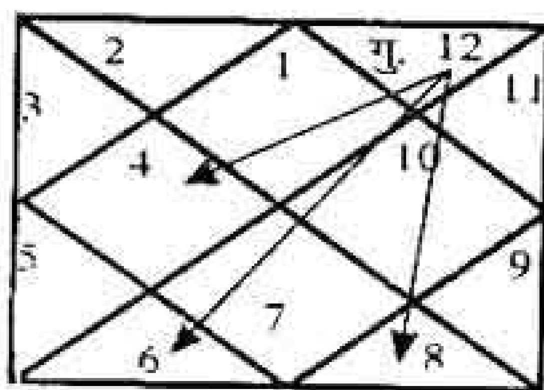
1. **गुरु+सूर्य**–गुरु के साथ सूर्य होने से जातक को प्रथम सन्तति के रूप में पुत्र रत्न की प्राप्ति होगी। जातक का भाग्योदय विवाह के बाद एवं प्रथम पुत्र प्राप्ति के बाद विशेष रूप में होगा।
2. **गुरु+चन्द्र**–चन्द्रमा यदि गुरु के साथ हो तो **'गजकेसरी योग'** के कारण जातक के भाग्य में अनुपम वृद्धि होगी। जातक का पुत्र धार्मिक एवं संस्कारवान होगा। पत्नी रूपवती सुन्दर होगी।

3. **गुरु+मंगल**—गुरु के साथ लग्नेश+अष्टमेश मंगल होने से जातक को व्यापार में कृषि-भूमि में लाभ होगा। जातक का भाग्योदय उद्योगपति होगा।
4. **गुरु+बुध**—गुरु के साथ पराक्रमेश+अष्टमेश बुध होने से जातक को व्यापार से लाभ होगा। मित्रों से लाभ होगा एवं शत्रु भी परास्त होकर धन देंगे।
5. **गुरु+शुक्र**—गुरु के साथ धनेश+सप्तमेश शुक्र होने से धन में वृद्धि लाभ में वृद्धि होगी।
6. **गुरु+शनि**—भाग्येश गुरु के साथ स्वगृही शनि जातक को उद्योगपति बनाएगा। उद्योग मे लाभ होगा।
7. **गुरु+राहु**—गुरु के साथ राहु लाभ में बाधक है।
8. **गुरु+केतु**—गुरु के साथ केतु व्यापार में बदलाव लाएगा।
9. गुरु के साथ शनि+मंगल+चन्द्र हो तो जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा। अति धनवान होगा।
10. गुरु+शनि+मंगल+चन्द्र+सूर्य पंच ग्रह युति यहां हो तो जातक निश्चिय ही (राजा) मिनिस्टर होगा। लालबत्ती का स्वामी होगा। नगर का प्रमुख व्यक्ति होगा।

एकादश भाव में गुरु का उपचार–

1. पीला सुगंधित रुमाल पास रखे।
2. पिता के वस्त्र, चारपाई, वस्त्र सोना का इस्तेमाल न करे।
3. लावारिश लाश को कफन।
4. केसर-चंदन का तिलक करे।
5. पुखराज रत्न सुवर्ण धातु में अभिमंत्रित करके पहने।

मेषलग्न में गुरु की स्थिति द्वादश स्थान में



मेषलग्न में गुरु नवम (त्रिकोण) का स्वामी होने से शुभफलदाई है। उसे यहां व्ययेश होने का दोष नहीं लगता। द्वादश स्थान में गुरु मीन राशि का स्वगृही होगा। ऐसा जातक कुलगुरु की तरह सर्वत्र पूजा (आदर) पाने वाला, कर्मकाण्डी पंडित, ज्ञानी होता है। भृगुसुत्र के अनुसार–**"शुभयुते स्वक्षेत्रे स्वर्गलोकप्राप्तिः"** ऐसे जातक को मृत्यु उपरान्त स्वर्गलोक की प्राप्ति होती है। इस कुण्डली वाले जातक को सताने वाला बरबाद हो जाएगा एवं आशीर्वाद पाने वाला तर जाएगा। जातक परोपकारी एवं धनवान होगा।

अनुभव—द्वादश भाव में द्वादशेश स्वगृही हो तो विमल नामक **'विपरीत राजयोग'** बनता है। ऐसा जातक गूढ़ स्वतंत्र विचारों वाला प्रतिष्ठित एवं धनी व्यक्ति होता है। इसे विपरीत राजयोग भी कह सकते हैं।

निशानी–उत्तम ज्ञानी वैरागी। जातक धनसंग्रह में विश्वास रखेगा।

दृष्टि–स्वगृही गुरु की अमृत दृष्टि चतुर्थ भाव, षष्टम भाव एवं अष्टम भाव पर होगा। फलत: सुख में वृद्धि, शत्रुओं का नाश करता हुआ, ऐसा जातक दीर्घजीवी होगा। ऐसे जातक की मृत्यु सुखद होगी।

दशा–'भोजसंहिता' के अनुसार विद्या, उच्च शिक्षा की डिग्री मिलते ही जातक का भाग्योदय होगा। गुरु की दशा में जातक का सर्वांगीण विकास होगा।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु+सूर्य**–गुरु के साथ पंचमेश सूर्य होने **'विद्याभंग योग'** बनता है। जातक को प्रारम्भिक विद्या में बाधा आएगी।
2. **गुरु+चन्द्र**–यदि गुरु के साथ चन्द्रमा हो तो **'गजकेसरी योग'** बनेगा। वस्तुत सुखेश चन्द्रमा की त्रिकोणपति गुरु से युति अत्यन्त शुभफलदाई होगी। जातक को सभी प्रकार के सुखों की प्राप्ति होगी। राजदरबार में सम्मान मिलेगा। जातक का राजनैतिक वर्चस्व बढ़ेगा। जातक खर्चीले स्वभाव का धर्मात्मा एवं दानी होगा।
3. **गुरु+मंगल**–गुरु के साथ लग्नेश मंगल होने से **'लग्नभंग योग'** बनेगा। परन्तु अष्टमेश मंगल का द्वादश स्थान में जाने से **'विपरीत राजयोग'** बनेगा। जातक धनी होगा। उसके पास चार पहियों की गाड़ी होगी।
4. **गुरु+बुध**–गुरु के साथ पराक्रमेश बुध होने से **पराक्रमभंग योग** बना परन्तु षष्टेश व्यय में होने से **'विपरीत राजयोग'** बना साथ ही नीच का बुध स्वगृही गुरु के साथ होने से **'नीचभंग राजयोग'** भी बना। ऐसा जातक राजा के समान ऐश्वर्यशाली, विद्वान एवं पराक्रमी होगा। उसके पास धन भी होगा।
5. **गुरु+शुक्र**–गुरु के साथ धनेश+सप्तमेश शुक्र **धनहीनयोग** एवं **विलम्ब विवाह योग** बनाता है। ऐसे जातक को धन प्राप्ति हेतु संघर्ष करना पड़ेगा।
6. **गुरु+शनि**–गुरु के साथ दसमेश+लाभेश शनि क्रमश: **राजभंग योग** एवं **लाभभंग योग** बनाएगा। जातक को आजीविका प्राप्ति हेतु काफी संघर्ष करना पड़ेगा।
7. **गुरु+राहु**–गुरु के साथ राहु धार्मिक यात्राएं एवं व्यय के खर्च कराएगा।
8. **गुरु+केतु**–गुरु के साथ केतु खराब स्वप्न दिखाएगा पर सपने सच होंगे।
9. यदि गुरु के साथ शनि, केतु या राहु हो तो जातक की अकालमृत्यु दुर्घटना से होती है। भृगुसूत्र के अनुसार–'पापयुते पापलोक प्राप्ति' जातक की मृत्यु दु:खदाई होगी। बचाव के लिए 'महामृत्युन्जय' का लॉकेट प्राप्त करें।
10. गुरु मीन में और चन्द्र कर्क में हो तो उत्तम राजयोग बनेगा।
11. यदि यहां गुरु+चन्द्रमा+शुक्र+बुध हो तो जातक (राजा) मिनिस्टर होगा। लाल बत्ती की गाड़ी का हकदार होगा।

द्वादश भाव में गुरु का उपचार–

1. झूठी गवाही देना, गबन न करना।
2. किसी के साथ विश्वासघात न करना।
3. गुरु साधु या पीपल की नित्य सेवा करना।
4. गुरुवार का उपवास नियमित करना।
5. पुखराज पहनना, पुखराज के अभाव में हल्दी की गट्ठी पीले रंग के धागे में बांधे या सुनैला धारण करें।
6. चांदी की कटोरी में केसर चंदन का तिलक करना।
7. शुद्ध सोना धारण करना।

❑❑❑

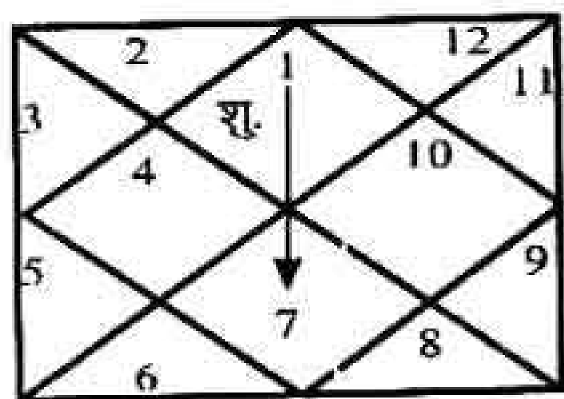
मेषलग्न में शुक्र की स्थिति

मेषलग्न में शुक्र की स्थिति प्रथम स्थान में

मेषलग्न में शुक्र द्वितीयेश व सप्तमेश दो मारक स्थानों का स्वामी होने से परमपापी व अशुभफल देने वाला है। परन्तु ज्योतिषशास्त्र में लग्नस्थ शुक्र को शुभ माना है कहा है–

एक: शुक्रो जन्म समये, लाभसंस्थे च केन्द्रे,
जातौ वै जन्मराशि यदि सहजगते प्राप्यते का त्रिकोणे।
विद्या विज्ञानयुक्तो भवति, द्यरपति विश्वविख्यात कीर्ति:
दानी मानी च शूरो, हयगजसहितै सद्गुणै: सेव्यमान:॥

–मानसागरी श्लोक 2/पृ. 242



ऐसा जातक दूसरों को पालने वाला पशुधन एवं वाहन सुख से युक्त, दानी- मानी शूरवीर, सुन्दर वस्त्र-आभूषण व स्त्री का शौकीन धनवान व सुखी होता है।

अनुभव–भोज संहिता के अनुसार ऐसा जातक बहुत यात्रा करने वाला यशस्वी पत्रकार होता है। जातक की पत्नी सुन्दर होगी।

निशानी–काग तथा मच्छरेखा की रंग बिरंगी माया।

दशा–शुक्र की दशा अच्छा फल देगी। 'भोज संहिता' के अनुसार व्यक्ति की आर्थिक उन्नति होगी। पत्नी व ससुराल से लाभ होगा।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

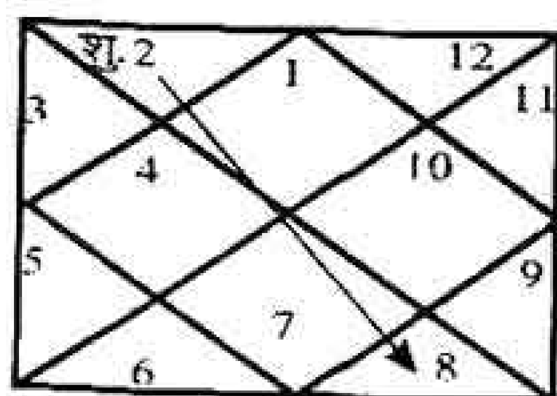
1. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ यहां पंचमेश सूर्य उच्च का होगा। फलत: **रविकृत राजयोग** बनेगा। जातक K.A.S या IPS अधिकारी होगा।
2. **शुक्र+चन्द्र**–शुक्र के साथ चन्द्रमा जातक को माता की सम्पत्ति दिलाएगा। सुखेश धनेश की युति के कारण जातक के पास चार पहियों वाली गाड़ी होगी।
3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ यदि यहा मंगल हो तो 'रुचक योग' बनेगा। धनेश के साथ लग्नेश की युति होने से जातक स्वपराक्रम से खूब धन कमाएगा। पत्नी सुन्दर होगी तथा विवाह के बाद जातक उन्नति पथ की ओर तीव्रता से आगे बढ़ेगा।

4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ तृतीयेश+षष्टेश की युति जातक को पराक्रमी तो बनाएगी पर जीवन में गुप्त शत्रु बहुत होगा।
5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ भाग्येश गुरु जातक को भाग्यशाली बनाएगा। परन्तु जातक अत्यधिक खर्चीले स्वभाव का व्यक्ति होगा।
6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ राज्येश+लाभेश शनि नीच का होगा। ऐसा जातक लम्पट, धूर्त एवं व्याभिचारी होगा।
7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु जातक को जिद्दी स्वभाव का, रंगीले मिजाज का एवं पथभ्रष्ट किन्तु विख्यात व्यक्ति बनाएगा।
8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु जातक लड़ाकू बनाएगा। जातक स्वार्थी होगा पर युद्ध में विजय प्राप्त करेगा।
9. शुक्र+सूर्य+मंगल+बुध की युति यदि लग्न में हो तो जातक (राजा) मिनिस्टर होगा। लालबत्ती का मालिक होगा।

प्रथम भाव में शुक्र का उपचार–

1. भोजन का कुछ हिस्सा कुत्ते, कौवे के लिए गौ ग्रास के रूप में निकालना।
2. जौ-सरसों, ज्वार व सतनाजा पशु–पक्षियों को चुगाना।
3. स्त्री के लिए आभूषण बनवाना।
4. शुक्रवार को व्रत-कथा आरती करें।
5. शुक्र के वैदिक मंत्रों की साधना करें।
6. रुपया किसी को उधार न दें, वरना डूब जाएगा।

मेषलग्न में शुक्र की स्थिति द्वितीय स्थान में



मेषलग्न में शुक्र द्वितीयेश व सप्तमेश दो मारक स्थानों का स्वामी होने से परमपापी व अशुभफल देने वाला है। यहां द्वितीय स्थान में वृष का शुक्र स्वगृही होगा। फलत: जातक व्यापार प्रिय एवं धनवान होगा। सुन्दर पोशाक पहनने वाला, शृंगार सामग्री से लाभ प्राप्त करने वाला, अच्छा (सुस्वादु) भोजन करने व कराने वाला, सुन्दर भवन वाला, 32वें वर्ष में विशेष लाभ, स्त्री सुख प्राप्त करने वाला जातक होता है।

अनुभव–भोज संहिता के अनुसार सप्तमेश यदि द्वितीय स्थान में हो तो जातक को विपरीत लिंगियों से अर्थलाभ होता है। जातक की स्त्री सुन्दर होगी पर शुक्र सप्तम भाव से आठवें स्थान पर होने से जातक को पत्नी से संतोष नहीं होगा।

निशानी–कुटिया उसी गऊघाट। जातक की आंखें सुन्दर होगी। 'नेत्रविलास धनवान् सुमुख'–भृगुसूत्र चेहरा आकर्षक होगा।

दशा–शुक्र की दशा धन देगी। विवाह कराएगी। पत्नी व ससुराल का सुख, व्यापार में बढ़ोतरी इस दशा में निश्चित सम्भव है।

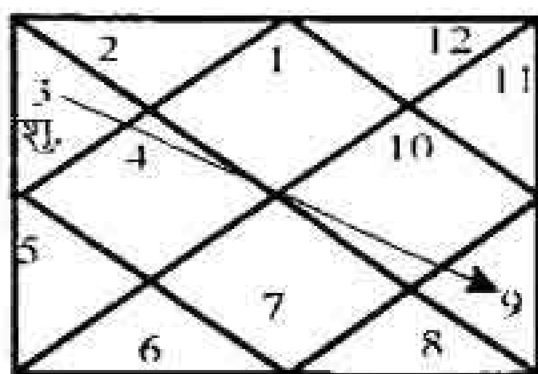
शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ पंचमेश सूर्य धनस्थान में जातक को धनवान बनाएगा। धन का संघर्ष रहेगा। पर प्रथम पुत्र जन्म के बाद जातक विशेष रूप से धनवान होगा।
2. **शुक्र+चन्द्र**–यदि शुक्र के साथ चन्द्रमा होने से **'किम्बहुना योग'** बनेगा। जातक राजा-महाराजा तुल्य ऐश्वर्य भोगेगा। दीखने में अत्यधिक सुन्दर होगा। जातक बहुत से मकान व वाहनों का स्वामी होगा। उसके नौकर वफादार होंगे। माता की विशेष कृपा उस पर बनी रहेगी।
3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ मंगल लग्नेश+अष्टमेश होने से व्यक्ति खूब धन कमाएगा पर धन खर्च होता चला जाएगा।
4. **शुक्र+बुध**–बलवान धनेश के साथ पराक्रमेश+षष्टेश बुध की युति जातक को मित्रों द्वारा धन लाभ कराएगी। पत्नी व ससुराल द्वारा भी धन लाभ का संकेत है।
5. **शुक्र+गुरु**–बलवान शुक्र के साथ भाग्येश+खर्चेश गुरु की युति जातक को सौभाग्यशाली बनेगी। जातक को पिता की सम्पत्ति मिलेगी।
6. **शुक्र+शनि**–बलवान धनेश के साथ राज्येश+लाभेश शनि की युति जातक को व्यापार में प्रचुर मात्रा में धन दिलाएगी।
7. **शुक्र+राहु**–बलवान धनेश के साथ धनस्थान में राहु धन के घड़े में छेद करता है। जातक खूब कमाएगा पर धन खर्च होता चला जाएगा। धन संग्रह में परेशानी होगी।
8. **शुक्र+केतु**–बलवान धनेश के साथ धनस्थान में केतु जातक को फिजूल खर्ची बनाएगा। जातक को धन की तंगी महसूस होती रहेगी।
9. शुक्र+चन्द्र+गुरु+मंगल की युति जातक को राजा तुल्य ऐश्वर्यशाली एवं कुबेरतुल्य धनी बनाएगी।

द्वितीय भाव में शुक्र का उपचार–

1. आलू दही का दान करना चाहिए।
2. पशु पालन डेयरी का काम करना चाहिए।
3. श्रीसूक्त, कनकधारा स्तोत्र का पाठ करें।
4. शुक्रवार को व्रत कथा आरती करें।
5. श्रीयंत्र-कनकधारा यंत्र-कुबेर यंत्र को सुनहरी फेम में जड़वाकर नित्य पूजा अर्चना करें।
6. किसी की जमानत न दें, वरना डूब जाएगी।

मेषलग्न में शुक्र की स्थिति तृतीय स्थान में



मेषलग्न में शुक्र द्वितीयेश व सप्तमेश दो मारक स्थानों का स्वामी होने से परमपापी व अशुभफल को देने वाला है। शुक्र यहां तृतीय स्थान में मिथुन राशि का होगा। ऐसा व्यक्ति यात्रा से लाभ पाता है। तीर्थ यात्राएं, धार्मिक यात्राएं होंगी। ऐसे जातक पर स्त्रियां विशेष रूप से मुग्ध रहती हैं। जातक कामक्रीडा में विशेष पटु होता है एवं वाणी के द्वारा दूसरों को मोहित करने में समर्थ होता है।

अनुभव–भोज संहिता के अनुसार ऐसे जातक के भाई/मित्र विदेश जाकर धनवान होंगे। इसका लाभ जातक को भी मिलेगा। जातक को पिता की सम्पत्ति मिलेगी।

निशानी–औरत की इज्जत करता–फिर बुरा क्यों।

दशा–शुक्र की दशा में पराक्रम बढ़ेगा। दशा शुभफलदाई होगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ सूर्य की युति पंचमेश की धनेश+सप्तमेश के साथ युति कहलाएगी। ऐसा जातक पराक्रमी होगा। धनवान होगा। भौतिक सुख-सुविधाओं से युक्त जीवन जीएगा।
2. **शुक्र+चन्द्र**–शुक्र के साथ सुखेश चन्द्र की युति होने से जातक को भाई–बहनों का सुख है। स्त्री जातक से लाभ होगा।
3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ लग्नेश+अष्टमेश मंगल तृतीय स्थान में होने से जातक महान् पराक्रमी होगा।
4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ यदि बुध हो तो बुध यहां स्वगृही होगा। बलवान, धनेश की तृतीयेश के साथ युति होने से **'मित्रमूलधन योग'** बनेगा। फलत: मित्रों के द्वारा धन की प्राप्ति होगी। पराक्रम तेज रहेगा। भृगुसूत्र के अनुसार–**'भ्रातृतत्पर क्रियायोगपर:'** भाई का धन मिलेगा।
5. **शुक्र+गुरु**–सूर्य के साथ भाग्येश+खर्चेश गुरु होने से जातक को बड़े भाई का सुख रहेगा। जातक की जान–पहचान बड़े लोगों से होगी।
6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ राज्येश+लाभेश शनि तृतीय जातक को षड्यंत्रकारी मित्रों से परिचय करेगा। मित्र नकारात्मक विचारों वाले होंगे।
7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु भाई बहन व कुटुम्बीजनों से विद्रोह कराएगा।
8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु होने से स्त्री मित्र को लेकर बदनामी होगी।

तृतीय भाव में शुक्र का उपचार–

1. राग-रंग, संगीत व गलत खाने-पीने का शौक बंद करें।

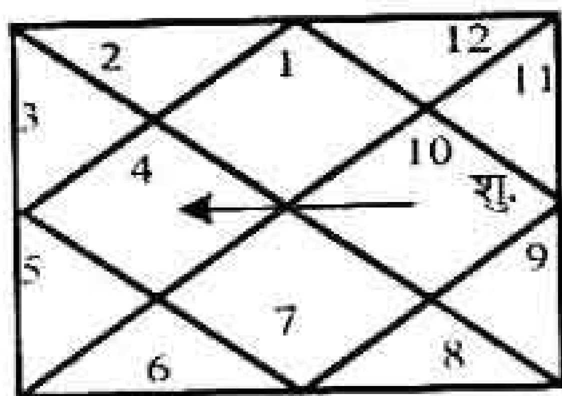
2. घर की पत्नी को महत्त्व देने पर गृहस्थी सुखी होगी।
3. शुक्रवार को व्रत-कथा आरती करें।
4. शुक्र के तांत्रिक मंत्रों की साधना करें।
5. शुक्रवार को नमक और खटाई पूर्णत: वर्जित है।

मेषलग्न में शुक्र की स्थिति चतुर्थ स्थान में

मेषलग्न में शुक्र द्वितीयेश व सप्तमेश दो मारक स्थानों का स्वामी होने से परमपाप व अशुभफल देने वाला माना गया है। यहां चतुर्थ स्थान में शुक्र केन्द्रवर्ती होगा। शास्त्रकार कहते हैं–

भवति मदनमूर्तिः वल्लभः कामिनीनाम्,
सकल जनसमर्थो, दीर्घ जन्मा विधेयः।
गज विषय गुणज्ञो, द्रव्यमुख्य प्रधानः,
सधनकनकपूर्णो, दैत्यामो यस्य केन्द्रे॥

– मानसागरी श्लोक 11/पृ.244



ऐसा जातक उच्च वाहन, जमीन-जायदाद का स्वामी होता है। जातक बुजुर्गों की सम्पत्ति पाने वाला 'कुल का दीपक' सन्तान से सुखी होता है। ऐसा जातक स्त्रियों का प्रिय और एक समय में दो स्त्रियों से कामक्रीड़ा करने वाला, काम कला मर्मज्ञ होता है।

अनुभव–'भोज संहिता' के अनुसार ऐसे जातक के उत्तम सन्तति अधिक मात्रा में होती है। संतान पढ़ी-लिखी होती है। जातक की माता लम्बी आयु वाली होगी।

निशानी–अपना इश्क औरतों का।

दशा–शुक्र की दशा में वाहन सुख मिलेगा। धन की प्राप्ति होगी। सुख में वृद्धि होगी। पत्नी पक्ष से लाभ होगा।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

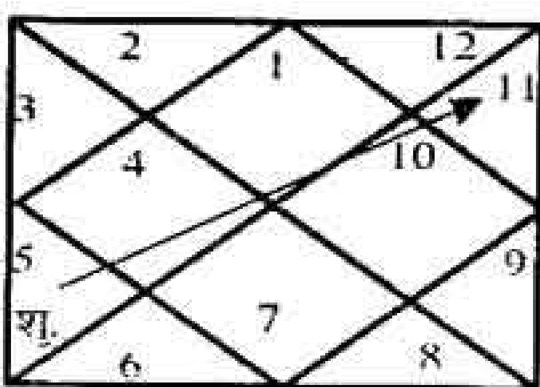
1. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के सूर्य व्यक्ति को उच्च शिक्षिका दिलाएगा। जातक को माता-पिता दोनों का सुख मिलेगा।
2. **शुक्र+चन्द्र**–यदि शुक्र के साथ चन्द्रमा हो तो **'यामिनीनाथ योग'** बनेगा। जातक की माता सुन्दर व समझदार होती है। जातक माता का विशेष भक्त होता है। माता की उम्र लम्बी होगी।
3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ यदि मंगल हो तो नीच का होगा। फिर भी कृषि भूमि व माता से लाभ होगा।

4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ बुध होने जातक बुद्धि बल मे तेज रहेगा। परन्तु षडयंत्र से सावधानी रखनी होगी।
5. **शुक्र+गुरु**–यदि शुक्र के साथ गुरु हो तो '**हंसयोग**' बनेगा। जातक राजातुल्य ऐश्वर्य सम्पन्न होगा। उसे पैतृक सम्पत्ति एवं राज्य सरकार से सहयोग मिलेगा।
6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ राज्येश+लाभेश शनि जातक को व्यापार में लाभ दिलाएगा। जातक के पास एक से अधिक वाहन होंगे।
7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु माता को बीमारी देगा। वाहन से दुर्घटना भी कराएगा।
8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु शरीरिक अस्वस्थ देगा। जातक को अचानक हृदयरोग होगा।
9. शुक्र+चन्द्र+गुरु+मंगल की युति जातक को (राजा) मिनिस्टर बनाएगी। जातक लालबत्ती की गाड़ी का स्वामी होगा।

चतुर्थ भाव में शुक्र का उपचार–

1. विवाह समय पर गाय-बछड़े का दान करने पर किस्मत खुलेगी।
2. चांदी की गाय ब्राह्मण को भेंट करें।
3. पत्नी व बेटी को सुखी देखने के लिए जातक को अने घर की छत पर कचरा नहीं रखना चाहिए।
4. शुक्रवार को व्रत-कथा आरती करें।
5. शुक्र के तांत्रिक मंत्र की एक माला नित्य फेरे।
6. अपना वाहन किसी को भी चलाने के लिए न दें।

मेषलग्न में शुक्र की स्थिति पंचम स्थान में



मेषलग्न में शुक्र द्वितीयेश व सप्तमेश होने से दो मारक स्थानों का स्वामी होने से परमपापी एवं अशुभ है। शुक्र यहां पांचवे भाव में होने से सिंह राशि का होगा। पंचम शुक्र शुभफलदाई है। भृगुसूत्र के अनुसार–"**बुद्धिमान मंत्री सेनापतिः**" जातक बुद्धिमान होगा। उच्च अधिकारी, सेनापति या नेता होगा। जातक की पत्नी उच्च घराने की होगी। जातक को जुआ, लाटरी, सट्टा एवं शेयरबाजार से धन मिल सकता है।

अनुभव–'भोज संहिता' के अनुसार सप्तमेश यदि पंचम भाव में हो तो जातक छोटी उम्र में सुन्दर लड़की से विवाह करेगा। जातक की पत्नी धनवान एवं विनम्र होगी। कन्या सन्तति अधिक होगी। जातक प्रेम विवाह करेगा।

निशानी–बच्चों से भरा परिवार। स्त्री को प्रसन्न रखने पर परिवार में वृद्धि होगी।

दशा–शुक्र की दशा में अच्छा फल मिलेगा। संघर्ष से व्यक्ति निखरेगा। धन की प्राप्ति होगी। जीवनसाथी से लाभ होगा।

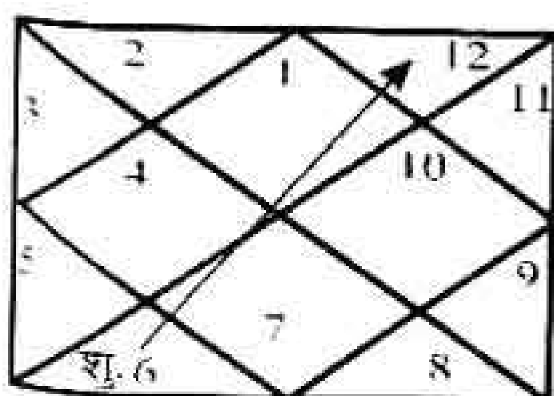
शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ यहां सूर्य स्वगृही होगा। ऐसे जातक को पुत्र व पुत्री दोनों सन्तति की प्राति होगी। विद्याध्ययन से किस्मत चमकेगी।
2. **शुक्र+चन्द्र**–शुक्र के साथ यदि चन्द्रमा हो तो **'यामिनी नाथ योग'** बनेगा। जातक को ननिहाल की सम्पत्ति मिलेगी। एक पुत्र, दो कन्या का योग बनता है।
3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ यदि मंगल हो तो तीन पुत्र एवं दो कन्या होंगी।
4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ पराक्रमेश+षष्टेश बुध होने से जातक को कन्या सन्तति अधिक होगी। प्रयत्न (उपाय) करने पर पुत्र होगा।
5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ यदि गुरु हो तो भाग्य बराबर साथ देगा एवं पिता व राजदरबार से लाभ होगा।
6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ शनि राज्येश+लाभेश होने से जातक धनवान होगा। व्यापारी व उद्योगपति होगा। कन्या अधिक होगी।
7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु हो तो जातक सन्तानहीन होगा। ऐसे जातक को प्रेमविवाह में धोखा मिलेगा।
8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु गर्भस्राव, गर्भपात का संकेतक है। एकाध बार विद्या में बाधा आती है।

पंचम भाव में शुक्र का उपचार–

1. गाय की सेवा करें।
2. प्रेम विवाह न करें अन्यथा पछताना पड़ेगा।
3. गुप्तांगों को दूध-दही से धोने पर घर की बरकत होगी।
4. शुक्रवार को व्रत-कथा आरती करें।
5. शंखपुंखा की जड़ का ताबीज बनाकर पहनें।
6. शुक्र की वस्तुओं का दान करें।
7. शुक्रवार को नमक और खटाई पूर्णतः वर्जित है।

मेषलग्न में शुक्र की स्थिति षष्टम् स्थान में



मेषलग्न में शुक्र द्वितीयेश एवं सप्तमेश दो मारक स्थानों का स्वामी होने से परमपापी व अशुभ है। षष्टम् स्थान में शुक्र कन्याराशि में नीच का होगा। धनेश होकर शुक्र छठे जाने से **'धनहीन योग'** बनेगा। ऐसे जातक को आर्थिक क्षेत्र में उपलब्धि प्राप्त करने के लिए काफी संघर्ष करना पड़ेगा।

जातक कामक्रीड़ा में **गन्दी** व अमानवीय हरकतें करता है। इसं गुप्त **व** गुह्य बीमारियां सम्भव हैं। विवाह के बाद जातक को ज्यादा तकलीफों-कष्टों का सामना करना पड़ सकता है **क्योंकि** सप्तमेश होकर शुक्र का छठे जाना **'विवाहभंग योग'** विलम्बविवाह योग भी कराता है। **जातक** के विचार, जीवन साथी के साथ नहीं मिलेंगे।

अनुभव–'भोज संहिता' के अनुसार सप्तमेश यदि छठे हो तो जातक की पत्नी ननिहाल पक्ष से सम्बन्धित होगी। जातक की एक समय में दो पत्नी हो सकती हैं।

निशानी–दौलत के महल वरना नीच दौलत-कुलद्वेशी जातक का जन्म बहन या ननिहाल के लिए अशुभ हो सकता है।

दशा–शुक्र की दशा मारकेश का काम करेगी। सावधानी अनिवार्य है। जीवनसाथी **से** बिछोह हो सकता है।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

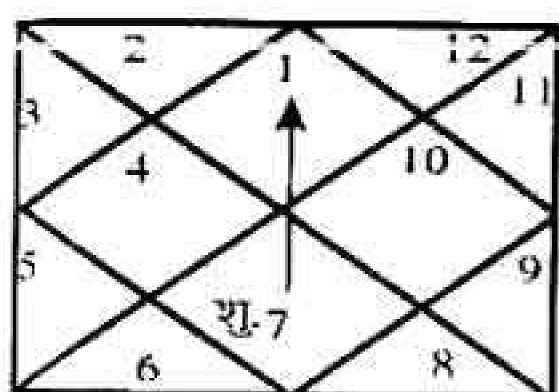
1. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ सूर्य **'विद्याभंग योग'** एवं **'सन्ततिहीन योग'** बनाता है। **ऐसे** जातक को आर्थिक संघर्ष के साथ-साथ गृहस्थ सुख में बाधा आती है।
2. **शुक्र+चन्द्र**–यदि यहां शुक्र के साथ चन्द्रमा हो तो जातक का अपनी माता के साथ झगड़ा रहेगा। ननिहाल या माता की सम्पत्ति को लेकर विवाद रहेगा।
3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ मंगल **'लग्नभंग योग'** एवं **विपरीत राजयोग** बनाता है। **जातक** धनवान होगा पर वाहन दुर्घटना का भय रहेगा।
4. **शुक्र+बुध–नीचभंग राजयोग**–यदि यहां नीच के शुक्र के साथ 'बुध' हो तो नीचभंग राजयोग की सृष्टि होगी तथा शुक्र का नीचत्व समाप्त हो जायेगा। जातक को **मित्रों से** लाभ हो सकता है एवं आर्थिक स्थित विषम नहीं होगी। जातक की दो **पत्नी हो** सकती हैं।
5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ गुरु **'भाग्यभंगयोग'** एवं **विपरीत राजयोग** दोनों बनाएगा। **ऐसे** जातक को भाग्योदय हेतु परिश्रम करना पड़ेगा। जातक मध्यम आयु में जाकर धनवान होगा।
6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ शनि **'राज्यभंग योग'** एवं **'लाभभंग योग'** बनाता है। व्यापार में नुकसान होगा। सरकारी नौकरी में बाधा आएगी।
7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु यहां शुभ फलदायक है। जातक रोग व शत्रुओं का **नाश** करने में सक्षम होगा।
8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु भी अरिष्टनाशक है।
9. शुक्र छठे एवं बुध सातवें हो तो स्त्री स्थाई रूप से बीमार रहेगी।
10. शुक्र कन्या और बुध आठवें हो तो जातक जीवन भर कर्ज में डूबा रहेगा।

षष्टम भाव में शुक्र का उपचार–

1. घर की स्त्रियों को सम्मान दें।

2. स्त्रियों को नंगे पैर न चलने दें नहाते समय भी नंगा पैर जमीन पर न लगें।
3. शुक्रवार को व्रत-कथा आरती करें।
4. तेजगति के वाहन में सफर न करें।
5. शुक कवच का नित्य पाठ करें।
6. शुक शान्ति का प्रयोग करें।
7. चावल, शक्कर व शुक की वस्तुओं का दान करें।
8. असाध्य रोग की स्थिति में दूध-दही, शक्कर शहद व पंचामृत से 'रुद्राभिषेक' करावें।
9. शुक्रवार के दिन अग्निकोण की ओर यात्रा न करें।
10. छ: दिन तक निरन्तर छ: कन्याओं को खीर भोजन खिलाकर दक्षिणा दें।
11. छः सफेद पत्थर दूध में धोकर, सफेद चंदन लगाकर छः शुक्रवार तक जल में प्रवाहित करें।

मेषलग्न में शुक्र की स्थिति सप्तम स्थान में



मेषलग्न में शुक्र द्वितीयेश व सप्तम दो मारक स्थानों का स्वामी होने से परमपापी व अशुभ है। सातवें स्थान पर शुक्र तुला का होकर स्वगृही होगा। फलतः मालव्य योग कुलदीपक योग की सृष्टि करेगा। ऐसा जातक दीर्घायु युक्त, राजा तुल्य ऐश्वर्य वैभव को प्राप्त करने वाला होता है। जातक का भाग्योदय विवाह के बाद, गृहस्थ जीवन सुखमय होता है। भागीदारी में लाभ, व्यापार में लाभ अर्जित करता है। भृगुसूत्र के अनुसार- "**अतिकामुकः सुख चुम्बकः अर्थवान् पटदारखः वाहनवान् सकल कार्य निपुणः**" ऐसा जातक अतिकामुक होता है। कामक्रीड़ा में स्त्रियों को विशेष रूप से संतुष्ट करने वाला, अन्य स्त्रियों से सम्पर्क रखने वाला, उत्तम वाहन का स्वामी एवं धनाढ्य होता है। जातक का व्यक्तित्व आकर्षक होगा।

निशानी–जैसा यह वैसी वह, साथी का प्रभाव, अकेला नेक। आयु के 25वें वर्ष में विवाह शुभ। भागीदारी में धंधे में लाभ।

अनुभव–शुक्र प्रधान कार्य में रुचि होगी। चित्रकारी, वीडियो फोटोग्राफी, पत्रकारिता, सौन्दर्यप्रसाधन कार्यों में रुचि, पर्यटन में रुचि, फिल्म क्षेत्र, वस्त्र-व्यवसाय द्वारा धन अर्जित करता है। भोज संहिता के अनुसार जातक स्वयं सुन्दर होगा तथा पत्नी प्रतिष्ठित घराने की होगी।

दशा–शुक्र की दशा अच्छी जाएगी। विवाह होगा। जीवन साथी का सहयोग आगे बढ़ाएगा। धन की प्राप्ति होगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+सूर्य–नीचभंग राजयोग**–शुक्र के साथ यदि सूर्य हो तो, सूर्य की नीचत्व भंग होकर,

सूर्य शुभफल देने वाला होगा। जातक को उच्च शैक्षणिक डिग्री मिलेगी। उत्तम सन्तति होगी। पुत्र एवं कन्या दोनों का संयोग बनेगा।

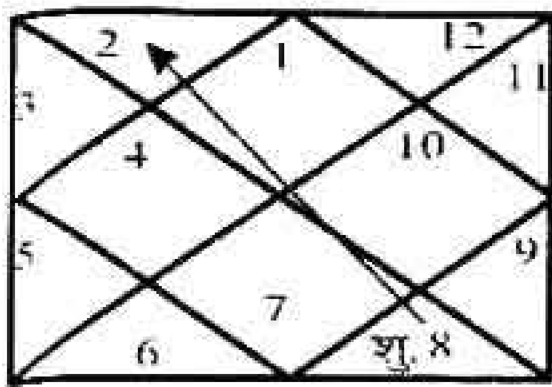
2. **शुक्र+चन्द्र**–शुक्र के साथ सुखेश चन्द्रमा **'मातृमूल धनयोग'** बनाता है। जातक को माता से सम्पत्ति मिलेगी। वाहन का सुख प्राप्त होगा।
3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ मंगल होने से **'शत्रुमूल धनयोग'** बनता है। जातक को शत्रु से धन प्राप्त होगा। जातक के शत्रु नष्ट होंगे।
4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ **'मातृमूल धनयोग'** बनाता है। जातक को भाइयों से, मित्रों से धनलाभ होगा।
5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ गुरु **'भाग्यमूल धनयोग'** बनाता है। जातक को भाग्य से धन मिलेगा।
6. **शुक्र+शनि–किम्बहुनायोग**–शुक्र के साथ यदि शनि हो ता यह योग बनेगा। शुक्र के साथ शनि उच्च का हो तो इससे अधिक और क्या होगा? जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा। बहुत धनाढ्य होगा। बलवान धनेश की दशमेश के साथ युति होने से **राज्यमूल धनयोग** बना। जातक को राजदरबार (सरकार) से लाभ होगा एवं पैतृक सम्पत्ति भी मिलेगी।
7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु गृहस्थ सुख में बाधक है। गुप्त रोग, गुप्त सम्बंध से परेशानी होगी।
8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु गृहस्थ सुख में न्यूनता लाता है। जीवन में गुप्तांग में ऑपरेशन जरूर होगा।
9. यदि यहां शुक्र+शनि+गुरु+मंगल की युति हो तो जातक (राजा) मिनिस्टर होगा। वह लालबत्ती का गाड़ी की स्वामी होगा।

सप्तम भाव में शुक्र का उपचार–

1. विवाह के समय गाय का दान करें।
2. बिल्ली की जेर को कम्बल के टुकड़े से लपेट कर पास रखे।
3. शुक्रवार को व्रत-कथा आरती करें।
4. शुक्र की वस्तुओं का दान करें।
5. यदि जीवन साथी पर कष्ट हो तो आठ किलो गाजर या जमीकन्द शुक्रवार के दिन धर्मस्थान में भेंट करें।

मेषलग्न में शुक्र की स्थिति अष्टम स्थान में

मेषलग्न में शुक्र द्वितीयेश व सप्तमेश दो मारक स्थानों का स्वामी होकर पर परमपापी व अशुभ हो गया है। शुक्र अष्टम स्थान में **'वृश्चिक राशि'** का होगा। धनेश होकर शुक्र अष्टम स्थान में वृश्चिक राशि का होगा। धनेश होकर शुक्र आठवें होने से **'धनहीन योग'** बनेगा। धन



के मामले में संघर्ष की स्थिति रहेगी। जातक पत्नी का भक्त होगा। स्त्री की जबान का शब्द पत्थर की लकीर होगा। यहां शुक्र वाणी का अधिपति भी है। अत: जातक की वाणी से निकला अशुभ शब्द जल्दी पूरा होगा। शुक्र की दृष्टि वाणी स्थान पर होगी जो उसके स्वयं का घर है। वाणी विनम्र होगी।

अनुभव–'भोजसंहिता' के अनुसार जातक की मृत्यु विदेश या जन्मस्थान से बहुत दूर होगी। पत्नी की मृत्यु भी शीघ्र हो सकती है। सावधानी अनिवार्य है। पत्नी धनी परिवार से होगी। जातक की स्त्री यदि किसी को शाप दे दे तो वह अवश्य पूरा होगा।

निशानी–जली मिट्टी की हालत, स्त्री। पच्चीस वर्ष की आयु के बाद विवाह शुभ रहे।

दशा–शुक्र यहां मारकेश का काम करेगा। सावधानी अनिवार्य है। जीवनसाथी से विछोह सम्भव है। धन की हानि भी हो सकती है।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

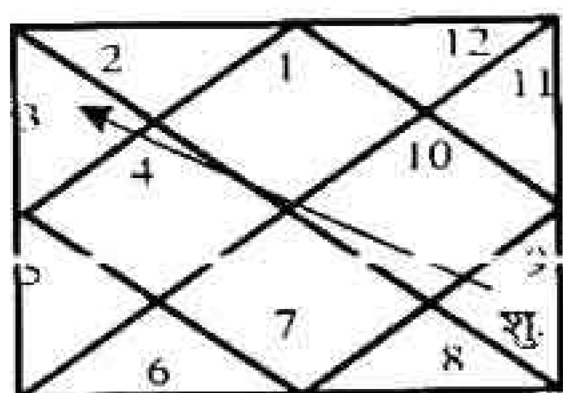
1. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ पंचमेश सूर्य होने से **'सन्ततिहीन योग'** एवं **विद्याभंग योग** बनता है। जातक के विद्याध्ययन में बाधा आएगी। प्रथम सन्तति विलम्ब से होगी।
2. **शुक्र+चन्द्र**–यदि शुक्र के साथ चन्द्रमा हो तो नीच का चन्द्र **'सुखहीन योग'** की सृष्टि करेगा। जातक की मां बीमार रहेगी। उसमें रुपया खर्च होगा। नौकर चोरी करेगा। वाहन दुर्घटना का भय बना रहेगा।
3. **शुक्र+मंगल**–यदि शुक्र आठवें मंगल के साथ हो तो **'धनहीन योग'** के साथ **'लग्नभंग योग'** बनेगा और कुण्डली प्रबल मंगलिक होगी। ऐसे जातक को विलम्ब विवाह या कई बार अविवाह की स्थिति बनती है। मंगल का उपाय करने पर शीघ्र विवाह होगा।
4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ बुध **'पराक्रमभंग योग'** एवं **'विपरीतराज योग'** दोनों बनाएगा। जातक धनवान होगा पर पीठ पीछे निन्दा होगी।
5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ गुरु **'भाग्यभंग योग'** एवं **'विपरीतराज योग'** दोनों बनाएगा। ऐसे जातक का भाग्योदय संघर्ष के बाद होगा।
6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ शनि **'राज्यभंग योग'** एवं **लाभभंग योग** दोनों बनाएगा। जातक को व्यापार में लाभप्राप्ति में अचानक घाटा होगा।
7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु होने से जातक को 'सेक्स रोग' होगा।
8. **शुक्र+केतु**– शुक्र के साथ केतु होने से जातक स्त्री-मित्रों से परेशान रहेगा।

अष्टम भाव में शुक्र का उपचार–

1. पत्नी को बिना वजह तंग न करें।
2. शुक्र की वस्तुओं का दान न लें।
3. शुक्रवार के दिन गन्दे नाले में तांबे का पैसा या पुष्प गिरावें।

4. बछड़े वाली गाय का दान करें।
5. शुक्रवार का व्रत-कथा आरती करें।
6. तेजगति के वाहन में सफर न करें।
7. 'शुक्र कवच' का नित्य पाठ करें।
8. शुक्र शान्ति का प्रयोग करें।
9. शुक्र की वस्तुओं का दान करें।
10. यदि मृत्यु तुल्य कष्ट हो तो शक्कर, दही दूध, शहद व पंचामृत से रुद्राभिषेक करावें।

मेषलग्न में शुक्र की स्थिति नवम स्थान में



मेषलग्न में शुक्र द्वितीयेश व सप्तमेश दो मारक स्थानों का स्वामी होने से परमपापी एवं अशुभ है शुक्र यहां नवम स्थान में धनुराशि का होगा। ऐसे जातक का जन्म दादा-पिता, परिवार के लिए शुभ रहेगा। जातक उच्च पदाधिकारी होगा। धार्मिक विचारों वाला, तीर्थयात्रा करने वाला होगा। भृगुसूत्र के अनुसार–**'धार्मिकः तपस्वी अनुष्ठान परः सुतदारवान्'** जातक को पत्नी व पुत्र दोनों का सुख भरपूर होगा। पिता की दीर्घायु होगी। जातक द्वारा किए गए मंत्र अनुष्ठान शीघ्र सफल सिद्ध होंगे।

अनुभव–भोज संहिता के अनुसार यदि सप्तमेश भाग्यस्थान में हो तो जातक के पिता एवं श्वसुर दोनों धनवान होंगे। दोनों परदेश में कमाएंगे, जिसका लाभ जातक को भी मिलेगा। जातक को पिता की सम्पत्ति मिले।

निशानी–मिट्टी काली आंधी-मंगल बद। शुक्र की दृष्टि पराक्रम स्थान पर रहने से बहनों से लाभ अधिक होगा।

दशा–शुक्र की दशा उत्तम फल देगी। कार्य में सफलता के साथ भाग्य का उदय होगा। धन की प्राप्ति सम्भव है। व्यापार-व्यवसाय में सफलता है।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ पंचमेश सूर्य होने से जातक का भाग्योदय विद्याध्ययन से होगा। जातक पूर्ण सुखी व राजपक्ष में प्रभावसम्पन्न व्यक्ति होगा।
2. **शुक्र+चन्द्र**–शुक्र के साथ सुखेश चन्द्रमा होने से जातक को माता-पिता की सम्पत्ति मिलेगी।
3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ मंगल होने से जातक को परिश्रम का लाभ मिलेगा। जातक बड़ी भू-सम्पत्ति का स्वामी होगा।
4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ पराक्रमेश बुध होने से जातक महान पराक्रमी होगा एवं बुद्धिबल से आगे बढ़ेगा।

5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ यदि गुरु हो गुरु स्वगृही कहलाएगा और शुक्र के शुभत्व में अकल्पनीय वृद्धि करेगा। जातक को पुत्र सन्तति अधिक होगी। जातक का सम्पर्क धार्मिक पुरुषों, साधु-सन्तों एवं परोपकार की सेवा में लगे सज्जनों से अधिक रहेगा। जातक पिता धनवान एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ राज्येश+लाभेश शनि होने से जातक बड़ा व्यापारी होगी। भौतिक सुख-सुविधा से सम्पन्न व्यक्ति होगा।
7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु जातक के भाग्योदय में बाधक है। भाग्योदय विलम्ब से होगा।
8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु जातक के भाग्योदय में संघर्ष का द्योतक है।
9. यदि यहां गुरु+शुक्र+चन्द्र+मंगल की युति हो तो जातक (राजा) मिनिस्टर होगा। जातक लाल बत्ती की गाड़ी का हकदार होगा।

नवम भाव में शुक्र का उपचार–

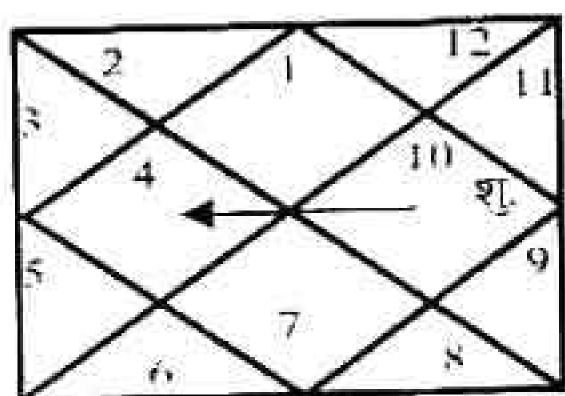
1. मकान की नींव में चांदी शहद रखना।
2. स्त्री को चन्द्र चूड़ी (चांदी का चूड़ा उपर लाल रंग) पहनना।
3. चांदी के नौ चौरस टुकड़े नीम के वृक्ष में शुक्रवार के दिन छेद करके दबाये।
4. शुक्रवार को व्रत-कथा आरती करें।
5. कनकधारा यंत्र-कुबेर यंत्र+श्रीयंत्र सुनहरे फ्रेम में जड़वाकर नित्य पूजा-अर्चना करें तो शीघ्र भाग्योदय होगा।

मेषलग्न में शुक्र की स्थिति दशम स्थान में

मेषलग्न में शुक्र द्वितीयेश व सप्तमेश दो मारक स्थानों का स्वामी होने से परमपापी व अशुभ है। दशम स्थान में शुक्र मकर राशि का होगा। यहां केन्द्रवर्ती शुक्र का शुभफल कहा गया है।

एक शुक्रो जनन समये लाभसंस्थे च केन्द्रे,
जातौ वै जन्मराशि यदि सहजगते प्राप्यते वा त्रिकोणे
विद्या विज्ञानयुक्तो भवति, नरपति विश्वविख्यात कीर्तिः
दानी मानी च शूरो, हयगज सहितैः सद्गुणै सेव्यमानः॥

–मानसागरी श्लोक 2/242



ऐसा जातक बुरे कामों से दूर रहने वाला, अच्छी जमीन-जायदाद का स्वामी, विद्यावान, कीर्तिवान, इंसाफ को तौलने वाला, रथ-वाहन से युक्त सुखी व्यक्ति होता है। जातक ट्रांसपोर्ट, फोटोग्राफी, संगीत, शृंगार व अभिनय में रुचि रखता है।

निशानी–शनि उत्तम तो धर्म मूर्ति (पुरुष या स्त्री)

अनुभव–'भोज संहिता' के अनुसार सप्तमेश यदि दशम भाव में हो तो जातक विदेश में कमाता है। ऐसा जातक डॉक्टर, रंग-रसायन, सौन्दर्य प्रसाधन जैसे कार्यों में रुचि लेगा। माता का सुख अच्छा।

दशा–शुक्र की दशा राज्यलाभ देगी। शुभ जाएगी। धन की प्राप्ति सम्भव है। पत्नी पक्ष, ससुराल से लाभ सम्भव है।

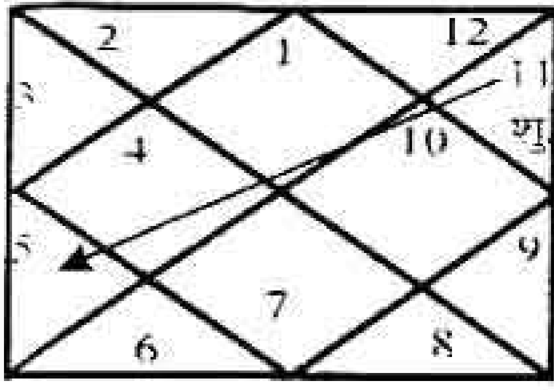
शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ सूर्य जातक को उत्तम विद्या एवं उत्तम सन्तति का लाभ दिलाएगा।
2. **शुक्र+चन्द्र**–शुक्र के साथ सुखेश चन्द्रमा, जातक को माता का सुख एवं भौतिक सम्पन्नता एवं सुख देगा।
3. **शुक्र+मंगल**–यदि यहां मंगल हो तो रुचक योग के कारण जातक निश्चय ही राजा, सांसद एवं मंत्री होता हैं। भृगुसूत्र के अनुसार '**बहुप्रतापवान**' होता है।
4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ पराक्रमेश बुध जातक को पराक्रमी बनाएगा। ऐसे जातक को स्त्री-मित्रों से लाभ होगा।
5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ गुरु जातक को भाग्यशाली बनाएगा। गुरु यहां नीच का होगा। ऐसा जातक विद्या प्रेमी होगा। बिना मांगे सलाह देगा।
6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ शनि यहां '**शश योग**' बनाएगा। ऐसा जातक राजा के समान पराक्रमी एवं वैभव सम्पन्न होगा।
7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु राज्यसुख में बाधक है। सरकारी अधिकारियों के द्वारा ध ोखा होगा।
8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु भी प्रतिकूलता सम्पन्न है। राजदण्ड का भय रहेगा।
9. यदि यहां गुरु, बुध, चन्द्र हो तो जातक के अनेक वाहन होते है। माता का सुख उत्तम होगा।
10. यदि यहां गुरु+मंगल+शुक्र+शनि की युति हो तो जातक (राजा) मिनिस्टर होगा। वह लालबत्ती की गाड़ी का हकदार होगा।

दसवें भाव में शुक्र का उपचार–

1. कपिला गाय या चांदी की गाय ब्राह्मण को भेंट करें।
2. शराब, मांस-मछली से परहेज रखें।
3. शुक्रवार को व्रत-कथा आरती करें।
4. शुक्रवार के दिन सवा किलो चावल व शक्कर दक्षिणा सहित ब्राह्मण को दें।

मेषलग्न में शुक्र की स्थिति एकादश स्थान में



मेषलग्न में शुक्र द्वितीयेश व सप्तमेश दो मारक स्थानों का स्वामी होने से परमपापी व अशुभ है। एकादश स्थान में शुक्र कुम्भ राशि का होगा। भृगुसूत्र के अनुसार–**विद्वान बहुधनवान भूमिलाभवान दयावान शुभयुते अनेक वाहनयोगः।** ऐसा जातक विद्वान होती है, बहुत धन सम्पत्ति वाला होता है। स्थाई सम्पत्ति जमीन-जायदाद होता है। जातक सुन्दर स्त्री व सन्तान का स्वामी होगा। शुक्र यहां उच्चाभिलाषी होने से जातक अति महत्वाकांक्षी होगा।

अनुभव–'भोजसंहिता' के अनुसार सप्तमेश यदि लाभ स्थान में हो तो जातक की अनेक पत्नियां होती हैं। यदि यहां शनि धनस्थान में हो तो ऐसे जातक की पत्नियां जातक को कमाकर भी देती हैं।

निशानी–सुन्दर स्त्री, पुरुष माया के सम्बन्ध में घूमता लट्टू। जातक ज्योतिष-तंत्र एवं रहस्यमय गुप्त विद्याओं का जानकार होगा। जातक की कन्या सन्तति अधिक होगी।

दशा–शुक्र की दशा अच्छी जाएगी। विवाह के बाद उन्नति होगी। शुक्र की दशा में व्यापार-व्यवसाय में बढ़ोतरी होगी।

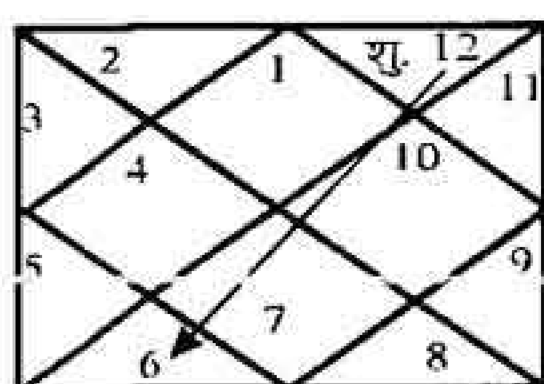
शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ पंचमेश सूर्य जातक को पुत्र सन्तान का सुख अवश्य मिलेगा।
2. **शुक्र+चन्द्र**–शुक्र के साथ सुखेश चन्द्रमा जातक को माता का सुख एवं उत्तम वाहन का सुख अवश्य देगा।
3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ लग्नेश मंगल जातक को परिश्रम का लाभ देगा। जातक उद्योगपति होगा।
4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ पराक्रमेश बुध जातक को महान् पराक्रमी बनाएगी। उच्च शिक्षा वे Degree दिलाएगा।
5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ यदि गुरु हो तो जातक अनेक वाहनों का स्वामी होकर भाग्यशाली होगा।
6. **शुक्र+शनि**–यदि शुक्र के साथ शनि हो तो जातक उद्योगपति होगा। पर खुद के भाई-बहनों से कम बनेगी।
7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु व्यापार एवं विद्या में बाधक है।
8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु व्यापार में वृद्धि के साथ-साथ रुकावटें लाएगा।
9. यदि यहां शुक्र+शनि+सूर्य+गुरु हो तो जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा। जातक के पास सुन्दर कुबेर तुल्य सम्पत्ति होगी।

एकादश भाव में शुक्र का उपचार–

1. सरसों का तैल दान करने से लाभ होगा।
2. चांदी का गिलास में दूध पीये। दूध की वस्तुओं का अधिक सेवन करें।
3. शुक्रवार को व्रत-कथा आरती करें।
4. कनकधारा+श्रीयंत्र कुबेर यंत्र को सुनहरी फेम में जड़वाकर नित्य पूजा अर्चना करें तो व्यापार में लाभ होगा।
5. किसी की जमानत न दें, वरना डूब जाएगी।

मेषलग्न में शुक्र की स्थिति द्वादश स्थान में



मेषलग्न में शुक्र द्वितीयेश व सप्तमेश दो मारक स्थानों का स्वामी होने से परमपापी व अशुभ है। द्वादश स्थान में शुक्र 'मीन राशि' में होगा। द्वादश स्थान में शुक्र उच्च का होगा। द्वादश शुक्र एक प्रकार से राजयोग कहा गया है। जातक धनवान-सम्पन्न, सुखी एवं खर्चीले स्वभाव का होता है। जातक की स्त्री सतवन्ती, सुखवन्ती होती है। जातक संगीत प्रेमी, यात्रा प्रेमी व अभिनय का प्रेमी होता है।

अनुभव–द्वादश स्थान में शुक्र 'द्वादश शुक्रयोग' बनाता है। ऐसे जातक की स्त्री धन-ऐश्वर्य प्रदान करने वाली होती है। जातक दीर्घायु प्राप्त करता है। जातक को शयन सुख श्रेष्ठ मिलता है। जातक परदेश में अधिक कमाएगा। जातक के कई स्त्रियों से संबंध रहेंगे।

निशानी–भवसागर से पार करने वाली **'कामधेनु गाय'** के समान, दीन-दुखियों की मदद करने वाला होगा। जातक धनसंग्रह में विश्वास रखेगा।

दशा–शुक्र की दशा शुभफल देगी। शुक्र की दशा में जातक का अनेक स्त्रियों से सम्बन्ध होगा।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ चन्द्रमा **'सुखहीन योग'** बनाता है। जातक को माता का सुख कमजोर मिलेगा। जातक को सामाजिक बंधन का परहेज नहीं रहेगा। अपने से बड़ी उम्र की स्त्रियों से गुप्त संबंध बनाएगा।
2. **शुक्र+चन्द्र**–शुक्र के साथ चन्द्रमा **'सुखहीन योग'** बनाता है। जातक को माता का सुख कमजोर मिलेगा। जातक को सामाजिक बंधन का परहेज नहीं रहेगा। अपने से बड़ी उम्र की स्त्रियों से गुप्त संबंध बनाएगा।
3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ मंगल **'लग्नभंगयोग'** एवं **'विपरीत राजयोग'** दोनों बनाएगा। जातक को बहुत परिश्रम करना पड़ेगा पर अन्तिम सफलता मिलेगी। जातक धनवान होगा। जातक को अपमान का भय बना रहेगा।

4. **शुक्र+बुध**–यदि यहां शुक्र के साथ बुध हो तो **'नीचभंग राजयोग'** बनेगा। बुध का नीचत्व भंग हो जायेगा। जातक महान पराक्रमी होगा। वाचाल होगा एवं राजनीति में उसका वर्चस्व होगा।
5. **शुक्र+गुरु**–यदि यहां गुरु हो तो **'किम्बहुना योग'** बनेगा। जातक भाग्यशाली होगा। एक्सपोर्ट-इम्पोर्ट के कार्य से एवं विदेशों से धन कमाएगा। बड़ी-बड़ी तीर्थ यात्राएं करेगा। धार्मिक कार्य एवं परोपकार के कार्य में रुपया खर्च होगा।
6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ शनि **'राज्यभंग योग'** एवं **'लाभभंग योग'** बनाएगा। जातक को व्यापार-व्यवसाय में अचानक घाटा होगा। जातक को अपमान का भय बना रहेगा।
7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु जातक को बाहरी यात्रा कराएगा। विदेश में जातक खूब धन कमाएगा। विदेशी स्त्री से लाभ होगा।
8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु विदेश यात्रा से तीर्थ-यात्रा से लाभ दिलाएगा। यात्रा से धन व यश मिलेगा।
9. यदि यहां शुक्र+गुरु+चन्द्र+बुध की युति हो तो जातक राजातुल्य ऐश्वर्य-वैभव को भोगेगा एवं महान पराक्रमी परोपकारी व दयालु होगा।

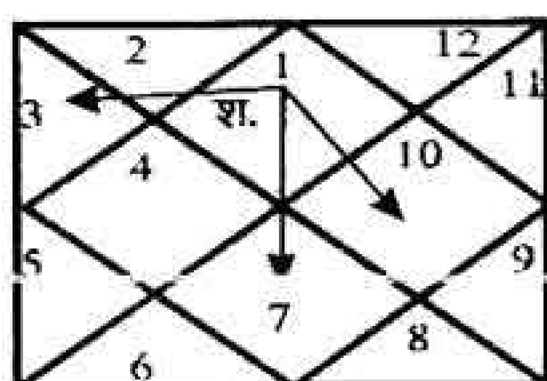
द्वादश भाव में शुक्र का उपचार–

1. मंदिर में गाय के घी का दीया जलावें।
2. पत्नी के हाथों शुक्र सम्बंधी वस्तु का दान करावें।
3. यदि जातक की पत्नी शुक्रवार के दिन नीले रंग का पुष्प जंगल की जमीन में गाड़े पलटेंगे।
4. चांदी की गाय बछड़े वाली ब्राह्मण को दान दें।
5. शुक्रवार का व्रत-कथा आरती करें।
6. शुक्र शान्ति का प्रयोग करें।
7. 'शुक्र कवच' का नित्य पाठ करें।
8. शुक्र की वस्तुओं का दान करें।
9. शुक्रवार के दिन 'अग्निकोण' की ओर सामान करें।
10. जीवन साथी बीमार हो तो उसके वजन के बराबर लाल ज्वार धर्म स्थान में भेंट करें।
11. काली गाय की सेवा करें।

❑❑❑

मेषलग्न में शनि की स्थिति

मेषलग्न में शनि की स्थिति प्रथम स्थान में



मेषलग्न में शनि दशमेश व एकादशेश होने से एवं लग्नेश मंगल का शत्रु होने से अशुभ फलदायक है। शनि प्रथम स्थान में मेष राशि का होने से नीच का होगा। जातक त्रिलोकी का स्वामी एवं प्रपंची होगा। जिद्दी व हठी होगा। जातक नौकरी करने में रुचि रखेगा। लग्न पर शुभग्रहों की दृष्टि न हो तो जातक रोगी होगा।

दृष्टि–शनि की दृष्टि पराक्रम स्थान, सप्तम भाव एवं दशम भाव पर होगी। पराक्रम भाव में शनि की मित्र राशि है, सप्तम भाव उसकी उच्च राशि एवं दशम भाव में शनि की खुद की राशि है। फलत: शनि की ये दृष्टियां जातक का पराक्रम बढ़ाएंगी, विवाह सुख में वृद्धि करेगी तथ राज्यपक्ष में सम्मान दिलाएगी।

निशानी–बचपन, जवानी, बुढ़ापा उत्तम।

दिशा–शनि की दशा मिश्रित फल देगी।

अनुभव–'भोजसंहिता के अनुसार जातक का भाई-बहनों से मतभेद रहेगा। पत्नी को शक की निगाह से देखेगा।

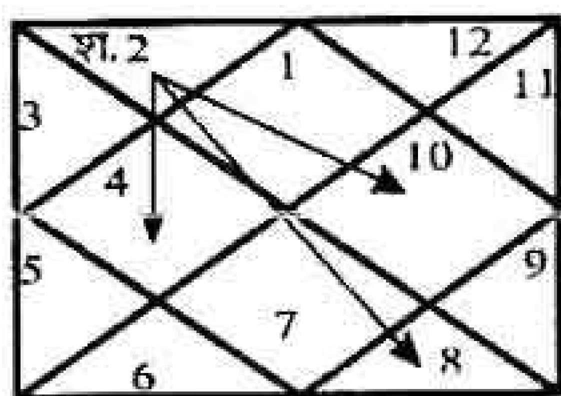
शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–शनि के साथ सूर्य **'नीचभंगराज. योग'** एवं **'रविकृतराज योग'** बनाएगा। ऐसा जातक राजा के समान पराक्रमी एवं तेजस्वी होगा।
2. **शनि+चंद्र**–शनि के साथ सुखेश चंद्रमा लग्न में जातक के सुखों में वृद्धि करेगा। माता का सुख, वाहन का सुख मिलेगा।
3. **शनि+मंगल**–यदि शनि के साथ मंगल हो तो **'नीचभंग राजयोग'** एवं **'रुचक योग'** बनेगा। जातक महान पराक्रमी होगा। जिद्दी व हठी होगा। बलपूर्वक वस्तुओं को प्राप्त करने में रुचि रखेगा। जातक के पास अनेक वाहन होंगे।

   यदि यहां शनि+सूर्य+मंगल+चंद्र की युति हो तो जातक (राजा) मिनिस्टर होगा। लालबत्ती की गाड़ी का स्वामी होगा।

4. **शनि+बुध**—शनि के तथा तृतीयेश, षष्टेश बुध लग्न में होने से जातक महान् पराक्रमी होगा।
5. **शनि+गुरु**—शनि के साथ भाग्येश, खर्चेश, गुरु लग्न में होने से जातक परम भाग्यशाली होगा।
6. **शनि+शुक्र**—शनि के साथ धनेश, सप्तमेश शुक्र होने से जातक की पत्नी सुन्दर होगी। विवाह के बाद जातक का भाग्योदय होगा।
7. **शनि+राहु**—शनि के राहु जातक को महान जिद्दी बनाएगा।
8. **शनि+केतु**—शनि के साथ केतु जातक को लड़ाकू बनाएगा।

मेषलग्न में शनि की स्थिति द्वितीय स्थान में



मेषलग्न में शनि दशमेश व एकादशेश है। लग्नेश मंगल का शत्रु है होने में अशुभ फलदायक है। शनि द्वितीय स्थान में वृषराशि का होगा। जातक साहसी व धनवान होगा। जातक शत्रुहन्ता होता है। जातक अच्छी किस्मत वाला होता है। परन्तु भाषा कठोर होगी।

दृष्टि—शनि की दृष्टि सुख स्थान, सप्तम स्थान एवं दशम स्थान पर पड़ेगी। शनि की यह दृष्टि सुख में वृद्धि, दाम्पत्य जीवन में सुख एवं राज्य सुख-सम्मान में वृद्धिदायक है।

अनुभव—'भोज संहिता' के अनुसार लाभेश यदि धनस्थान में हो तो जातक लेन-देन, गिरवी के कार्य में धन कमाएगा। जातक के दांत जल्दी खराब होंगे। मित्र कम होंगे।

निशानी—गुरु शरण। मां बीमार रहे। मकान पुराना हो।

दशा—शनि की दशा शुभफलदायक होगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

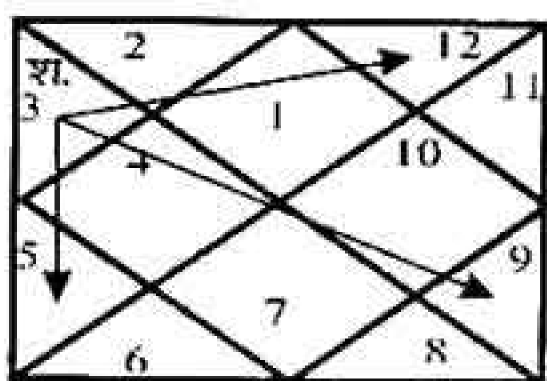
1. **शनि+सूर्य**—यहां पंचमेश व राज्येश भेश की युति धनस्थान में होने से जातक विद्या के द्वारा उच्च पद-प्रतिष्ठा प्राप्त करेगा।
2. **शनि+चंद्र**—यदि शनि के साथ चन्द्रमा हो तो **'विषयोग'** बनेगा। जातक की मां बीमार रहेगी। फिर भी जातक धनवान होगा।
3. **शनि+मंगल**—लग्नेश व राज्येश लाभेश की युति धन स्थान में जातक स्वपराक्रम से यथेष्ट धन कमाएगा। आयु दीर्घ होगी।
4. **शनि+बुध**—पराक्रमेश+षष्टेश की युति लाभेश+राज्येश के साथ धनस्थान में जातक को गुप्त शत्रुओं से परेशानी करेगी। राजकार्य में बाधा रहेगी।

5. **शनि+गुरु**–भाग्येश+खर्चेश की युति लाभेश+राज्येश के साथ धनस्थान में जातक को अचानक धन दिलाता है। जातक किस्मत का धनी होगा।
6. **शनि+शुक्र**–यदि शनि के साथ शुक्र हो तो **'राज्यमूल धनयोग'** बनेगा। जातक राज्य सरकार से आर्थिक लाभ की प्राप्ति करेगा।
7. **शनि+राहु**–शनि राहु के युति धन की हानि कराएगी। जातक की वाणी लड़ाकू होगी।
8. **शनि+केतु**–शनि केतु की युति भी धन की बरकत में बाधक है।

द्वितीय भाव में शनि का उपचार–

1. बड़ के वृक्ष को मीठा दूध डाल कर गीली मिट्‌ठी का तिलक लगाना।
2. जातक कभी भी माथे व सिर पर काला तेल न लगाएं दूध–दही का इस्तेमाल लाभकर होगा। 43 दिन तक नंगे पांव मंदिर में जाकर क्षमा-याचना करना लाभकारी होता है। सांप को दूध पिलायें।
3. नवरत्न जडित 'श्रीयंत्र' का लॉकेट पहनने से आर्थिक विषमताएं दूर होगी।

मेषलग्न में शनि की स्थिति तृतीय स्थान में



मेषलग्न में शनि दशमेश व एकादशेश है तथा लग्नेश मंगल का शत्रु है। तृतीय स्थान में शनि मिथुन राशि के मित्र के घर में होगा। ऐसा जातक दूसरों का काम बिगाड़ने वाला, शत्रुओं पर मौत की तरह छाने वाला तेज तर्रार, व्यक्ति होता है। भृगुसूत्र के अनुसार शनि की यह स्थिति–**'भ्रातृ हानि कारक:'** भाई के लिए हानिकारक है। खासकर कनिष्ठ भाई के लिए। ऐसा जातक राज्याधिकारी होता है। यदि तृतीयस्थान में पापग्रह हो तो इसके विपरीत फल मिलेंगे।

अनुभव–भोज संहिता के अनुसार लाभेश यदि तृतीय स्थान में हो तो जातक ऐजेन्सी कार्य, संगीत या वीडियो फोटोग्राफी से धन कमाएगा।

निशानी–अगर शनि अशुभ हुआ तो दो गुणा मन्दा। प्रथम सन्तान का नाश हो।

दृष्टि–शनि की दृष्टि पंचम स्थान, भाग्य स्थान एवं व्यय स्थान पर है। शनि मित्र राशि में है फलत: सन्तान प्राप्ति, भाग्यवृद्धि एवं धार्मिक कार्य परोपकार के कार्यों में सहायक है।

दशा–शनि की दशा शुभफल देगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

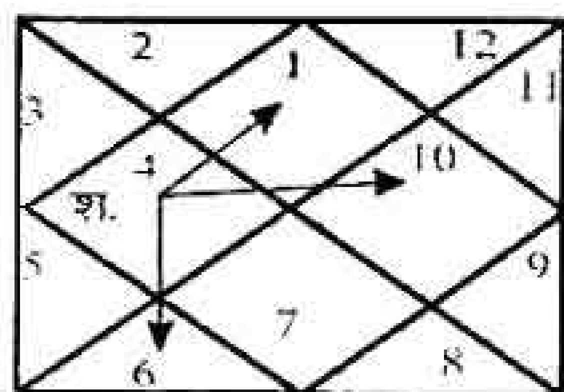
1. **शनि+सूर्य**–पंचमेश सूर्य की राज्यंकश लाभेश शनि के साथ तृतीय स्थान में युति विद्या द्वारा भाग्योदय का संकेत देती है। जातक को सही भाग्योदय प्रथम संतति के बाद या पिता की मृत्यु के पश्चात्‌ होगा।

2. **शनि+चंद्र**–सुखेश चंद्रमा, दसमेश के साथ तृतीय स्थान में होने से मित्रों से लाभ रहेगा। खासकर स्त्री मित्र से ज्यादा लाभ है।
3. **शनि+मंगल**–लग्नेश+अष्टमेश मंगल के साथ राज्येश होने से जातक को राजकीय कार्य, ठेकेदारी वगैरा से लाभ होगा।
4. **शनि+बुध**–अपने स्थान में तृतीयेश स्वगृही होकर राज्येश+लाभेश शनि की युति करने से जातक महान् पराक्रमी एवं कीर्तिवान होगा।
5. **शनि+गुरु**–भाग्येश+खर्चेश गुरु तृतीय स्थान में राज्येश शनि के साथ होने से मित्रों द्वारा भाग्योदय, बड़े भाई की सहायता, वृद्ध सेवक की सहायता से जातक आगे बढ़ेगा।
6. **शनि+शुक्र**–सप्तमेश व धनेश शुक्र के साथ राज्येश+लाभेश शनि की युति तृतीय स्थान में विवाह के बाद पराक्रम को बढ़ाती है।
7. **शनि+राहु**–तृतीय स्थान में शनि के साथ राहु भाइयों एवं मित्रों से लाभ की वनस्पति हानि होगी।
8. **शनि+केतु**–तृतीय स्थान में शनि के साथ केतु भाइयों एवं मित्रों में मनमुटाव कराएगा।

तृतीय भाव में शनि का उपचार–

1. दूध/दही का तिलक करना।
2. घर की दहलीज पर लोहे की कीलें गाड़े।
3. मकान में अंधेरी कोठरी कायम करके शनि की चीजें स्थापित करें। इससे धन में वृद्धि होगी।
4. सफेद–काला कुत्ता पालन मकान–निर्माण का योग बनाता है।
5. केतु 3, 10 में हो तो भूरा कुत्ता ज्यादा उत्तम होगा।
6. शनि शांति का वैदिक प्रयोग करें।

मेषलग्न में शनि की स्थिति चतुर्थ स्थान में



मेषलग्न में शनि राज्येश व एकादशेश होता है। शनि लग्नेश मंगल का शत्रु है। चतुर्थ स्थान में शनि कर्क राशि का होगा। जातक को माता के सुख में कमी होगी अथवा उसके दो माताएं होंगी। जातक को मकान–वाहन का पूर्ण सुख होगा। जातक का गृहस्थ जीवन सुखी होगा। जातक विदेशों में रहने वाला अथवा विदेशी व्यापार से लाभ कमाने वाला होता है।

दृष्टि–शनि की दृष्टि छठे स्थान, राज्य (दशम) स्थान एवं लग्न स्थान पर है। शनि की यह स्थिति शत्रु का नाश करने वाली, राज्य लाभ में सहायक तथा व्यक्तित्व बढ़ोतरी में फायदेमन्द है। पर जातक के हृदय में बड़ी वेदना होगी।

निशानी–पानी का सांप, मकान पुराना हो, मां बीमार रहे। वाहन भी पुराना हो।

अनुभव–'भोज संहिता' के अनुसार लाभेश चतुर्थ भाव में हो तो जातक माता या कृषिभूमि के माध्यम से धन कमाएगा। चेहरा आकर्षक नहीं होगा।

दशा–शनि की दशा शुभ फल देगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

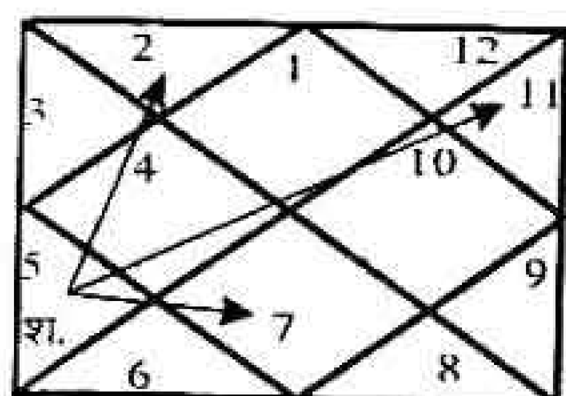
1. **शनि+सूर्य**–पंचमेश सूर्य शनि के साथ जातक को उच्च विद्या का लाभ देगा। परन्तु किस्मत पिता की मृत्यु के बाद चमकेगी।
2. **शनि+चंद्र**–सुखेश चंद्रमा स्वगृही होकर शनि के साथ **'यामिनीनाथ योग'** एवं **'विषयोग'** बनाएगा। जातक उत्तम वाहन व भवन का स्वामी होगा।
3. **शनि+मंगल**–यहां शनि के साथ लग्नेश मंगल केन्द्रवर्ती होने से जातक शक्तिशाली राजनेता होगा। रोजी-रोजगार का पूर्ण सुख होगा।
4. **शनि+बुध**–पराक्रमेश व षष्टेश बुध शनि के साथ चतुर्थ में हो तो माता बीमार रहेगी। वाहन एवं मकान पर अनापेक्षित रुपया खर्च होगा।
5. **शनि+गुरु**–यदि यहां शनि के गुरु हो तो **'हंस योग'**, **'कुलदीपक योग'**, **'केसरी योग'** की सृष्टि करेगा। जातक निश्चय ही राज्य सरकार में, केन्द्र सरकार में प्रभावशाली पद पर होगा। उसे राजनीति में लाभ होगा।
6. **शनि+शुक्र**–धनेश+सप्तमेश शुक्र चतुर्थ स्थान में शनि के साथ होने पर ससुराल का धन मिलेगा। व्यापार तेज होगा।
7. **शनि+राहु**–यहां शनि के साथ राहु होने से माता की मृत्यु बचपन में होगी।
8. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु माता को असाध्य बीमारी देगा।
9. यदि यहां शनि के साथ गुरु+मंगल+चन्द्र हो तो जातक (राजा) मिनिस्टर होगा। लालबत्ती की गाड़ी का स्वामी होगा।

चतुर्थ भाव में शनि का उपचार–

1. घर में पूर्व-दक्षिण का दरवाजा रखना।
2. कौएं व सांप को चंद्र की चीजें चावल-दूध खिलायें।
3. कुएं में चावल-दूध गिराना चंद्र के प्रभाव को उच्च करेगा।
4. तेल, उड़द व काले कपड़े का दान लाभकर होगा।
5. चौथे स्थान में यदि पापी शनि हो तो जातक को रात्रि में दूध नहीं पीना चाहिए क्योंकि वह जहर बन जाएगा।
6. चौथे स्थान मे यदि शनि का फल अशुभ हो तो जातक काले सर्प को दूध पिलावे, भैंस को चारा व मजदूर वर्ग को खाना खिलावें।

7. आमदनी को बढ़ाने के लिए सोमवार को कुंए में दूध डाला करे।
8. शनि चालीसा एवं नवग्रह स्तोत्र पढ़े।

मेषलग्न में शनि की स्थिति पंचम स्थान में



मेषलग्न में शनि दशमेश एकादशेश होता है। यह लग्नेश मंगल का शत्रु होता है। पंचम स्थान में शनि सिंह राशि में होगा फलत: शत्रुक्षेत्री में होगा।

जातक न्यायप्रिय, धर्मात्मा होता है। ऐसा जातक बुजुर्गों वृद्धजनों की संगत करने वाला, गम्भीर प्रकृति होता है। भृगुसूत्र के अनुसार–पुत्रहीन:, अतिदरिद्री:, दुर्बत्त दत्तपुत्री' ऐसी जातक सन्तति गोद लेता है। विद्या में रुकावट आती है। विद्या में संघर्ष रहता है।

निशानी–बच्चे खाने वाला सांप/ सन्तति अल्प होगी।

दृष्टि–शनि की दृष्टि सप्तम भाव, लाभ भाव एवं धन भाव पर होगी। सप्तम भाव में शनि का उच्चराशि है, लाभ भाव में शनि की मूल त्रिकोण राशि है तथा धन स्थान में वृष राशि है फलत: पत्नी से खटपट परन्तु लाभ की स्थिति रहेगी। व्यापार में लाभ होगा धन की आवक रहेगी परन्तु बरकत नहीं होगी। बरकत के लिए शुक्र की स्थिति का अच्छा होना आवश्यक है।

अनुभव–भोज संहिता के अनुसार यदि लाभेश पंचम स्थान में हो तो जातक पुत्र के माध्यम से धन व यश कमाएगा। प्रेम विवाह होगा।

दशा–शनि की दशा मिश्रित फल देगी। उद्विग्नता देगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

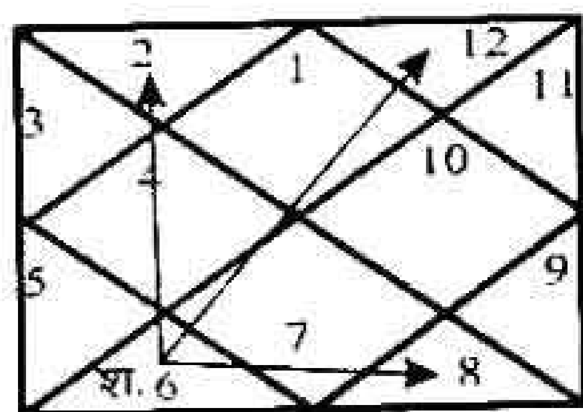
1. **शनि+सूर्य**–शनि के साथ सूर्य यहां **'रविकृत राजयोग'** बनाता है, ऐसा जातक मेधावी होता है। उसका भाग्योदय प्रथम पुत्र संतति के बाद होता है।
2. **शनि+चंद्र**–शनि के साथ चंद्रमा **'विष योग'** बनाएगा। जातक मानसिक तनाव में रहेगा। जातक की माता बीमार रहेगी।
3. **शनि+मंगल**–शनि के साथ मंगल विद्या में संघर्ष कराएगा। जातक की संतति बीमार रहेगी।
4. **शनि+बुध**–शनि के साथ बुध जातक को पराक्रमी बनाएगा। जातक के कन्या संतति अधिक होगी।
5. **शनि+गुरु**–शनि के साथ गुरु भाग्योदय में विलम्ब कराएगा।
6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ शुक्र व्यापार-व्यवसाय द्वारा उत्तम लाभ का संकेत देता है।
7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु पुत्र संतति में बाधक है।

8. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु गर्भपात कराता है।

पंचम भाव में शनि का उपचार–

1. हरा रंग निषेध।
2. शनि की शांति के लिए घर में सोना, तांबा या चांदी का निश्चित स्थान पर कायम रखे और उसे वहां से न हटाएं।
3. यदि दसवें में राहु हो तो चूल्हे में दूध डालकर आग बुझाएं, शांति मिलेगी।
4. यदि अशुभ शनि पांचवें में हो व दशम स्थान खाली हो, तो जातक के संतान नहीं होती।
5. यदि जातक 48 वर्ष की आयु में नया मकान खरीदता है तो खरीदते ही पुत्र होता है परंतु दीर्घायु नहीं होता।
6. इस अशुभ को नष्ट करने हेतु घर के पश्चिम दिशा की ओर गुड़, ताम्बा, शहद, भूरी वस्तु तथा लाल वस्तु चावल व शक्कर के बोरे रखें। संतान के जन्म पर मीठे की जगह नमक बांटना।
7. धर्म स्थान में बादाम चढ़ाकर आधे वापस लाकर घर में रखने से शनि का अनिष्ट फल बाकी नहीं रहेगा।
8. औलाद के जन्मदिन पर मीठे की जगह नमकीन चींजे बांटना मुबारिक होगा।
9. संतान सुख हेतु 'संतान गोपाल' का पाठ करें।
10. शनि अष्टोत्तर नामावली का संतानगोपाल के सम्पुट से हवन करें।

मेषलग्न में शनि की स्थिति षष्टम स्थान में



मेषलग्न में शनि दशमेश व एकादशेश होता है। यह लग्नेश मंगल का शत्रु है। षष्टम स्थान में शनि कन्या राशि का होगा। जातक कानून का ज्ञाता, जज, वकील एवं तर्कशास्त्र का ज्ञाता होकर न्यायप्रिय, सैद्धान्तिक व्यक्ति होगा। जातक अल्पज्ञाति एवं कम मित्रों वाला होगा। इसकी किस्मत का सितारा 32 वर्ष बाद चमकेगा। जातक की ज्योतिष आयुर्वेद, मंत्र-तंत्र व गूढ़ विद्याओं में रुचि होगी। लाभेश राज्यदेश शनि छठे जाने से क्रमश: **राज्यभंग योग** एवं **लाभभंग** योग के कारण राजदरबार व सरकार से धोखा होगा।

अनुभव–'भोज संहिता' के अनुसार लाभेश यदि छठे तो जातक को शत्रु व युद्ध मुकदमेबाजी में पैसा मिलता है।

निशानी–लेख की स्याही, एक गुणा मन्दा।

दृष्टि–शनि की दृष्टि अष्टम स्थान, खर्च स्थान एवं पराक्रम स्थान पर है। आयु के लिए यह स्थिति कष्टकारक है। खर्च की बाहुल्यता रहेगी। पराक्रम में कमी आएगी। मित्रों-परिजनों से धोखा होगा। हृदय या लीवर सम्बन्धी बीमारी सम्भव है।

दशा–शनि की दशा प्रतिकूल रहेगी। शनि दशा में परदेश गमन होगा।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

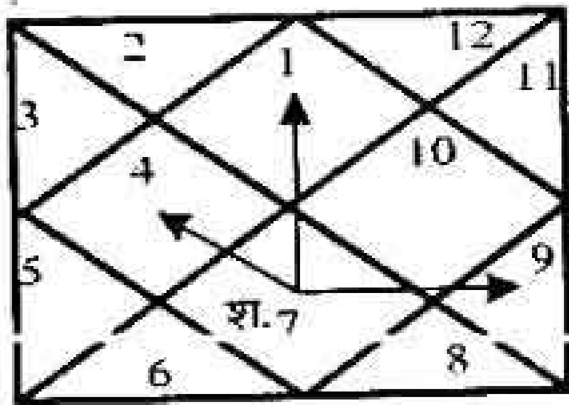
1. **शनि+सूर्य**-इस युति के कारण **संतानहीन योग, राज्यभंग योग, लाभभंग योग** बनता है। जातक का भाग्योदय पिता की मृत्यु के बाद होगा।
2. **शनि+चन्द्र**-शनि का साथ चन्द्रमा '**विषयोग**' बनाएगा। जातक की मां क्षय रोग से पीड़ित होगी।
3. **शनि+मंगल**-'**कुजयुते देशान्तर संचारी**' यदि शनि के साथ मंगल हो तो जातक देश-विदेश में घूमेगा।
4. **शनि+बुध**- पराक्रमेश+षष्टेश बुध शनि के साथ **हर्षनामक विपरीत राजयोग** बनाएगा। जातक धनवान होगा, ऐश्वर्यवान होगा।
5. **शनि+गुरु**-भाग्येश+खर्चेश गुरु छठे शनि के साथ होने से भाग्य में लगातार रुकावटें आएगी। जातक खर्चीले स्वभाव का होगा।
6. **शनि+ शुक्र**- सप्तेश+धनेश शुक्र शनि के साथ होने से धन की रुकावटें आती रहेगी। पत्नी से अनबन रहेगा। दूसरा विवाह होगा।
7. **शनि+राहु**- शनि के साथ राहु सरकारी नौकरी में बाधक है। जातक प्राईवेट नौकरी-व्यापार में कमाएगा।
8. **शनि+केतु**- शनि के साथ केतु राजकीय कार्य पद-पद पर बाधा देगा। मार्ग में भी रुकावटें आएगी।

षष्टम भाव में शनि का उपचार–

1. नारियल या बादाम बहते जल में प्रवाहित करें।
2. संतान के लिए काला कुत्ता पालें।
3. सांप को दूध पिलाने से संतान सुख बढ़ता है।
4. बीमारी के समय किसी बर्तन में तेल भरकर उसमें अपना चेहरा देखें और उस तेल को जमीन के अन्दर मिट्टी में दबाए। कारोबार के लिए बुध का उपाय हितकर होगा।
5. यदि छठें स्थान में शनि व बृहस्पति दोनों हो तो पानी वाले नारियल को नदी में बहाना चाहिए।
6. ऐसी स्थिति में जातक को 28 वर्ष से पहले विवाह नहीं करना चाहिए तथा 48 वर्ष की आयु के पहले मकान नहीं बनाना चाहिए।
7. संतान बाधा होने पर काले सर्प को दूध पिलाव व दसकी सेवा करें।
8. पितृदोष की शान्ति कराए।
9. शनि छठे में हो तथा कुण्डली दूसरा भाव खाली हो तथा जातक को शनि का धन्धा करना चाहे तो मिट्टी के घड़े में सरसों का तेल भर तालाब या नदी के तले गाढ़ना चाहिए।

10. ध्यान रहे कि ऊपर पानी अवश्य रहे। तत्पश्चात् कृष्ण पक्ष की मध्य रात्रि को कार्य प्रारम्भ करें, जातक अथाह सम्पत्ति कमाएगा।
11. संतान के जन्म पर मीठे की जगह नमक बांटना शुरू रहेगा।
12. जिसकी कुंडली के छठे घर में शनि होगा, अगर वो अपने जरूरी काम रात में निपटाएगा तो जरूर कामयाबी पाएगा।
13. शनिकवच, महाकाल शनिमृत्युंजय स्तोत्र का नित्य पाठ करें।

मेषलग्न में शनि की स्थिति सप्तम स्थान में



मेषलग्न में शनि दशमेश व एकादशेश होता है। यह लग्नेश मंगल का शत्रु है। अशुभ फल देने वाला है। सप्तम स्थान में शनि तुला राशि में उच्च का होगा। जातक अत्यन्त धनी होगा। भृगुसूत्र के अनुसार–'उच्चस्वक्षेत्रे अनेक स्त्री सम्भोगी' जातक का अनेक स्त्रियों से शारीरिक सम्बन्ध रहेगा। उसका चरित्र संदिग्ध होगा। ऐसा जातक राज्याधिकारी होगा एवं उसका चरित्र संदिग्ध होगा। ऐसा जातक राज्यधिकारी होगा एवं यात्रा (ट्रांसपोर्ट लाईन) से धन कमाएगा। जातक व्यवहारिक होगा। ख्याली बातों में विश्वास न करके, सुनने की जगह देखने से बात का विश्वास करेगा। **'शश योग'** के कारण जातक जीवन में सफल व्यक्ति होगा।

निशानी–कलम विधाता, रिजक। पति-पत्नी के बीच उम्र का अन्तराल ज्यादा होगा। विद्या में विघ्न होगा।

दृष्टि–शनि की दृष्टि भाग्य भवन, लग्न स्थान एवं चतुर्थ भाव पर होगी। शनि की यह दृष्टि भाग्य के द्वार खोलेगी। व्यक्तित्व का विकास होगा तथा सुख में वृद्धि, वाहन-भवन की खरीददारी कराएगी।

अनुभव–भोज संहिता के अनुसार लाभेश यदि सातवें स्थान पर हो तो जातक को स्त्रियों से लाभ होता है। विदेश यात्रा से लाभ होता है। आयात-निर्यात के कार्यों से लाभ होता है। जातक अन्ध श्रद्धालु होगा तथा सुख में वृद्धि, वाहन-भवन की खरीददारी कराएगी।

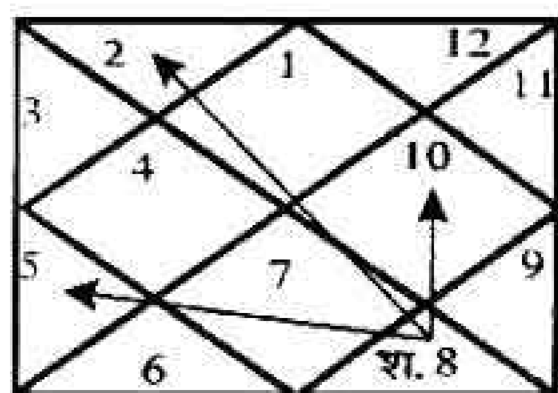
दशा–शनि की दशा अच्छा फल देगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य–नीचभंग राजयोग**–शनि के साथ सूर्य होने में नीचभंग राजयोग के कारण सूर्य का नीचत्व समाप्त होगा। जातक को उच्च शैक्षणिक डिग्री मिलेगी। उत्तम सन्तति होगी। पुत्र, कन्या दोनों का संयोग होगा।
2. **शनि+चन्द्र**–सुखेश चन्द्रमा, सप्तमस्थ शनि के साथ होने पर जातक की पत्नी मुन्दर एवं वाहन तथा भवन सुन्दर होगा।

3. **शनि+मंगल–कुजयुते शिश्न चुम्बनपर**–भृगुसूत्र के अनुसार शनि के साथ मंगल हो तो ऐसी स्त्री कामक्रीड़ा में सम्भोग के पूर्व पुरुष का शिश्न चुम्बन करती है। लग्नाधिपति योग के कारण जातक को प्रत्येक कार्य में सफलता मिलेगी एवं वह शत्रुनाश करने में समर्थ होगा।
4. **शनि+बुध**–तृतीयेश+षष्टेश बुध शनि के साथ होने पर जातक महान पराक्रमी होगा पर गुप्त शुभ बहुत होगे।
5. यदि यहां गुरु चौथे या नवमें स्थान पर हो तो यह जबरदस्त राजयोग होगा। व्यक्ति मिनिस्टर (राजा) होगा।
7. **शनि+शुक्र–किम्बहुना योग**–यदि यहां शनि के साथ शुक्र स्वगृही हो तो इससे अधिक और क्या उत्तम बात होगी। राज्यमूलधन योग एवं लाभमूलधन योग के कारण, जातक को राज्य सरकार एवं केन्द्र सरकार से सम्मान-सहायता मिलेगी। जातक राजनीति में सफल होगा। भृगुसूत्र के अनुसार 'शुक्रयुते भग चुम्बनपर' ऐसा जातक कामक्रीड़ा में स्त्री का भग चुम्बन पशुओं की तरह करता है।
8. शनि+शुक्र+मंगल+गुरु की युति जातक को (राजा) मिनिस्टर बनाएगी। जातक लालबत्ती की गाड़ी का स्वामी होगा।

मेषलग्न में शनि की स्थिति अष्टम स्थान में



मेषलग्न में शनि दशमेश एवं एकादशेश होने से पापी है। यह लग्नेश मंगल का शत्रु है। अष्टम् स्थान में शनि वृश्चिक राशि का होगा तथा राज्यभंग योग एवं **'लाभभंग योग'** की सृष्टि करेगा।

ऐसे जातक को शनि के समान व्यापार व नौकरी में लाभ होगा। जातक नित नए विषयों की खोज करने वाला, अनुसंधान कर्त्ता, सत्यखोजी होता है। जातक परदेश में रहना एवं एकांकी जीवन जीना पसन्द करेगा। साझेदारी के व्यापार में रुचि रखेगा।

अनुभव–'भोज संहिता' के अनुसार लभेश यदि आठवें हो तो धन का नाश निश्चित है। उपाय अनिवार्य है।

निशानी–हैडक्वाटर। जातक की छाती पर बाल हो तो वह अमीर होगा। आयु लम्बी होगी पर अचानक ऑपरेशन सम्भव है।

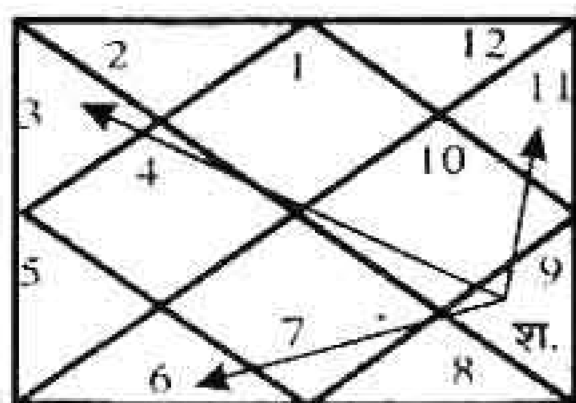
दृष्टि–अष्टभाव शनि की दृष्टि राज्य स्थान, धन स्थान एवं पंचम भाव पर होगी। दशम भाव शनि का ही घर है फलत: राज्य (सरकार) से लाभ, धन की हानि या अपव्यय, सन्तान, विद्या की भी हानि कराएगा।

दशा–शनि की दशा अशुभ फल देगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+चन्द्रमा**–शनि चन्द्रमा की युति '**विषयोग**' बनाएगी। जातक की मां को क्षय रोग होगा। जातक स्वयं भी बीमार होगा।
2. **शनि+सूर्य**–पंचमेश सूर्य अष्टम स्थान में शनि के साथ होने में पुत्र हानि का संकेत है। विद्या में भी बाधा आएगी क्योंकि '**विद्याभंग योग**' बनता है।
3. **शनि+मंगल**–यदि शनि के साथ मंगल हो तो जातक को लम्बी बीमारी के बाद मौत मिलेगी। महामृत्युंजय मन्त्र धारण करना शुभद रहेगा। गुरुमुख से महामृत्युंजय मन्त्र ग्रहण करके, नित्य जाप करें।
4. शनि+मंगल+राहु+सूर्य की युति यहां जातक को पत्नी व सन्तान हीन बनाएगी। जीवन कांटों की शय्या के समान पीड़ादायक होगा।
5. **शनि+बुध**–पराक्रेश+षष्ठेश बुध अष्टम भाव में शनि के साथ होने से **पराक्रम भंगयोग** बनता है परन्तु हर्षनामक **विपरीत राजयोग** के कारण जातक धनवान होगा।
6. **शनि+गुरु**–भाग्येश+खर्चेश गुरु अष्टम स्थान में शनि के साथ होने में **भाग्यभंग योग एवं विपरीत राजयोग** दोनों ही योग बनते है। ऐसा जातक धनवान एवं ऐश्वर्यवान् होगा।
7. **शनि+शुक्र**–धनेश+सप्तमेश शुक्र अष्टम स्थान में शनि के साथ '**धनहीन योग**' एवं '**विवाहभंग योग**' बनाता है। जातक आर्थिक संकट के दौर में गुजरेगा तथा एक बार शादी टूटेगी।
8. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु यहां राजयोगभंग करता है। सरकार में भय रहेगा।
9. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु राजदण्ड दिलाने में सहायक है।

मेषलग्न में शनि की स्थिति नवम स्थान में



मेषलग्न में शनि राज्येश एवं एकादशमेश होकर पापी है। यह लग्नेश मंगल का शत्रु है। नवम स्थान में शनि धनु राशि में होगा। फलतः ऐसा जातक हठी व क्रोधी होगा। जातक किस्मत वाला होगा। वैज्ञानिक मस्तिष्क व दिल-दिमाग वाला होगा। ऐसा जातक ज्योतिष मन्त्र-तन्त्र, योग, आयुर्वेद इत्यादि गूढ़ विद्याओं में रुचि रखने वाला होता है। जातक दूरदर्शी एवं चिन्तक होता है।

भृगुसूत्र के अनुसार– '**पतित जीर्णोद्धारकः एकोन चत्वारिशद्वर्षे तडाकगोपुर निर्माणकर्त्ताः**' ऐसा जातक पतित, दीन:दुखियों का उद्धार करने वाला एवं 41वें वर्ष में तालाब, प्याऊ, मन्दिर एवं सामाजिक स्थलों का निर्माण कराता है।

निशानी–कलम विधाता, मकान मर्दा। पिता की सम्पत्ति में बाधा। अपना मकान खुद बनाएगा।

दृष्टि–शनि की दृष्टि लाभ स्थान पर है जो उसके स्वयं का घर है। पराक्रम स्थान एवं

षष्टम स्थान पर शनि की पूर्ण दृष्टि है। शनि व्यापार-व्यवसाय में लाभ कराएगा परन्तु पराक्रम में हानि कराएगा। शत्रु व रोग से नुकसान करा सकता है। इसका बचाव जरूरी है।

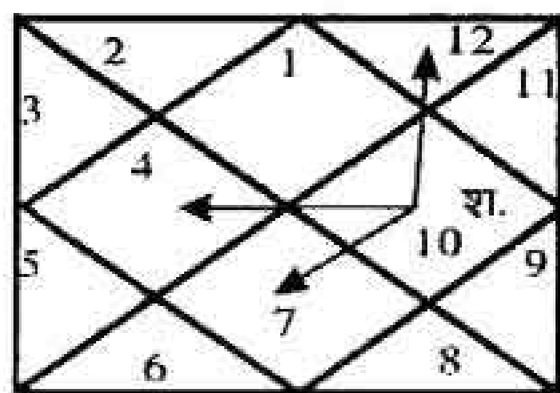
अनुभव–'भोज संहिता के अनुसार लाभेश यदि भाग्य स्थान में है तो जातक पिता से, धार्मिक संस्था के माध्यम से रुपया कमाएगा।

दशा–शनि की दशा भाग्योदय भी कराएगी। नुकसान भी देगी। जीवन में मिला-जुला फल मिलेगा।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–शनि के साथ सूर्य जातक का भाग्योदय सरकारी क्षेत्र में कराएगा। जातक को राज-सरकार में सम्मान मिलेगा।
2. **शनि+चन्द्र**–शनि के साथ चन्द्रमा जातक को मकान का सुख देगा। माता का सुख देगा परन्तु मां बीमार रहेगी। मकान भी मरम्मत मांगेगा।
3. **शनि+मंगल**–शनि के साथ मंगल जातक को बड़ी भूमि का स्वामी बनाएगा। परन्तु भूमि में विवाद रहेगा।
4. **शनि+बुध**–शनि के साथ बुध जातक को महान पराक्रमी बनाएगा।
5. **शनि+गुरु**–यदि शनि के साथ गुरु हो तो जातक धर्मबुद्धि प्रधान होगा। माता-पिता का भक्त होगा। जातक को पिता की सम्पत्ति मिलेगी।
6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ शुक्र जातक को धनशाली बनाएगा। विवाह के बाद जातक का भाग्योदय होगा।
7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु भाग्य में रुकावट का संकेत देता है।
8. **शनि+केतु**–शनि के साथ व्यक्ति के आजीविका के साधन बदलता रहेगा।
9. शनि+शुक्र+गुरु+चन्द्र की युति जातक को राजा तुल्य ऐश्वर्य-वैभव एवं सम्पदा की स्वामी बनाएगी।

मेषलग्न में शनि की स्थिति दशम स्थान में



मेषलग्न में शनि दशमेश एवं एकादशेश होने से पापी है। शनि मंगल का शत्रु है। दशम स्थान में शनि मकर राशि में स्वगृही होने से शुभफलदाई हो जाएगा। मानसागरी के अनुसार–

''धनवान प्राय: शूरो, मन्त्री व दण्डनायक: पुरुष: दशमस्थे रवितनये, वृनदपुर ग्राम नेता वा।'' श्लोक 12/पृ. 244

ऐसा व्यक्ति अथाह धन सम्पत्ति को स्वामी होता है। जातक सांसद, मंत्री, राजा, न्यायाधीश का दण्डनायक होता है। **'शश योग'** के कारण जातक निश्चय ही राजपुरुष होता है। राजनीतिज्ञ होता है। जातक के पिता की लम्बी आयु होती है। जातक ज्योतिष, मन्त्र-तन्त्र, गूढ़ विद्याओं का जानकार होता है।

अनुभव—भोज संहिता के अनुसार लाभेश यदि दशमभाव है तो जातक धार्मिक कार्यों व संस्थाओं के माध्यम में रुपया कमाएगा।

दशा—शनि की दशा शुभफल देगी।

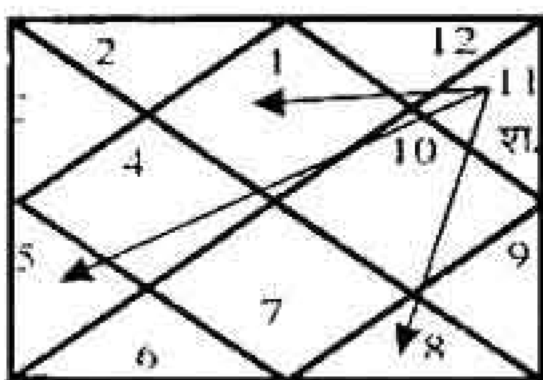
निशानी—लेख का कोरा, खाली कागज। विद्या में विघ्न आएगा।

दृष्टि—स्वगृही शनि की दृष्टि व्ययभाव, सुखभाव एवं सप्तम भाव पर होगी। फलत: खर्च बढ़ेगा। सुख में वृद्धि होगी। नए वाहन, पुराने भवन की खरीददारी होगी। पत्नी-पक्ष, ससुराल से लाभ होगा। जातक भोजन का शौकीन नहीं होगा।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शनि+सूर्य**—यहां शनि के साथ सूर्य जातक को राज-सरकार में ऊंचा पद-स्थान दिलाता है। परन्तु भाग्योदय पिता की मृत्यु के बाद होगा।
2. **शनि+चन्द्र**—यहां शनि के साथ चन्द्रमा उत्तम वाहन, भवन एवं माता का सुख देता है पर तीनों कुछ न कुछ न्यूनता बनी रहेगी।
3. यदि शनि के साथ मंगल हो तो **'किम्बहुना योग'** बनेगा। जातक करोड़पति होगा। जातक दम्भी व हठी होगा, पर राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा।
4. **शनि+बुध**—शनि के साथ बुध जातक का पराक्रम बढ़ाएगा पर जातक को गुप्त रोग एवं गुप्त बीमारी लगी रहेगी।
5. **शनि+गुरु**—शनि के साथ गुरु **'नीचभंगराज योग'** बनाएगा। जातक राजातुल्य पराक्रमी होगा। यशस्वी होगा एवं प्रतिष्ठित होगा।
6. **शनि+शुक्र**—शनि के साथ शुक्र विवाह के बाद जातक का भाग्योदय कराता है। जातक विवाह के बाद महाधनी होगा।
7. **शनि+राहु**—शनि के साथ राहु राजकाज में बाधा दिलाएगा।
8. **शनि - केतु**—शनि के साथ केतु सरकारी क्षेत्र में पीड़ा दिलाएगा।
9. यहां पर शनि+मंगल+गुरु+चन्द्र की युति जातक को (राजा) मिनिस्टर बनाएगी। जातक लालबत्ती की गाड़ी का हकदार होगा।

मेषलग्न में शनि की स्थिति एकादश स्थान में



मेषलग्न में शनि दशमेश एवं एकादशेश होने से पापी है। यह लग्नेश मंगल का शत्रु है। एकादश स्थान में शनि **'कुम्भ राशि'** का स्वगृही होगा। जातक भाग्यशाली अच्छी किस्मत वाला, राज्याधिकारी होता है। बुजुर्गों की सम्पत्ति पाने वाला-**'बहुधनी विघ्नकर: भूमिलाभ: राजपूजक:'** भृगुसूत्र के अनुसार जातक राजा से, सरकार से राज सम्मान, लाभ पाने वाला होता है। जातक विद्वान होगा। जातक के अनेक वाहन होंगे। जातक जिद्दी होगा।

दृष्टि–स्वगृही शनि की दृष्टि लग्नस्थान, पंचम भाव एवं अष्टम स्थान पर होगी। व्यक्तित्व में बढ़ोतरी होगी। शनि पांच पुत्र देगा तथा आयु में बढ़ोतरी देता है व संकट से बचाएगा।

निशानी–लिखे विधाता, स्वयं विधाता। अल्प सन्तति होगी।

अनुभव–'भोज संहिता' के अनुसार लाभेश लाभ स्थान में यदि मूल त्रिकोण राशि में है तो जातक अपने व्यापार-व्यवसाय में बहुत रुपया कमाएगा एवं अत्यधिक धनी व्यक्ति होगा।

दशा–शनि की दशा शुभफल देगी।

शनि की अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

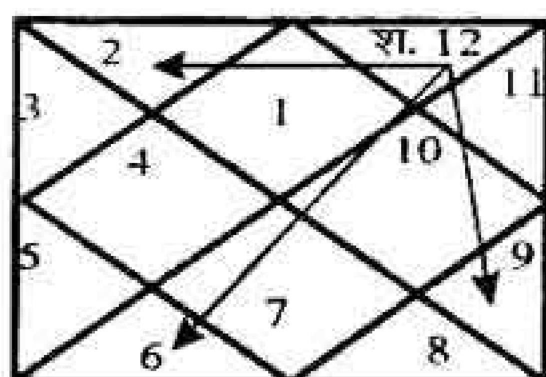
1. **शनि+सूर्य**–शनि के साथ सूर्य जातक को उद्योगपति बनाएगा। जातक के प्रथम पुत्र होगा अथवा पुत्र उत्पत्ति के बाद जातक का भाग्योदय होगा।
2. **शनि+चन्द्र**–शनि के साथ चन्द्रमा होने से जातक को माता की सम्पत्ति मिलेगी। कृषि या अन्य भूमि का लाभ होगा।
3. **शनि+मंगल**–शनि के साथ मंगल होने में जातक को परिश्रम का लाभ मिलेगा परन्तु संघर्ष के बाद ही सफलता मिलेगी।
4. **शनि+बुध**–शनि के साथ बुध पराक्रम में वृद्धि कराएगा। जातक एक से अधिक प्रकार के उद्योग एवं व्यापार में रुचि रखेगा।
5. यहां शनि के साथ भाग्येश गुरु भी हो तो यह युति जबरदस्त राजयोग कारक है। जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा।
6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ शुक्र होने से जातक की पत्नी सुंदर एवं धनाढ्य होगी।
7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु व्यापार में नुकसान कराता है तथा व्यापार में बदलाव भी लाता है।
8. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु व्यापार-उद्योग में ही लाभ दिलाता है। विदेश व्यापार में लाभ रहेगा।
9. शनि+सूर्य+गुरु+चन्द्र की युति जातक को करोड़पति बनाएगी। जातक बड़ा उद्योगपति होगा। उसकी सन्तान भी उद्योगपति होगी।

एकादश भाव में शनि का उपचार–

1. शराब या तेल 43 दिन तक धरती पर गिराएं।
2. कहीं जाने से पहले जल से भरा पात्र देखें।
3. बीमारी में कम से कम एक वर्ष तक स्त्री से शारीरिक सम्पर्क न करें।
4. परायी स्त्री से दूर रहना अति आवश्यक है।
5. नया काम शुरू करने से पहले कुम्भ रखना।
6. दक्षिण के दरवाजे वाले मकान में न रहना।
7. घर में चांदी की ईट रखना शुभ रहेगा।

8. स्कन्ध पुराणोक्त शनि स्तोत्र का पाठ करें।
9. नीलमयुक्त शनियंत्र धारण करें।

मेषलग्न में शनि की स्थिति द्वादश स्थान में



मेषलग्न में शनि राज्येश व एकादशेश होने से पापी है। शनि मंगल का शत्रु है। द्वादश स्थान में शनि मीन राशि का होगा। बारहवां शनि अकाल मृत्यु। ऐक्सीडेन्ट कराता है।

भृगुसूत्र के अनुसार–**पतितः विकलांगः पापयुते नेत्रच्छेदः** ऐसा जातक पतित, विकलांग होता है। जातक बड़े परिवार, जमीन-जायदाद का स्वामी होता है। जातक परोपकारी होगा, त्यागी होगा। माया को पेशाब की धार समझने वाला, वृद्धावस्था में संन्यासी होगा।

अनुभव–'भोजसंहिता' के अनुसार लाभेश यदि द्वादश स्थान में है तो जातक के बड़े भाई की मृत्यु होगी। जातक को धन का नुकसान जरूरी है। जातक का रुपया फालतू कार्यों में खर्च होगा।

निशानी–कलम विधाता, आराम। जातक के सिर पर टाट (गंजापन) होगा। धार्मिक कार्य में रुपया खर्च होगा।

दृष्टि–शनि की दृष्टि धन में बढ़ोतरी देगी। शत्रु का नाश करेगी एवं भाग्य का द्वार खोलेगी। क्योंकि शनि की पूर्ण दृष्टि धनस्थान, षष्टम् भाव एवं भाग्य (नवम्) भाव पर है। शनि मीन राशि का होना इतना अशुभ फलदाई नहीं होगा, जितना होना चाहिए। विदेश में कमाने के योग ज्यादा हैं।

दशा–शनि की दशा मिश्रित फलदायक है। शुभ-अशुभ दोनों फल की प्राप्ति होगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–शनि के साथ सूर्य विद्या एवं संतान में बाधक है।
2. **शनि+चन्द्र**–शनि के साथ चन्द्रमा '**सुखहीनयोग**' बनाता है। माता का सुख, वाहन का सुख कमजोर रहेगा।
3. **शनि+मंगल**–शनि के साथ मंगल '**लग्नभंगयोग**' बनाता है जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा।
4. **शनि+बुध**–शनि के साथ बुध '**विपरीत राजयोग**' बनाता है जातक धनी होगा। परन्तु अपयश मिलेगा।
5. **शनि+गुरु**–शनि के साथ गुरु '**भाग्यभंग योग**' बनाता है। जातक का भाग्योदय मध्यम आयु के बाद होगा।

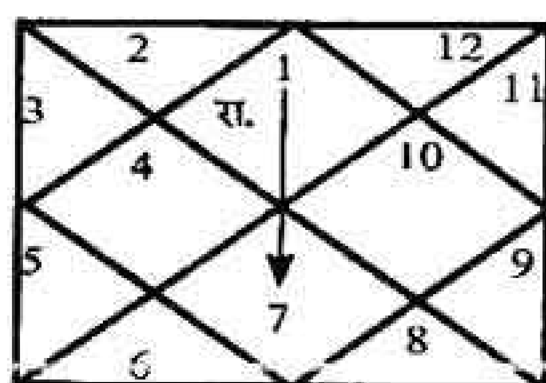
यदि यहां शनि के साथ बुध+मंगल की युति हो तो यह भी जबरदस्त राजयोग बनेगा। जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा, पर जातक की शत्रुओं से लड़ना पड़ेगा।

6. **शनि+शुक्र**—शनि के साथ शुक्र जातक का भाग्योद्‌य विवाह के बाद एवं विदेश यात्रा के बाद कराता है।
7. **शनि+राहु**—शनि के साथ राहु जातक के खराब सपने देगा। दुर्घटना कराएगा।
8. **शनि+केतु**—विदेश यात्रा में लाभ देगा।
9. यदि यहां शनि+शुक्र+गुरु+बुध की युति हो तो जातक (राजा) मिनिस्टर होगा। शहर का प्रमुख 'मेयर' होगा एवं परोपकारी, दयालु एवं मानवधर्म का उपासक होगा।
10. यदि बारहवें पापग्रह राहु, केतु या सूर्य हो तो एक नेत्र (बाई आंख) का नाश होगा। विदेश यात्रा में धोखा होगा। जातक को जेल भी जाना पड़ सकता है

❑❑❑

मेषलग्न में राहु की स्थिति

मेषलग्न में राहु की स्थिति प्रथम स्थान में



मेषलग्न के प्रथम स्थान में राहु मेष राशि (अग्निसंज्ञक राशि) मंगल के घर में होगा। ऐसे जातक का जन्म अस्पताल या ननिहाल में होता है। जातक अच्छी सेहत वाला धनवान होता है। राजदरबार (सरकार) में मान-सम्मान इज्जत पाने का भूखा होता है। जातक बड़े परिवार वाला होता है। चरलग्न में राहु होने पर जातक एक जगह टिक कर नहीं बैठता। जातक कामी होता है।

निशानी–सीढ़ी पर चढ़ने वाला हाथी। चेहरे (सिर) पर काले रंग का निशान होता है। जातक अस्त्र-शस्त्र से चोट खाने वाला धैर्यहीन होता है। बचपन में बीमार रहेगा।

अनुभव–राहु-केतु छायाग्रह, इनका कोई शारीरिक अस्तित्व नहीं है। स्वतन्त्र सत्ता नहीं है। अत: अनेक प्राचीन विद्वानों ने इन्हें ग्रह माना ही नहीं। इसका कारण उनकी स्थूल सोच थी। जिस पर मनुष्य के शरीर की छाया का कोई वजन, तौल, भार अथवा शरीर में हटकर अलग से स्वतन्त्र अस्तित्व नहीं हो सकता परन्तु उसकी सत्ता से कोई इंकार नहीं कर सकता। ठीक इसी प्रकार राहु व केतु का फलादेश अक्षुण्ण है, अकाट्य है। फलित ज्योतिष से यदि ये दोनों ग्रह नहीं हो तो फलादेश की सार्थकता ही नष्ट हो जाए। अत: फलादेश करते समय इनकी सूक्ष्म गतिविधियों का सफल अध्ययन कुशल ज्योतिषी को करना चाहिए। एक बात और है राहु अंधेरा है, धुआं है, पर्दे के पीछे छिपी हुई वस्तु है। राहु जन्मकुण्डली के जिस भाव में बैठेगा, वहां भ्रम उत्पन्न करेगा, यह निश्चित है।

मेषलग्न का राहु शारीरिक नैरोग्य-शारीरिक बल इतना देता है कि जातक अपने यौवन से अनेक स्त्रियों का उपभोग लेने में समर्थ होता है। अपनी स्त्री से असंतुष्ट रहने से व्याभिचारी वृति भी होती है। परन्तु मेषलग्न में राहु वाला व्यक्ति उदार हृदय का होता है। कब क्या कर बैठेगा, इसका अंदाज किसी को नहीं होगा।

दशा–भोज संहिता के अनुसार राहु की दशा संघर्षशील साबित होगी।

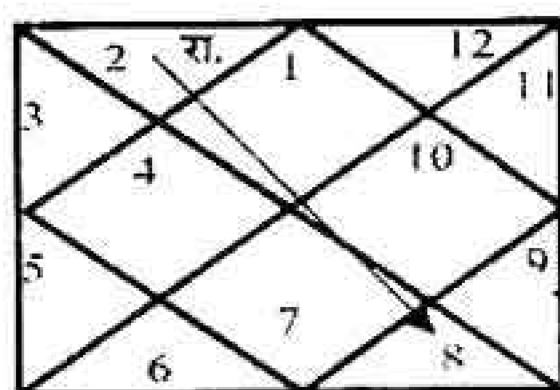
राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध

1. **राहु+सूर्य**–यहां राहु के साथ सूर्य उच्च का होकर **'रविकृत राजयोग'** बनाएगा। ऐसा जातक तेजस्वी होगा। पर राजदण्ड से भ्रमित होगा।
2. **राहु+चन्द्र**–यहां राहु के साथ चन्द्रमा मातृसुख को तोड़ेगा।
3. **राहु+मंगल**–यदि राहु के साथ मंगल हो तो **'रुचक योग'** बनेगा। जातक लम्बा होगा। महापराक्रमी होगा। हठी, जिद्दी व क्रोधी होगा पर दयावान भी होगा। जातक कामातुर होगा।
4. **राहु+बुध**–यहां राहु के साथ बुध जातक को पराक्रमी बनाएगा।
5. **राहु+गुरु**–यदि राहु के साथ गुरु हो तो **'चाण्डाल योग'** होगा। जातक अभक्ष्य भक्षण करेगा।
6. **राहु+शुक्र**–यहां राहु के साथ शुक्र जातक को सुन्दर पत्नी देगा। पर जीवनसाथी स्वेच्छाचारी होगा।
7. **राहु+शनि**–यदि राहु के साथ शनि हो तो जातक निष्ठुर होगा। न्यायप्रिय होगा पर आसानी से किसी के काबू में नहीं आएगा जातक कहेगा कुछ व करेगा कुछ। उसका व्यवहार संदिग्ध होगा।
8. यदि सूर्य+चन्द्र के साथ राहु हो तो **'ग्रहण योग'** होगा। ऐसे जातक का जन्म वैशाखकृष्ण अमावस्या को सूर्योदय के समय हुए ग्रहणकाल में होगा। ऐसा जातक मितव्ययी एवं सदारोगी होगा।

प्रथम भाव में राहु का उपचार–

1. शनिवार को काले कुत्ते को रोटी खिलावें।
2. शनिवार के दिन काला वस्त्र न पहने।
3. सूर्यग्रहण, चन्द्रग्रहण के समय दान-दक्षिणा, मंत्र पाठ करे।
4. शनिवार के दिन जौ के आटे की गोलियां मछलियों को खिलावें।
5. राहु के मंत्र का जाप करें, दशांश हवन करे एवं राहु की वस्तुओं का दान करें।
6. हाथी दांत की मूर्ति या वस्तुएं घर में न रखे।

मेषलग्न में राहु की स्थिति द्वितीय स्थान में



मेषलग्न में द्वितीय स्थान में राहु वृष राशि (स्थिर राशि) में होगा। राहु शुक्र के घर में शुक्र से प्रभावित होगा। जातक परोपकारी होगा। जीवन में उतार-चढ़ाव बहुत आएंगे। मिट्टी से सोना या कभी सोने से मिट्टी बनाएगा। 34 वर्ष की आयु के बाद दो विवाह की सम्भावना रहेगी। धन के घड़े में

छेद है। जातक रुपया इक्कठा नहीं कर पाएगा। जातक कठोर वचन बोलने वाला होता है।

निशानी—बरसाती बादल। जातक की ठोड़ी के पास काला तिल (लांछन) होगा। जातक के दांत जल्दी खराब होंगे।

अनुभव— **'राहुशनिवत् केतुः कुजवत्'** राहु शनि के समान एवं केतु मंगल के समान फल देता है। बुध-शुक्र और शनि राहु के मित्र ग्रह हैं। राहु के लिए मंगल शत्रु है। राहु की उच्च राशि मिथुन, स्वगृह कन्या है। नीच राशि धनु है और सिंह राशि में राहु हर्षित रहता है। राहु की मूल त्रिकोण राशि कर्क कही गई है वृष का राहु मित्र क्षेत्री होता है। कई विद्वान राहु को वृष में उच्च का मानते हैं पर वृष के राहु वाला व्यक्ति लोगों के काम में बहुत दखल देने वाला होता है। राहु धन भाव में हो तो मनुष्य कुबेर के समान दौलत वाला हो तो भी निर्धन होता है। उसे धन की कमी बराबर सताती रहती है। जातक की वाणी अपवित्र (अप्रिय) होती है। मनुष्य झूठ बोलने वाला होता है।

दशा—राहु की दशा संघर्षशील साबित होगी। सही फलादेश हेतु शुक्र की स्थिति का अध्ययन करना भी जरूरी है।

राहू का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

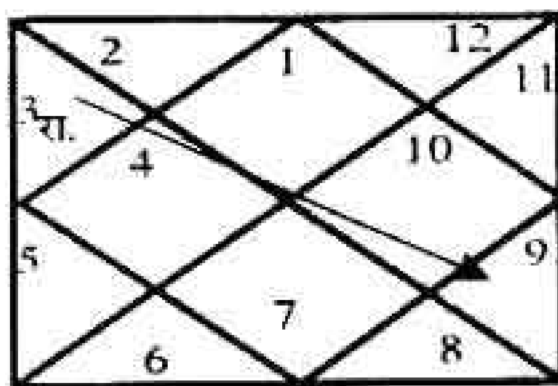
1. **राहु+सूर्य**—पंचमेश सूर्य राहु के साथ यहां होने से विद्या में निश्चित बाधा आएगी। विद्या व सन्तति को लेकर धन का अपव्यय होगा।
2. **राहु+चन्द्र**—राहु के साथ उच्च का चन्द्रमा जातक के सुख ऐश्वर्य में वृद्धि करेगा।
3. **राहु+मंगल**—यदि राहु के साथ मंगल हो तो पत्नी की मृत्यु पहले होगी।
4. **राहु+बुध**—राहु के साथ बुध जातक के पराक्रम को तोड़ता है।
5. **राहु+गुरु**—राहु के गुरु भाग्योदय में बाधक है। जातक को भाग्योदय व धनप्राप्ति हेतु बाध ाओं का सामना करना पड़ेगा।
6. **राहु+शुक्र**—राहु के साथ शुक्र विलम्ब विवाह कराएगा।
7. **राहु+शनि**—राहु के साथ शनि व्यापार-व्यवसाय में वांछित लाभ में बाधक है।

द्वितीय भाव में राहु का उपचार—

1. श्रीसूक्त का सुबह-शाम नित्य पाठ करें।
2. श्रीयंत्र+कनकधारा यंत्र+कुबेर यंत्र का नित्य पूजन, दर्शन करें।
3. राहु शान्ति का प्रयोग करें।
4. कड़वा वचन किसी को न बोले।
5. धन प्राप्ति हेतु दूर्वा एवं काले तिल से राहु का हवन करें।

मेषलग्न में राहु की स्थिति तृतीय स्थान में

मेषलग्न में तृतीय स्थान में राहु मिथुन राशि (वायुराशि) में होगा। मिथुन राशि में राहु उच्च का कहा गया है। ऐसा जातक विद्वान व कलम का धनी होगा। उसकी कलम में तलवार



से अधिक ताकत होगी। जातक भाई-बन्धु, परिजनों की सेवा करेगा। स्वप्न में जो भी दिखेगा, सच हो जाएगा। जातक स्त्री-सन्तान से सुखी होगा। परन्तु भाइयों से मनमुटाव रहेगा। जातक गरम मिजाज का होगा।

निशानी–आयु और धन का स्वामी। दाएं बाजु पर काले रंग का तिल या निशान होगा।

अनुभव–मिथुन में राहु वाला व्यक्ति 'छिन्द्रान्वेषक' होता है। अपने मित्रों व परिजनों के कार्यों में दोष ढूँढता रहता है। 'त्रिषट् एकादशे राहु:' के अनुसार तृतीयस्थ राहु वाला जातक जबरदस्त बाहुबली होता है। सारा संसार उसे सगे भाई की तरह आदर देगा। परन्तु सहोदर भाई का नाश होता है।

दशा–राहु की दशा में भाग्योदय के अवसर प्राप्त होंगे पर 'भोज संहिता' के अनुसार भाइयों, परिजनों एवं मित्रों से धोखा इसी दशा में मिलेगा। राहु के साथ यदि शनि या बुध हो तो राहु की दशा ठीक जाएगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

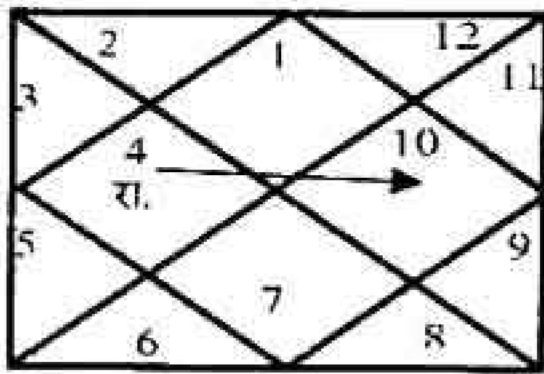
1. **राहु+सूर्य**–राहु के साथ सूर्य विद्या में बाधा डालेगा। कुटुम्ब में कलह होगा।
2. **राहु+चन्द्र**–राहु के साथ चन्द्रमा, मातृपक्ष से विरोध उत्पन्न करेगा। पराक्रम व मान भंग का भय रहेगा।
3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ मंगल भाइयों में विरोध, मित्रों से धोखा दिलाएगा।
4. **राहु+बुध**–राहु के साथ बुध मिश्रित फल देगा। मित्रों से लाभ एवं विरोध दोनों उत्पन्न करता रहेगा।
5. **राहु+गुरु**–राहु के साथ गुरु व्यक्ति को फिजूल खर्च बनाएगा।
6. **राहु+शुक्र**–राहु के साथ शुक्र धन का अपव्यय मित्रों के लिए कराएगा। स्त्री को लेकर धन खर्च होगा।
7. **राहु+शनि**–राहु के साथ शनि राज्य सुख में बाधा, व्यापार-व्यवसाय में बाधा पंहुचाएगा।

तृतीय भाव में राहु का उपचार–

1. भाई-कुटुम्बीजनों को पलटकर जबाब न दें।
2. गलत व्यक्तियों एवं व्याभिचारी स्त्रियों की सौबत से बचे।
3. जौ रात्रि सिरहाने रखकर प्रात: जानवरों या किसी गरीब को भेंट करे।
4. बड़े भाई या बहन से लड़ने पर चूल्हे की आग बुझ जाएगी।

मेषलग्न में राहु की स्थिति चतुर्थ स्थान में

मेषलग्न के चतुर्थ स्थान में राहु कर्क राशि का होगा। कर्क राशि चर राशि है। जलचर है। राहु चन्द्रमा के प्रभाव में रहेगा। ऐसा जातक धनवान एवं माता-पिता का सेवक होगा। कर्क



के राहु के कारण जातक पिस्तौल-बन्दूक या घातक हथियार साथ रखने का शौकीन होगा। उच्च पदाधिकारी होगा। घर के सुख में कुछ न कुछ कमी न्यूनता रहेगी। सभी सुख के साधन उपलब्ध होते हुए भी जातक सुखी नहीं होगा। विद्या में विघ्न होगा।

निशानी–धर्मी मगर, धन के आम गए। छाती पर काले रंग का तिल या दाग होगा।

अनुभव–कर्क राहु की मूल त्रिकोण राशि मानी गई है। यहां राहु हर्षित रहता है परन्तु ऐसा जातक लोगों के काम में दखल देने वाला, निरंकुश जातक होता है। चतुर्थ भावस्थ राहु व्यक्ति की माता को बीमार रखता है। अथवा चतुर्थस्थ राहु सौतेली मां का योग कराता है। माता को लेकर चिन्ता बनी रहती है। 'भोज संहिता' के अनुसार ऐसे जातक का मन घर में नहीं लगेगा। घर में बैचेन व बाहर मस्त रहेगा।

दशा–राहु की दशा संघर्षशील रहेगी। यदि चन्द्रमा की स्थिति कुण्डली में खराब है तो राहु की दशा खराब जाएगी। यदि चन्द्र की स्थिति शुभ है तो दशा मध्यम फलकारी साबित होगी।

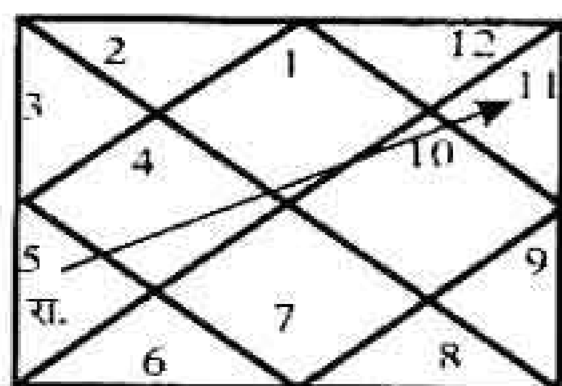
राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+सूर्य**–राहु के साथ सूर्य विद्या में, भौतिक सुखों में बाधक है।
2. **राहु+चन्द्र**–राहु के साथ चन्द्रमा माता को बीमार करेगा। जातक परम उत्तम (चार पहियों का) वाहन होगा।
3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ मंगल नीच का होने से जातक लड़ाकू होगा।
4. **राहु+बुध**–राहु के साथ बुध व्यापार में हानिकारक है। वाहन दुर्घटना का भय बना रहेगा।
5. **राहु+गुरु**–राहु के साथ गुरु पिता के सुख में बाधक है।
6. **राहु+शुक्र**–राहु के साथ शुक्र पत्नी मनमुटाव उत्पन्न करेगा। वाहन दुर्घटना का भय बनाएगा।
7. **राहु+शनि**–राहु के साथ शनि, व्यापार में नुकसान, भौतिक सुखों की प्राप्ति में बाधक है।

चतुर्थ भाव में राहु का उपचार–

1. तेजगति के वाहन से दूर रहें।
2. माता, बुआ या बड़ी बहन की बीमारी में लापरवाही न रखें।
3. राहु के वैदिक मंत्रों का जाप करें।
4. राहु शान्ति प्रयोग करें।

मेषलग्न में राहु की स्थिति पंचम स्थान में



मेषलग्न के पंचम स्थान में राहु सिंह राशि का होगा। सिंह राशि अग्नि संज्ञक व स्थित राशि है। राहु सूर्य के प्रभाव में होने के कारण जातक गुस्सैल, क्रोधी प्रवृत्ति का शीघ्र भड़कने वाला व्यक्ति होगा। जातक व्यापारी होगा पर सन्तान के लिए तरसेगा। भृगुसूत्र के अनुसार–**'पुत्राभाव सर्पशापात् सुतक्षय, नागप्रतिष्ठया पुत्र प्राप्ति।'** सर्प के शाप से पुत्र का अभाव हो पर नाग की प्रतिष्ठ कालसर्पशक्ति करने से पुत्र की प्राप्ति होगी। जातक उच्च अधिकारियों से लाभ प्राप्त करने वाला होगा।

निशानी–शरारती-सन्तान। जातक के पेट या पीठ पर काला तिल या दाग होगा। पांचवा स्थान 'पूर्वजन्मकृत पुण्य' का होता है। ऐसे जातक की कुण्डली में पूर्व जन्मकृत पुण्य का अभाव रहता है।

अनुभव–सिंह राशि राहु की प्रिय राशि है। जिसमें वह प्रमुदित रहता है। राहु सिंह का हो तो निर्जन प्रदेश में निवास करके भी मनुष्य यथेष्ट धन अर्जित कर लेता है। ऐसा जातक दयालु होता है। परन्तु पंचमस्थ राहु पुत्रसुख में बाधक है। यह पहली सन्तान को मारता है। पंचम भावस्थ राहु को लेकर 'पद्मनामक' कालसर्पयोग बनता है। ऐसा जातक कितना भी डॉक्टरी ईलाज करा ले पर उसे पुत्र सन्तति नहीं होती। ऐसी सैकड़ों कुण्डलियां हमारे संग्रह में है परन्तु कालसर्पयोग की शान्ति विधि-विधान से तीन बार करा लेने पर लोगों के सन्तति हुई है। ऐसा प्रत्यक्ष अनुभव (चमत्कार) हमारे द्वारा कई लोगों को प्राप्त हुआ है। यहां आकर मानना ही पड़ता है कि मनुष्य का कर्म (परिश्रम) भाग्य के सामने वृथा है। कर्म फल प्राप्ति के लिए अनिवार्य है। परन्तु शुभ-अशुभ फल दैवकृपा से ही मिलता है अकेला पुरुषार्थ व्यर्थ है।

दशा–'भोजसंहिता' के अनुसार राहु की दशा अनिष्ट फल देगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

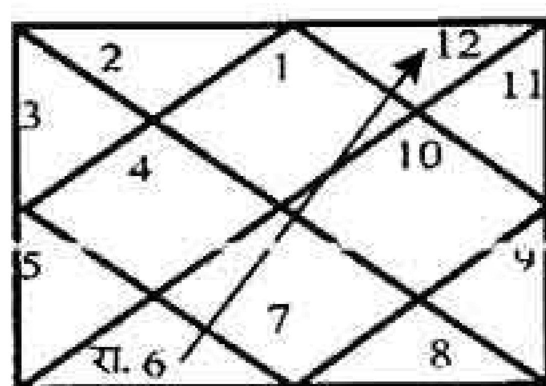
1. **राहु+सूर्य**–राहु के साथ सूर्य स्वगृही विद्या से लाभ, पुत्र सन्तति देरी से होगी। पर पुत्र तेजस्वी होगा।
2. **राहु+चन्द्र**–राहु के साथ चन्द्रमा सन्तान सुख में बाधक है पर मातृदोष की शान्ति के बाद उत्तम सन्तति होगी।
3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ मंगल भाइयों के सुख एवं पुत्र सुख में बाधक (अवरोधक) है।
4. **राहु+बुध**–राहु के साथ बुध होने से व्यक्ति की मामा एवं मातृपक्ष से कम पटेगी।
5. **राहु+गुरु**–राहु के साथ गुरु जातक की विद्या को बिगाड़ेगा एवं भाग्योदय में भी देरी कराएगा।

6. **राहु+शुक्र**–राहु के साथ शुक्र जातक के वैवाहिक सुख में बाधक है।
7. **राहु+शनि**–राहु के साथ शनि व्यापार में नुकसान देगा।

पंचम भाव में राहु का उपचार–

1. संतान गोपाल स्तोत्र का नित्य पाठ करें।
2. राहु के तांत्रिक मंत्रों का जाप, हवन एवं तर्पण करें।
3. राहु की वस्तुओं का दान करें।
4. पितृदोष या कालसर्पयोग की शान्ति करावे।

मेषलग्न में राहु की स्थिति षष्टम स्थान में



मेषलग्न में षष्टम भाव में राहु कन्या राशि का होगा। कन्या राशि द्विस्वभाव राशि एवं वायु तत्त्व प्रधान है। इसमें राहु उच्च का कहा गया है।

ऐसा जातक बुराई के कामों से दूर रहने वाला, धीरवान और अतिसुखी होता है। ऐसा जातक दृढ़ निश्चयी होता है। लम्बी आयु का स्वामी एवं शत्रुओं पर विजय पाने वाला साहसी होता है। उसके शत्रु उसकी प्रतापग्नि में नित्य जलते हैं। ऐसा जातक अपनी किस्मत आप चमकाता है। जातक के जीवन में शत्रु या रोग का प्रकोप अवश्य रहेगा।

निशानी–फांसी काटने वाला सहायक हाथी। नाभि के नीचे काले रंग का तिल या दाग होता है। छठे भाव में राहु वाले व्यक्ति को शीघ्र लग जाती है।

अनुभव–छठे भाव में राहु शत्रुओं के जंगल को भस्मसात करने की शक्ति रखता है। परन्तु उसे चाचा-मामा का सुख नहीं होता।

दशा–राहु की दशा अनिष्ट फल देगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

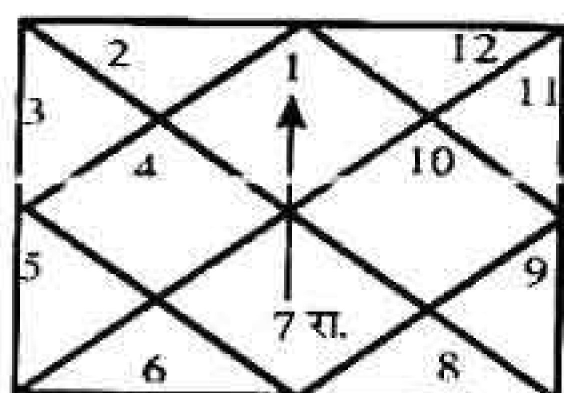
1. **राहु+सूर्य**–राहु के साथ सूर्य होने के कारण जातक के जीवन में स्थिरता पुत्र जन्म के बाद ही आएगी। पुत्र जन्म भी देवताओं की उपासना व कृपा से होगा।
2. **राहु+चन्द्र**–'इन्दुयुते राजस्त्री भोगी' (भृगुसुत्र) राहु के साथ यहां पर यदि चन्द्रमा हो जातक राजा की स्त्री, राजमंत्री की पत्नी से गुप्त सम्बन्ध रखता है।
3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ मंगल होने से जातक को परिश्रम का लाभ 34 वर्ष की आयु के बाद मिलेगा।
4. **राहु+बुध**–यदि बुध भी राहु के साथ है तो पराक्रम भंग होगा। जातक अवश्य जेल जाएगा।
5. **राहु+गुरु**–राहु के साथ गुरु जातक को राजयोग देगा परन्तु संघर्ष के बाद देगा।
6. **राहु+शुक्र**–राहु के साथ शुक्र सम्पूर्ण विवाह सुख में बाधक है।

7. **राहु+शनि**–राहु के साथ शनि जातक को व्यापार एवं व्यवसाय सुख में बाधक है।

षष्टम भाव में राहु का उपचार–

1. राहु कवच का नित्य पाठ करें।
2. चांदी की ठोस गोली जेब में रखें।
3. राहु पंचविंशति स्तोत्र का हवनात्मक प्रयोग करें।
4. राहु की वस्तुओं का दान करें।
5. रात्रि को गहरी नींद में सोए हुए व्यक्ति को भूरे-काले रंग का कम्बल ओढ़ाकर चुपचाप चले जाए।

मेषलग्न में राहु की स्थिति सप्तम स्थान में



मेषलग्न के सप्तम स्थान में राहु तुला राशि में होगा। तुलाराशि चरराशि वायु तत्त्व प्रधान है। ऐसा जातक शत्रुओं पर विजय पाने वाला राज्याधिकारी होता है। इनके जीवन में धन की कमी नहीं रहेगी। इनका गृहस्थ जीवन विवादास्पद होता है। दुनिया में आकर ये नाम कमाते है परन्तु दारिद्र्यं का संकेत मिलता है। प्रथम स्त्री की मृत्यु बीमार से होने प्राय: दूसरी शादी होती है। शुभग्रह साथ हो या शुभग्रह की दृष्टि हो तो एक पत्नी होगी। जातक अंतर्जातीय विवाह या विधवा विवाह करने में संकोच नहीं करेगा। वैवाहिक जीवन सुखमय नहीं होगा।

निशानी–लक्ष्मी का धुआं निकालने वाला। गुप्तांग पर काला तिल या दाग होता है।

दशा–राहु की दशा मिश्रित फल देगी। शुक्र की स्थिति सही फलादेश का मार्ग प्रशस्त करेगी।

अनुभव–तुला राशि में राहु वाला व्यक्ति 'छिद्रान्वेषक' होता है। अपनी पत्नी, मित्र व भागीदारों में दोष ढूढ़ता रहता है। सप्तम भाव में राहु स्त्री का विनाश करता है। उसे रोगिनी बनाता है। सप्तम भाव में राहु मधुमेह का रोग देता है और भी कारण से स्त्री सुख में न्यूनता देता है।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

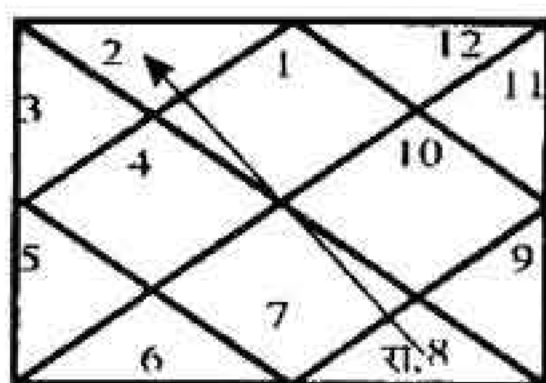
1. **राहु+सूर्य**–राहु के साथ सूर्य नीच का होने से जातक को सरकारी नौकरी नहीं मिलेगी तथा राजदण्ड का भय रहेगा।
2. **राहु+चन्द्र**–सप्तम भाव में राहु के साथ चन्द्रमा हो तो मनुष्य स्त्री को विभिन्न प्रकार भोग-उपभोग की सामग्रियां निरन्तर भेंट करता रहता है। यदि सप्तम भाव में अन्य पापग्रह हों तो ऐसे जातक की स्त्री कुटिला, कुशीला और लड़ाकू होगी। पति-पत्नी में लगातार कलह बनी रहेगी।

3. **राहु+मंगल**–यदि राहु के साथ मंगल भी हो तो पत्नी की मृत्यु पहले होगी।
4. **राहु+बुध**–राहु के साथ बुध जातक को पत्नीपक्ष, मातृपक्ष एवं मित्रपक्ष से हानि दिलवाता है। स्त्री-मित्र से धोखा मिलेगा।
5. **राहु+गुरु**–राहु के साथ गुरु **'चाण्डाल योग'** बनाता है। ऐसा जातक अन्तरजातीय विवाह करता है।
6. **राहु+शुक्र**–राहु के साथ **'मालव्य योग'** बनाता है। जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगता है।
7. **राहु+शनि**–राहु के साथ उच्च का शनि **'शशयोग'** बनाता है। ऐसा जातक राजा के समान पराक्रमी, ऐश्वर्यशाली व धनवान होता है।
8. राहु के साथ यदि शनि या शुक्र हो तो 'भोजसंहिता' के अनुसार जातक दुर्दान्त राजा होगा। ऐसा प्रभावशाली व्यक्ति होगा जो गलत कार्यों में अपनी शक्ति (प्रभाव) का दुरुपयोग करेगा।

सप्तम भाव में राहु का उपचार–

1. राहु शान्ति प्रयोग करें।
2. राहु के वैदिक मंत्रों का जाप रुद्राक्ष की माला पर करें।
3. राहु की वस्तुओं का दान करें।
4. अत्यधिक बूढ़ी एवं बेसहारा स्त्रियों की मदद करे।

मेषलग्न में राहु की स्थिति अष्टम स्थान में



मेषलग्न में अष्टम स्थान में राहु वृश्चिक राशि का होगा। वृश्चिक राशि जलसंज्ञक है, स्थिर है। जातक को 32वें वर्ष आयु पर खतरा आएगा। जातक की किस्मत झूले की तरह आगे-पीछे, ऊपर-नीचे डोलती रहेगी। ऐसा जातक राजा व फकीर को एक जगह बिठाएगा। धनवान् होगा। 34 वर्ष की आयु के बाद दूसरे विवाह की सम्भावना बनी रहेगी। जातक को गुप्त रोग, मूत्राशय, पथरी, हरनिया की सम्भावना रहेगी। अमधात की सम्भावना रहती है।

निशानी–मौत का मालिक, कढ़वे धुएं का संदेश। गुप्तांग या गुदा पर काले रंग का तिल या दाग होगा। विरासत की सम्पत्ति न मिले।

अनुभव–ऐसे जातक को पेट में रोग, ट्यूमर या गुप्तांग में बीमारी होती है। जातक अंतर्जातीय विवाह या विधवा विवाह करता है। जातक को 32, 45 एवं 60वें वर्ष मृत्यु का भय रहता है। जातक की वृद्धावस्था कष्टमय रहती है। तथा मृत्यु का पूर्वाभास मृत्य के पहले हो जाता है। यदि राहु के साथ मंगल हो तो उपरोक्त वर्षो में दुर्घटना का भय और भी प्रबल हो जाता है। पैर टूटने का भय रहता है। ऐसे जातक को नवरत्न जड़ित महामृत्युंजय का लॉकेट गले में हर वक्त पहनना चाहिए। इसके लिए लेखक या 'अज्ञातदर्शन' कार्यालय से सीधा सम्पर्क किया जा सकता है।

यदि राहु के साथ मंगल हो तो पत्नी की मृत्यु पहले होगी।

दशा—राहु की दशा अनिष्ट फल देगी। यदि इस कुण्डली में मंगल की स्थिति भी खराब हो तो यह दशा घातक होगी।

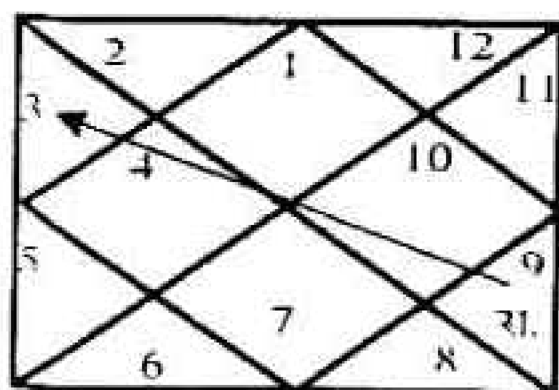
राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **राहु+सूर्य**—राहु के साथ सूर्य पुत्र सन्तान एवं उच्च शैक्षणिक डिग्री प्राप्त कराने में बाधक है।
2. **राहु+चन्द्र**—राहु के साथ चन्द्रमा नीच का होगा। जातक को गुप्त बीमारी का प्रकोप रहेगा। शल्य चिकित्सा से राहत मिलेगी।
3. **राहु+मंगल**—राहु के साथ मंगल होने से **'विपरीतराज योग'** बनेगा। जातक महाधनी होगा पर जीवन संघर्षपूर्ण रहेगा।
4. **राहु+बुध**—राहु के साथ बुध होने से जातक को **'विपरीत राजयोग'** के कारण भौतिक सुख-सम्पन्नता मिलेगी पर जातक के मित्र दगाबाज होंगे।
5. **राहु+गुरु**—राहु के साथ गुरु **'विपरीतराज योग'** बनाता है। जातक धनी होगा परन्तु संघर्षशील जीवन रहेगा।
6. **राहु+शुक्र**—राहु के साथ शुक्र विवाहसुख से विच्छेद का संकेत देता है।
7. **राहु+शनि**—राहु के साथ शनि भी विवाह-विच्छेदक है परन्तु व्यापार-व्यवसाय में धोखा देगा।

अष्टम भाव में राहु का उपचार—

1. राहु कवच का नित्य पाठ करे।
2. असाध्य बीमारी से बचाव हेतु महामृत्युंजय का पाठ करे।
3. हाथी दांत की वस्तुएं घर में न रखे, न प्रयोग में ले।
4. प्राणों पर यदि संकट हो तो अपने वजन के बराबर कच्चा कोयला शनिवार के दिन जल में प्रवाहित करे।
5. यदि बुखार न उतर रहा हो तो 800 ग्राम जौ गौ मूत्र में धोकर शनिवार के दिल जल में प्रवाहित करे।

मेषलग्न में राहु की स्थिति नवम स्थान में



मेषलग्न के नवम स्थान में राहु धनु राशि का होगा। धनुराशि अग्निसंज्ञक है, द्विस्वभाव है। ऐसा जातक जादू-टोना, श्मशान क्रिया व तंत्र का जानकार होता है। बहन-भाइयों का पोषक होते हुए भी लालची एवं बेईमान होता है। ऐसा जातक सन्तान से सुखी एवं अधिक यात्रा करने वाला, कुछ क्रोधी एवं

तनुक मिजाजी व्यक्ति होता है। 'भोजसंहिता' के अनुसार ऐसा जातक भाग्योदय में कुछ न कुछ रुकावट महसूस करता होगा।

निशानी–डॉक्टर, मगर बेईमान। जांघों पर काले रंग का तिल का दाग होता है। पिता की सम्पत्ति न मिले। यात्राएं अधिक करे।

अनुभव–नवमस्थ राहु वाला व्यक्ति अपने द्वारा प्रारम्भ किए हुए कार्य को अधूरा नहीं छोड़ता। ऐसा जातक देवताओं व तीर्थों में श्रद्धा विश्वास रखने वाला, सभ्य व्यक्ति होता है। ऐसा जातक अपने ऊपर किए गए उपकार को कभी भूलता नहीं। व्यक्ति कृतज्ञ होता है। परन्तु अपने दुश्मन को कभी नहीं छोड़ता। प्राय: अपने पिता का इकलौता पुत्र होता है बहन यदि हो तो 22वें वर्ष में उसकी मृत्यु हो जाती है। भाई यदि हो तो 36वें वर्ष में उसकी भी मृत्यु हो जाती है।

दशा–राहु की दशा मिश्रित फल देगी परन्तु यदि गुरु इस कुण्डली में छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो जातक पर विपत्ति का पहाड़ टूटेगा। उसके प्रयत्न इस दशा में विफल होंगे। राहु का उपाय ही एकमात्र समाधान होगा।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

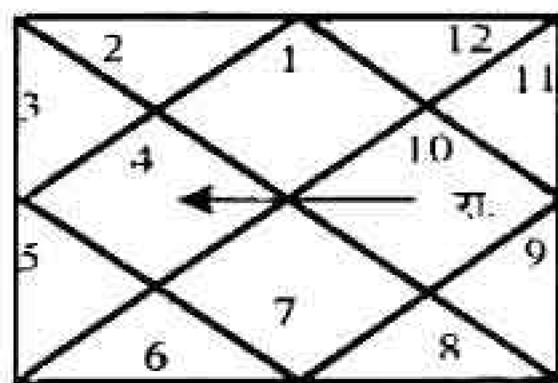
1. **राहु+सूर्य**–राहु के साथ सूर्य जातक का भाग्योदय विद्यार्जन से कराएगा।
2. **राहु+चन्द्र**–राहु के साथ चन्द्रमा जातक का भाग्योदय माता की मदद से कराएगा।
3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ मंगल के कारण जातक को परिश्रम का लाभ मिलेगा। जातक बड़ी सम्पत्ति का स्वामी होगा।
4. **राहु+बुध**–राहु के साथ बुध जातक को महान् पराक्रम बनाएगा।
5. **राहु+गुरु**–राहु के साथ गुरु जातक को महान भाग्यशाली एवं तेजस्वी व्यक्ति बनाएगा।
6. **राहु+शुक्र**–राहु के साथ शुक्र जातक का भाग्योदय विवाह के बाद कराएगा।
7. **राहु+शनि**–राहु के साथ शनि जातक की किस्मत व्यापार के द्वारा चमकाएगा।

नवम भाव में राहु का उपचार–

1. राहु के वैदिक मंत्रों का जाप, अनुष्ठान करें।
2. राहु शान्ति प्रयोग करें।
3. शीघ्र भाग्योदय हेतु राहु के एक लाख अठारह हजार तांत्रिक मंत्रों का दूर्वा, काले तिल, कर्पूर व कमलगट्टे का हवन करें।

मेषलग्न में राहु की स्थिति दशम स्थान में

मेषलग्न के दशम स्थान में राहु मकर राशि का होगा। मकर राशि पृथ्वीसंज्ञक चर राशि है। जातक का जन्म पिता के लिए कष्टकारी होता है। जातक राज-दरबार (सरकार) में मान-सम्मान पाने का इच्छुक होता है। जातक धनवान होगा, लम्बी आयु वाला होगा। जातक



चाल-चलन का अच्छा एवं चरित्रवान होगा। परन्तु राज्यपक्ष से कष्ट महसूस करेगा।

निशानी–सांप की मणि। घुटनों के पास काले रंग का तिल या दाग होता है। पिता से सम्बन्ध ठीक होंगे।

अनुभव–दशम भाव का राहु बलवान होता है, परन्तु ऐसे जातक को पिता का सुख नहीं मिलता। वाहन सुख तो होता है परन्तु वाहन को लेकर खर्च होता रहता। जातक को म्लेच्छ, निम्न जाति एवं विदेशी लोगों से लाभ होगा अर्थात् अपनी जाति के लोगों से कम लाभ होता है।

दशा–राहु की दशा मिश्रित फल देगी। यदि शनि राहु के साथ है तो दशा अच्छी जाएगी परन्तु यदि शनि इस कुण्डली के छठे, आठवें और बारहवें स्थान में हो जातक राज (सरकार) कोर्ट-कचहरी द्वारा दण्डित होगा।

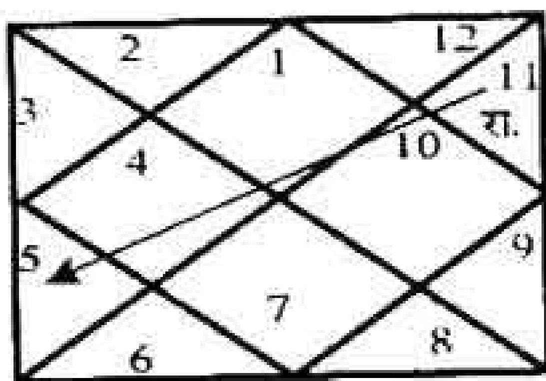
राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+सूर्य**–राहु के साथ सूर्य शत्रुक्षेत्री होकर विद्या अधूरी कराएगा। सरकारी नौकरी में बाधा पहुंचेगी।
2. **राहु+चन्द्र**–राहु के साथ चन्द्रमा माता की सम्पत्ति में बाधा, मकान को लेकर विवाद कराएगा।
3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ उच्च का मंगल यहां **'रुचक योग'** बनाएगा। जातक राजा के समान पराक्रमी, ऐश्वर्यशाली एवं बड़ी सम्पत्ति का स्वामी होगा।
4. **राहु+बुध**–राहु के साथ बुध होने से जातक पराक्रमी होगा। व्यापार प्रिय होगा पर वंचक होगा। चालाक होगा।
5. **राहु+गुरु**–राहु के साथ गुरु नीच का होने से जातक को नौकरी, अध्यापन बगैरा से लाभ होगा।
6. **राहु+शुक्र**–राहु के साथ शुक्र व्यापार एवं स्त्री संसर्ग को लेकर धन खर्च करने का संकेत देता है।
7. **राहु+शनि**–राहु के साथ शनि **'शश योग'** बनाएगा। ऐसे जातक राजा के समान पराक्रमी एवं ऐश्वर्य सम्पन्न होता है।

दशम भाव में राहु का उपचार–

1. राजयोग की प्राप्ति हेतु राहु के तांत्रिक मंत्रों का हवन करें।
2. राहु की वस्तुओं का दान करें।
3. राहु पंचविंशति नाम स्तोत्र का नित्य पाठ करें।
4. राहु के पंचविंशति स्तोत्र का हवनात्मक प्रयोग काले तिल व दूर्वा से करें।

मेषलग्न में राहु की स्थिति एकादश स्थान में



मेषलग्न के एकादश स्थान राहु कुम्भ राशि का होगा। कुम्भ राशि वायु तत्व प्रधान एवं स्थिर राशि है। ऐसा जातक सन्तान से सुखी, धनवान, बड़ी जमीन जायदाद का स्वामी होगा। पुत्र भी ऐश्वर्यशाली होंगे। जातक के जीवन में संघर्ष की स्थिति बनी रहेगी। मुकदमों एवं झगड़ों से जाक उलझा रहेगा। अन्त में विजय प्राप्त करेगा। पिता की आयु लम्बी होगी। जिसका साथ निभाएगा, उसको अकेला नहीं छोड़ेगा। जातक लाभ में कमी (न्यूनता) महसूस करेगा, पर मित्र बहुत होंगे।

निशानी–पिता को गोली मारे, या मुंह न देखे। टांगों पर काले रंग का तिल का दाग होगा। जातक धर्मशास्त्र का जानकार होगा।

अनुभव–कुम्भ राशि में राहु वाला व्यक्ति 'छिद्रान्वेषक' होता है अपने परिजनों व इष्ट मित्रों में दोष ढूढ़ता रहता है। ऐसा जातक वक्ता व आलोचक होकर धन कमाता है। जातक को पुत्र सन्तान अवश्य होती है पर वृद्धावस्था में कान का रोग होता है। ऐसे जातक को 28 वें वर्ष, 42 वें वर्ष पर अनायास धन की प्राप्ति होती है।

दशा–'भोजसंहिता' के अनुसार राहु की दशा अशुभ फल देगी। यदि शनि की स्थिति इस कुण्डली में छठे, आठवें या बारहवें स्थान पर हो तो यह स्थिति ज्यादा अनिष्ट फल देगी। ऐसी स्थिति व राहु व शनि दोनों की शान्ति के उपाय करने होंगे।

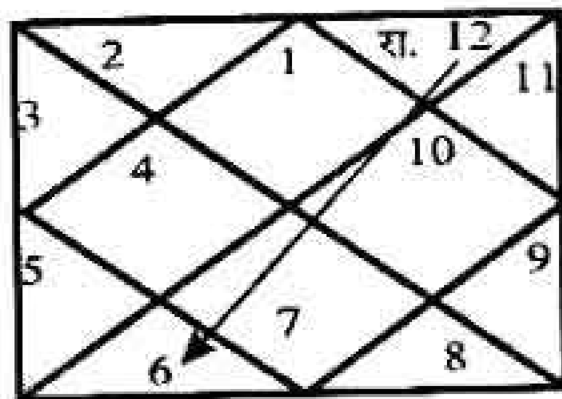
राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+सूर्य**–राहु के साथ सूर्य शत्रुक्षेत्री होने से जातक को व्यापार में राज्य कर्मचारियों द्वारा कष्ट पंहुचेगा।
2. **राहु+चन्द्र**–राहु के साथ चन्द्रमा विद्या एवं संतान में रुकावट देता है। ऐससा जातक मानसिक परेशानी में रहेगा।
3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ मंगल होने से जातक को भूमि लाभ होगा पर भूमि को लेकर विवाद भी होगा। कोर्ट-केस बनेगा।
4. **राहु+बुध**–राहु के साथ बुध जातक पराक्रमी बनाएगा।। पर मित्र दगा देंगे।
5. **राहु+गुरु**–राहु के साथ गुरु जातक को विद्यावान एवं भाग्यशाली बनाएगा।
6. **राहु+शुक्र**–राहु के साथ शुक्र जातक को धनवान तो बनाएगा पर जीवनसाथी को लेकर बदनामी भी होगी।
7. **राहु+शनि**–राहु के साथ शनि जातक को उद्योगपति बनाएगा पर उतार-चढ़ाव बहुत आएगा।

एकादश भाव में राहु का उपचार–

1. भंगी या निम्न वर्ग के व्यक्ति को कभी-कभी खैरात देना। उनके जरूरत की वस्तु भेंट करना।
2. रात को आराम करने की जगह पर शक्कर की बोरी या सौंफ कायम रखने से राहु का अशुभफल नष्ट होगा।
3. राहु शन्ति प्रयोग करें।

मेषलग्न में राहु की स्थिति द्वादश स्थान में



मेषलग्न के द्वादश स्थान में राहु मीन राशि का होगा। मीन राशि द्विस्वभाव राशि व जलचर है। ऐसा जातक बहुत बड़े परिवार को पालने वाला, धनवान व सुखी होगा। रात को आराम से सोने वाला, गुप्त विद्याओं (तन्त्र-साधना) का जानकार होगा। मित्रों एवं परिजन के शुभ कार्यों पर रुपया खर्च करने वाला, व्यावहारिक ज्ञान से सम्पन्न, बुद्धिमान एवं विवेकी व्यक्ति होगा। ऐसे जातक को 'नींद' में कमी महसूस होगी। यदि अन्य अशुभ ग्रहों का प्रभाव लग्न या चन्द्रमा पर हुआ तो जातक की कल्पना का अन्त दु:खद होगा।

निशानी–असल शेखचिल्ली। पांव पर काले रंग का तिल व दाग होगा। अथवा मकान के आखिर में अंधेरा कमरा होगा। जीवन संघर्षमय रहेगा।

अनुभव–ऐसे जातक की दुष्टों से मैत्री होती है तथा सज्जनों से परमशत्रुता निरन्तर बनी रहती है। राहु अशुभ हो तो प्राय: नेत्ररोग एवं पैर में जख्म होता है। मामा की मृत्यु होती है। घर में एक बार चोरी अवश्य होती है। बारहवें स्थान पर मीन का राहु आध्यात्म ज्ञान एवं संन्यास के लिए शुभ है। जातक का रुपया फालतू कार्यों में खर्च होगा।

दशा–'भोजसंहिता' के अनुसार राहु की दशा अनिष्ट फल देगी। यात्रा में नुकसान सम्भव है। शत्रु अचानक वार करेंगे। यदि गुरु की स्थिति इस कुण्डली में शुभ हो तो राहु की दशा मिश्रित फल देगी। गुरु की खराब स्थिति दशा को और बदतर बनाएगी। ऐसी दशा में राहु और गुरु दोनों की शान्ति के उपाय करने होंगे।

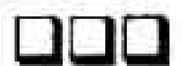
राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+सूर्य**–राहु के साथ **'विद्याभंग योग'** बनाएगा। ऐसे जातक को विद्या में आधा, संतान में बाधा आएगी।
2. **राहु+चन्द्र**–राहु के साथ चन्द्र सुख में बाधा पंहुचेगा। जातक चिंताग्रस्त रहेगा।
3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ मंगल बारहवें **'लग्नभंग योग'** बनाता है। जातक भूमि संबंधी विवाद से भ्रमित होगा।

4. **राहु+बुध**–राहु के साथ बुध बारहवें '**पराक्रमभंग योग**' बनाता है। जातक का पराक्रम भंग होगा।
5. **राहु+गुरु**–राहु के साथ गुरु '**विपरीतराज योग**' बनाएगा। जातक धनवान होगा पर फिज़ूलखर्च होगा।
6. **राहु+शुक्र**–राहु के साथ शुक्र '**विलम्बविवाह योग**' एवं '**धनहीन योग**' बनाता है। ऐसा जातक आर्थिक संघर्ष से त्रस्त रहता है।
7. **राहु+शनि**–राहु के साथ शनि '**लाभभंग योग**' बनाता हो जातक को व्यापार-व्यवसाय में नुकसान होगा एवं व्यर्थ की यात्राएं निरर्थक साबित होगी। इसकी कल्पना की दु:खान्त त्रासदी होगी। आंखों में मोतियाबिंद होगा।

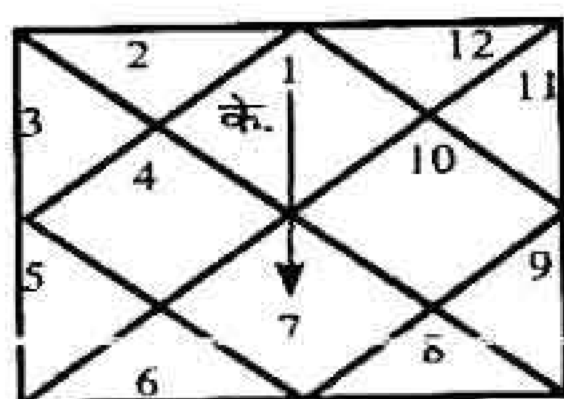
द्वादश भाव में राहु का उपचार–

1. आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिए अपनी आय का कुछ हिस्सा पुत्री, बहन, बुआ, भानजी पर खर्च करें।
2. लाल कपड़े की थैली में सौंफ डालकर सिलाई कर ले। यह थैली सिरहाने रखे तो बुरे स्वप्न समाप्त होंगे। राहु का भार मिटेगा।
3. राहु का भार मिटेगा। रसोई में बैठकर खाना खाने से राहु का अशुभ प्रभाव नष्ट हो जाता है।
4. राहु कवच का पाठ करें।
5. राहु का तांत्रिक हवन करें।



मेषलग्न में केतु की स्थिति

मेषलग्न में केतु की स्थिति प्रथम स्थान में



मेषलग्न के प्रथम स्थान में केतु मेष राशि का होकर मंगल के घर में होगा। ऐसा जातक धनवान होता है। तरक्की अधिक तबदीली कम, पिता का पहला पुत्र, भाइयों में बड़ा होगा। लम्बी यात्राएं करने वाला, पिता एवं गुरु से लाभ पाने वाला सुखी जातक होता है। लग्न में केतु व्यक्ति को कृतघ्न बनाता है। ऐसा जातक मामा (बांधवों) को तकलीफ पहुंचाता है।

निशानी–हर समय बच्चे बनाने वाला। पिता के साथ रहने वाला। अथवा चेहरे (सिर) पर शहद जैसे रंग का तिल होता है।

अनुभव–सूर्य-मंगल और गुरु केतु के मित्र हैं। केतु की उच्चराशि धनु, नीच राशि मिथुन है। कई विद्वान केतु की उच्चराशि वृश्चिक मानते हैं क्योंकि यह 'कुजवत्' काम करता है। केतु 'ध्वजा' को कहते हैं फलत: केतु कीर्ति का प्रतीक है। यश देने वाला ग्रह है। यह राहु जितना अशुभ नहीं होता है। लग्न में केतु होने के कारण 'भोज संहिता' के अनुसार आगे बढ़ने की महत्वाकांक्षा प्रतिपल बनी रहेगी।

दशा–केतु की दशा शुभफल देगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

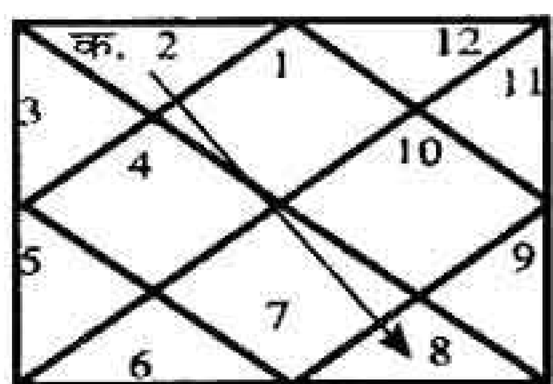
1. **केतु+सूर्य**–यहां केतु के साथ सूर्य उच्च का होकर **'रविकृत राजयोग'** बनाएगा। ऐसा जातक तेजस्वी व यशस्वी होगा। सरकारी में ऊंचा पद प्राप्त करेगा।
2. **केतु+चन्द्र**–यहां केतु के साथ चन्द्रमा माता को बीमार करेगा।
3. **केतु+मंगल**–यहां केतु के साथ मंगल होने से **'रुचक योग'** बनेगा। ऐसा जातक राजा के समान पराक्रमी होगा।
4. **केतु+बुध**–यहां केतु के साथ बुध जातक को पराक्रमी बनाएगा।
5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ गुरु जातक की प्रतिष्ठा बढ़ाएगा।

6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ शुक्र जातक को सुन्दर पत्नी देगा।
7. **केतु+शनि**–यहां केतु के साथ शनि नीच का होगा। जातक हठी व लड़ाकू होगा।

प्रथम भाव में केतु का उपचार–

1. केतु के तांत्रिक मंत्र के एक लाख सत्रह हजार जा कर, दशांश हवन, कुशा, तिल, कस्तूरी व कपूर से करें।
2. शनिवार के दिन काले कपड़े का दान करें।

मेषलग्न में केतु की स्थिति द्वितीय स्थान में



मेषलग्न में केतु द्वितीय स्थान पर होने से 'वृष राशि' का होगा। वृष राशि पृथ्वीसंज्ञक, स्थिर स्वभाव की है। ऐसा जातक राजदरबार (सरकार) में इज्जत-सम्मान एवं धन पाने वाला होता है। ऐसे जातक की छोटी आयु में किस्मत चमकती है एवं कमाना शुरू कर देता है। जातक दूसरों की नेकी को याद करने वाला कृतज्ञ होता है तथा बिना मांगे ही दूसरों की सहायता करने में रुचि रखता है। ऐसा व्यक्ति प्राय: यात्रा के द्वारा धनार्जन करने वाला, सैल्समैन, कमीशन ऐजेन्ट के रूप में स्थापित होता है।

निशानी–हुक्मरान। ठोड़ी (हिचकी) के पास शहद जैसे रंग का तिल या दाग होगा।

अनुभव–केतु धनस्थान में है। भोज संहिता के अनुसार ऐसे जातक को धन कमाने की तीव्र इच्छा जीवन पर्यन्त बनी रहेगी। फलादेश का सूत्र यह है कि केतु राक्षस का धड़ (शरीर) है। राहु राक्षस का सिर है। इसे 'ड्रेगन हैड' और केतु 'ड्रेगन टेल' कहते हैं। सिर (राहु) कुण्डली के जिस भाव (स्थान) में होगा उस भाव को विकृत करेगा। दूसरों शब्दों में उस भाव के शुभ फल से जातक को वंचित करेगा। परन्तु केतु शरीर है यह तड़फ रहा है तथा सिर से जुड़ने के लिए तीव्र उत्कण्ठा लिए हुए है। फलत: जन्मकुण्डली के जिस भाव (स्थान) में केतु इस भाव के शुभफल को पाने के लिए जातक जीवन पर्यन्त तड़पता रहेगा।

दशा–केतु की दशा शुभफल देगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

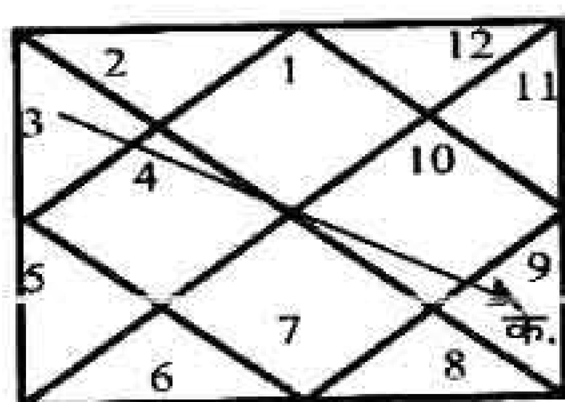
1. **केतु+सूर्य**–यहां केतु के साथ सूर्य विद्या में बाधा पंहुचाएगा।
2. **केतु+चन्द्र**–यहां केतु के साथ चन्द्रमा उच्च का जातक को धनवान बनाएगा।
3. **केतु+मंगल**–यहां केतु के साथ मंगल जातक को खर्चीले स्वभाव का एवं मुहफट व्यक्ति बनाएगा।
4. **केतु+बुध**–यहां केतु के साथ बुध जातक को दंत रोग देगा।

5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ गुरु जातक को अत्यधिक खर्चीले स्वभाव का बनाएगा।
6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ शुक्र स्वगृही होगा जातक विवाह के बाद धनी होगा।
7. **केतु+शनि**–यहां केतु के साथ शनि होने से जातक की रुचि षड्यंत्रकारी कार्यों में होगी।

द्वितीय भाव में केतु का उपचार–

1. नवरत्नजड़ित श्रीयंत्र स्वर्ण में धारण करें।
2. सुबह-शाम श्री सूक्त के नित्य पाठ करें।
3. केतु शांति का प्रयोग करें।

मेषलग्न में केतु की स्थिति तृतीय स्थान में



मेषलग्न के तृतीय स्थान में केतु मिथुन राशि में होगा। मिथुन राशि वायुतत्व वाली एवं द्विस्वभाव राशि होती है। ऐसा जातक सबको तारने वाला भाई-बहनों के लिए शुभ होता है। ऐसे जातक के स्वभाव की एक विशेषता यह है अपने ऊपर की गई नेकी को याद रखता है और बुराई को भूल जाता है। ऐसा जातक उच्च पदाधिकारी एवं पराक्रमी होता है। यदि कोई व्यवधान न हो तो एक या तीन नर सन्तान से युक्त होता है।

निशानी–टुन-टुन करते रहने वाला कुत्ता। ऐसे जातक के दाएं (बाजू) हाथ पर शहद जैसे रंग का तिल या दाग होता है।

अनुभव–भोज संहिता के अनुसार तृतीय स्थान में केतु होने से जीवन पर्यन्त यश (कीर्ति) प्राप्ति के लिए तड़फता (लालायित) रहेगा। केतु की नीच राशि मिथुन है। फिर यहां शुभफल देगा।

दशा–केतु की दशा शुभ होगी। कीर्तिदायक होगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

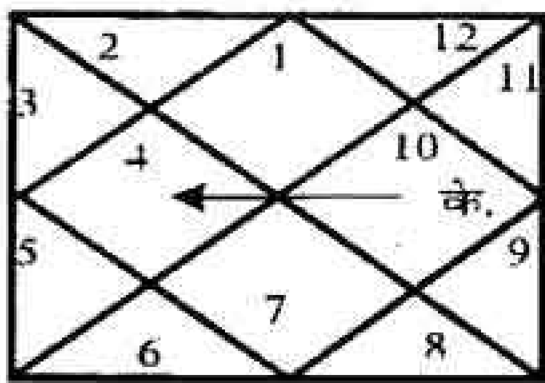
1. **केतु+सूर्य**–यहां केतु के साथ सूर्य जातक के मित्र पराक्रमी होंगे।
2. **केतु+चन्द्र**–यहां केतु के साथ चन्द्रमा होने से जातक स्वजन ही उसके शत्रु होंगे।
3. **केतु+मंगल**–यहां केतु के साथ मंगल जातक को भाइयों से लाभ होगा।
4. **केतु+बुध**–यहां केतु के साथ बुध जातक को लेखन व अन्य कार्यों में यश दिलाएगा।
5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ गुरु जातक को भाग्यशाली व्यक्ति बनाएगा।
6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ शुक्र जातक को स्त्री-मित्रों से लाभ दिलाएगा।
7. **केतु+शनि**–यहां केतु के साथ शनि होने से जातक का पराक्रम व्यापार द्वारा बढ़ाएगा।

तृतीय भाव में केतु का उपचार–

1. भाई-बहनों के साथ विनम्र एवं सद्-व्यवहार बनाए रखें।

2. अजनबी लोगों व मित्रों पर अत्यधिक भरोसा न करें।
3. अश्वगंधा की जड़ अभिमंत्रित कर ताबीज में धारण करने से यश की प्राप्ति होगी।
4. केसर-चंदन का तिलक नाभि व मस्तिष्क पर लगावें तो किस्मत खुलेगी।

मेषलग्न में केतु की स्थिति चतुर्थ स्थान में



मेषलग्न के चतुर्थ स्थान में केतु कर्क राशि का होगा। कर्क राशि जलसंज्ञक एवं चर राशि है। जातक तीव्रगामी होगा, धनवान होगा, उच्च वाहन एवं मकान सुख से सम्पन्न होगा। जातक का जन्म माता के लिए शुभ होगा। जातक दृढ़ निश्चयी होगा। परन्तु प्रथम सन्तति विलम्ब से होगी। जातक पिता एवं गुरु का सेवक होगा।

निशानी–बच्चों को डराने वाला कुत्ता। जातक की छाती पर शहद जैसे रंग का तिल या दाग होगा।

अनुभव–'भोज संहिता' के अनुसार चतुर्थ भाव में कर्क राशिगत केतु व्यक्ति को सुख प्राप्ति, भौतिक ऐश्वर्य एवं वस्तुओं की प्राप्ति हेतु तीव्र रूप से लालायित जीवन पर्यन्त बनाए रखता है।

दशा–केतु की दशा शुभफल देगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

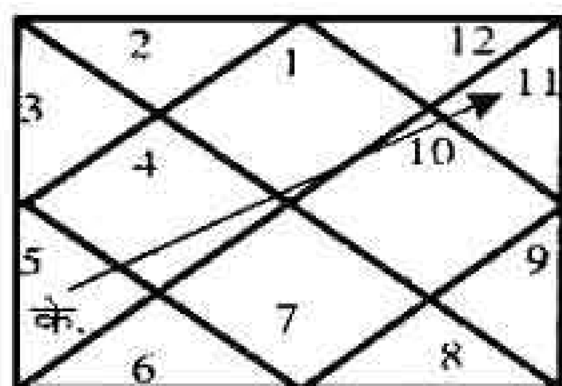
1. **केतु+सूर्य**–यहां केतु के साथ सूर्य वाहन दुर्घटना का भय देगा।
2. **केतु+चन्द्र**–यहां केतु के साथ स्वगृही चन्द्रमा माता को सुख देता है पर माता को जल या श्वास की बीमारी होगी।
3. **केतु+मंगल**–यहां केतु के साथ मंगल जातक को साहसी व लड़ाकू बनाएगा।
4. **केतु+बुध**–यहां केतु के साथ बुध जातक का झगड़ा मामा, मातृपक्ष से कराएगा।
5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ गुरु उच्च का **'हंस योग'** बनाएगा। ऐसा जातक राजा के समान पराक्रमी व यशस्वी होगा।
6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ शुक्र होने से जातक परिवार का नाम रोशन करेगा। उसके पास उत्तम वाहन होगा।
7. **केतु+शनि**–केतु के साथ शनि होने से जातक के पास उत्तम मकान होगा।

चतुर्थ भाव में केतु का उपचार–

1. केतु अष्टोत्तर शत नामावली का हवनात्मक प्रयोग करें।
2. दुर्घटना से बचने के लिए वाहन पर मारुति यंत्र लगावें।
3. शनिवार के दिन चितकबरे कुत्तों को मीठी रोटी खिलावें।

4. गुरुवार के दिन कुलपुरोहित को पीले वस्त्र व पीला भोजन भेंट करें।

मेषलग्न में केतु की स्थिति पंचम स्थान में



मेषलग्न के पंचम स्थान में केतु सिंह राशि में होगा। सिंह राशि अग्निसंज्ञक एवं स्थिर स्वभाव की राशि है जातक धार्मिक विचारों वाला गुरुभक्त एवं आस्तिक होगा। जातक धनवान होगा एवं अधिक सन्तति युक्त होगा परन्तु एक सन्तति की अपरिपक्व अवस्था में मृत्यु होगी।

अनुभव–'भोज संहिता' के अनुसार पंचम भावस्थ सिंहराशिगत केतु व्यक्ति को जीवन पर्यन्त सुयोग्य सन्तति प्राप्ति हेतु लालायित रखता है। जातक ज्ञान पिपासु होता है तथा प्रतिपल उत्तम ज्ञान की प्राप्ति हेतु लालायित (उत्कण्ठ) रहता है।

निशानी–अपनी रोटी के टुकड़े के लिए गुरु का निगरान। जातक के पेट या पीठ पर शहद जैसे रंग का तिल होगा।

दशा–केतु की दशा शुभ फल देगी।

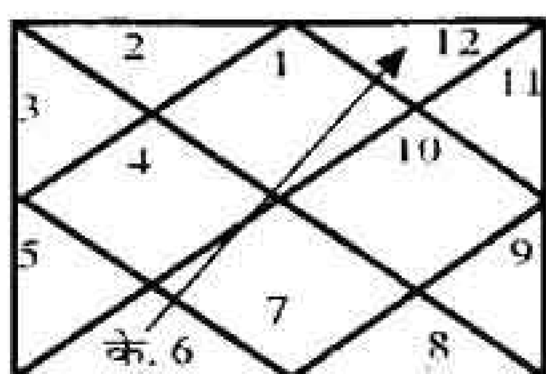
केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+सूर्य**–यहां केतु के साथ स्वगृही सूर्य जातक को विद्या में तेजस्वी बनाएगा। जातक पुत्रवान होगा पर पुत्र विलम्ब से होगा।
2. **केतु+चन्द्र**–केतु के साथ चन्द्रमा जातक को मानसिक चिन्ता कराएगा। जातक के विद्या में बाधा आएगी।
3. **केतु+मंगल**–यहां केतु के साथ मंगल जातक को तीन पुत्र देगा जबकि एकाध गर्भपात संभव है।
4. **केतु+बुध**–यहां केतु के साथ बुध जातक को उत्तम बुद्धि विद्या देगा पर शैक्षणिक उपाधि में बाधा आएगी।
5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ गुरु व्यक्ति को उत्तम विद्या ज्ञान देगा। शैक्षणिक उपाधि में कमी रहेगी।
6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ शुक्र व्यक्ति को कन्या सन्तति देगा।
7. **केतु+शनि**–केतु के साथ शनि होने से कन्या सन्तति देगा एवं जातक व्यापारप्रिय होगा।

पंचम भाव में केतु का उपचार–

1. पितृदोष या कालसर्पयोग की शांति करवाए।
2. केतु शांति प्रयोग करें।
3. केतु के वैदिक मंत्रों का हवनात्मक प्रयोग करें तथा केतु सम्बंधी वस्तुओं का दान करें।

मेषलग्न में केतु की स्थिति षष्टम स्थान में



मेषलग्न में षष्टम स्थान में केतु कन्या राशि का होगा। कन्या राशि पृथ्वी संज्ञक, द्विस्वभाव राशि है। जातक का जन्म ननिहाल के लिए शुभ होगा। जातक जन्म स्थान से दूरस्थ प्रदेशों-विदेशों में उन्नति पाने वाला होता है। जातक धनवान होता है एवं शत्रुओं पर विजय पाने में सक्षम होता है। ऐसा जातक उत्साही एवं सेवा करने की भावना से ओत-प्रोत व्यक्ति होता है।

अनुभव–'भोज संहिता' के अनुसार छठे भाव में स्थित कन्या राशि गत केतु व्यक्ति को जीवनपर्यन्त शत्रुओं के नाश हेतु लालायित रखता है। शत्रु नहीं हो तो रोग अवश्य होगा। जातक रोग की समूल निवृत्ति हेतु सदैव प्रयत्नशील रहेगा।

निशानी–दो रंगी दुनियां जातक की नाभि के पास शहद जैसे रंग का तिल या दाग होगा। ऐसा जातक कुत्तों से डरता है।

दशा–केतु की दशा शुभफल देगी। जातक चेष्टावान बना रहेगा।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

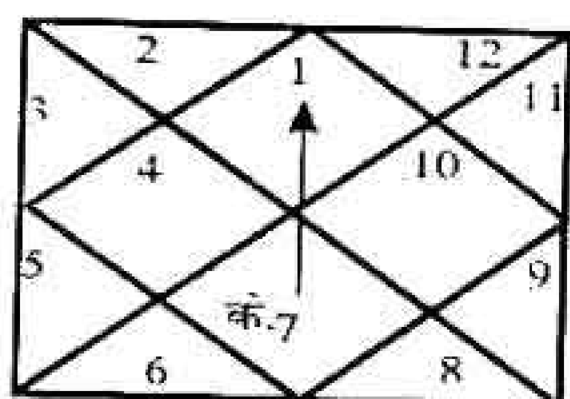
1. **केतु+सूर्य**–यहां केतु के साथ सूर्य उत्तम विद्या एवं उत्तम सन्तति दोनों में बाधक है।
2. **केतु+चन्द्र**–यहां केतु के साथ चन्द्रमा माता की अल्पायु कराता है। जातक को मूत्ररोग होगा।
3. **केतु+मंगल**–यहां केतु के साथ मंगल **'लग्नभंगयोग'** बनाता है। जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा।
4. **केतु+बुध**–यहां केतु के साथ बुध **'पराक्रमभंग योग'** बनाता है। साथ ही **'विपरीत राजयोग'** के कारण जातक धनवान होगा।
5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ गुरु **'भाग्यभंग योग'** बनाता है ऐसा जातक भौतिक सुख-सुविधाओं व ऐश्वर्य से सम्पन्न होगा पर जीवन सघंर्षशील रहेगा।
6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ शुक्र **'विलम्बविवाह'** का योग कराता है। जातक को जीवनसाथी का सुख कम ही प्राप्त होगा।
7. **केतु+शनि**–केतु के साथ शनि होने से जातक के जीवन में व्यापार से दो बार बदलाव कराएगा।

षष्टम भाव में केतु का उपचार–

1. केतु कवच का नित्य पाठ करें।
2. काला कुत्ता पालें या शनिवार के दिन काले कुत्ते को दूध रोटी खिलावें।
3. लहसुन या प्याज शनिवार से शुक्रवार छः दिन तक जल में प्रवाहित करें।

4 अपनी बहन, बुआ, पुत्री, मासी, दोहितें, भाणजे को खुश रखें।

मेषलग्न में केतु की स्थिति सप्तम भाव में



मेषलग्न के सप्तम भाव में केतु तुला राशि में होगा। तुला राशि चर राशि एवं वायुसंज्ञक है। ऐसा जातक साहसी होता है तथा शेर से मुकाबला करने की शक्ति रखता है। ऐसे जातक के जितने बहन-भाई होंगे उतना ही सन्तानें होंगी। 40 वर्ष की आयु तक धन बढ़ता रहेगा। जातक के पास सब कुछ होते हुए भी रोता रहेगा। इससे उसकी सन्तान पर बुरा असर होगा।

अनुभव—भोज संहिता के अनुसार ऐसा जातक सुन्दर पत्नी की प्राप्ति हेतु लालायित रहेगा। यदि जातक विवाहित होगा तो अपने जीवनसाथी से विविध प्रकार के सुख-ऐश्वर्य की प्राप्ति होते इच्छातुर रहेगा। पर उसकी इच्छा तृप्त नहीं होगी।

निशानी—शेर का मुकाबला करने वाला कुत्ता। जातक के गुप्तांग पर शहद जैसे रंग का तिल व दाग होता है।

दशा—केतु की दशा अच्छा फल देगी।

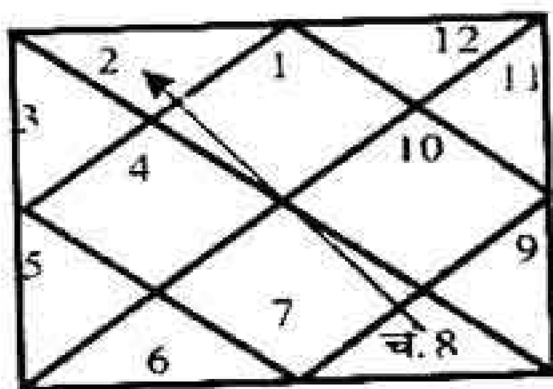
केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **केतु+सूर्य**—यहां केतु के साथ सूर्य एक हजार राजयोग नष्ट करेगा। जातक के वैवाहिक सुख में कमी रहेगी।
2. **केतु+चन्द्र**—यहां केतु के साथ चन्द्रमा माता को कष्टमय जीवन देगा।
3. **केतु+मंगल**—यहां केतु के साथ मंगल कुण्डली को **'डबल मंगलीक'** बनाएगा। प्रथमत: जातक का विवाह देरी से होगा। फिर गृहस्थ सुख में कमी रहेगी।
4. **केतु+बुध**—केतु के साथ बुध जातक का जीवनसाथी बुद्धिमान व सुन्दर देगा।
5. **केतु+गुरु**—केतु के साथ गुरु जातक को आध्यात्मक विद्या का जानकार एवं जीवनसाथी को वफादार बनायेगा।
6. **केतु+शुक्र**—केतु के साथ शुक्र **'मालव्य योग'** बनायेगा। ऐसा जातक राजा के समान पराक्रमी एवं ऐश्वर्यशाली होगा।
7. **केतु+शनि**—केतु के साथ शनि **'शश योग'** बनाएगा। ऐसे जातक का जीवन साथी शक्तिशाली होगा। जातक स्वयं राजा के समान ऐश्वर्यशाली होगा।

सप्तम भाव में केतु का उपचार—

1. केतु विशंति नाम का पाठ करें।
2. पूर्ण वैवाहिक सुख की प्राप्ति हेतु अष्टोतरशत नामावली का हवनात्मक प्रयोग करें।

मेषलग्न में केतु की स्थिति अष्टम स्थान में



मेषलग्न के अष्टम स्थान में केतु वृश्चिक राशि का होगा। वृश्चिक राशि जलसंज्ञक स्थिर स्वभाव की राशि है। जातक धनवान होगा पर जातक का भाई निसन्तान होगा। जातक उस भाई को सन्तान का दान देगा। जातक की स्त्री सुन्दर सुशील एवं शुभविचारों वाली होगी। परन्तु 34 वर्ष बाद जातक दूसरा विवाह कर सकता है।

अनुभव–'भोज संहिता' के अनुसार अष्टमभावस्थ वृश्चिक का केतु व्यक्ति को लम्बी आयु की प्राप्ति हेतु लालायित रखेगा। जातक धन प्राप्ति हेतु भी जीवन पर्यन्त चेष्टा करता रहेगा।

निशानी–मौत के यम को पहले देख लेने वाला कुत्ता। जातक के गुप्तांग या गुदा पर शहद जैसे रंग का तिल या दाग होगा।

दशा–केतु की दशा शुभफल देगी। केतु वृश्चिक राशि का होने से 'कुजवत्' फल देगा। अतः इस कुण्डली में मंगल की स्थिति देखने बाद ही केतु की दशा के सही फल का निरूपण होगा।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

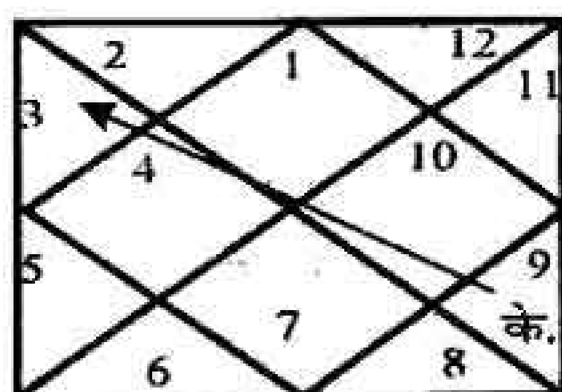
1. **केतु+सूर्य**–केतु के साथ सूर्य 'विद्या में बाधा' एवं पुत्र संतान में बाधा उत्पन्न करेगा।
2. **केतु+चन्द्र**–केतु क साथ चन्द्रमा माता के सुख में बाधक है। जातक के जीवन में शल्य चिकित्सा जरूर होगी।
3. **केतु+मंगल**–केतु के साथ मंगल स्वगृही होने से **'विपरीत राजयोग'** बनेगा। जातक के पास उत्तम वाहन, उत्तम भवन होगा। जातक समाज का प्रभावशाली व्यक्ति होगा।
4. **केतु+बुध**–केतु के साथ बुध **'विपरीत राजयोग'** के कारण सभी प्रकार के भौतिक सुख देगा। परन्तु प्रतिष्ठा भंग होने का भय रहेगा।
5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ गुरु **'विपरीत राजयोग'** के कारण जातक को भौतिक सुखों से परिपूर्ण करेगा।
6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ शुक्र विलम्ब विवाह योग बनाता है। जीवनसाथी को गुप्त रोग रहेगा।
7. **केतु+शनि**–केतु के साथ शनि **'व्यापार भंग योग'** बनाता है। जातक को वैवाहिक सुख देरी से मिलेगा।

अष्टम भाव में केतु का उपचार–

1. केतु कवच का नित्य पाठ करें।
2. कान छिदवा कर सोने का आभूषण पहनें।

3. काला कुत्ता पाले या उसकी सेवा करें।
4. दहेज में प्राप्त चारपाई पर शयन करने का नियम बन पावे तो केतु अनुकूल होगा।
5. दोरंगा कम्बल धर्मस्थान में भेंट करे तो शुभ रहेगा।

मेषलग्न में केतु की स्थिति नवम् स्थान में



मेषलग्न के नवम स्थान में केतु धनु राशि में होगा। धनु राशि अग्निसंज्ञक द्विस्वभाव राशि है जहां केतु स्वगृही कहलाएगा। ऐसा जातक पिता का आज्ञाकारी पुत्र साबित होगा। जन्मस्थान के दूरस्थ प्रदेशों के कमाएगा, उच्चाधिकारी होगा पर समाज का सेवक होगा। जातक बहुत तरक्की करेगा। इन पर इष्टकृपा गुरु की कृपा विशेष होगी। ऐसे जातक के आशीर्वाद से निसंतान को भी सन्तति होगी।

अनुभव–भोज संहिता के अनुसार धनु राशिगत नवम भाव में स्थित केतु वाला जातक जीवनपर्यन्त सही भाग्योदय हेतु लालायित रहेगा। जातक पराक्रम प्राप्ति हेतु चेष्टवान बना रहेगा।

निशान–बाप का हुक्म मानने वाला बेटा। ऐसे जातक की जंघा पर शहद जैसे रंग का तिल या दाग होता है।

दशा–केतु धनुराशि में होने से गुरुवत् फल देगा। अत: इस कुण्डली में गुरु की स्थिति का अध्ययन करने के बाद केतु की दशा की सही फलावट हो सकेगी क्योंकि राहु और केतु का कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं होता ये जिस राशि व ग्रह के साथ बैठे हैं 'तत्वत्' हो जाते हैं। वैसे केतु की दशा यहां शुभ फल देगी। जातक का भाग्योदय कराएगी।

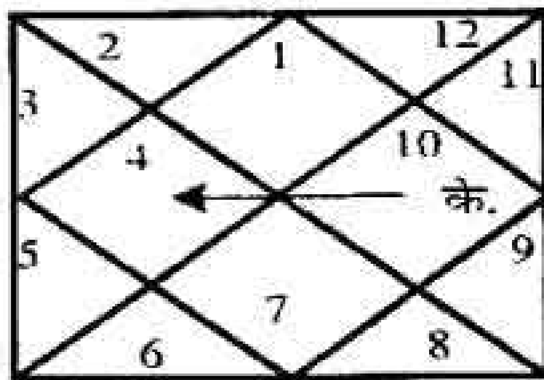
केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+सूर्य**–केतु के साथ सूर्य जातक को महान् पराक्रमी एवं आध्यात्मिक विद्या का जानकार बनाता है।
2. **केतु+चन्द्र**–केतु के साथ चन्द्रमा जातक को माता का सुख देगा परन्तु मामा से विचार नहीं मिलेगे।
3. **केतु+मंगल**–केतु के साथ मंगल जातक को पैतृक सम्पत्ति दिलायेगा पर थोड़ा विवाद होगा।
4. **केतु+बुध**–केतु के साथ बुध जातक को प्रखर पराक्रमी बनायेगा। जातक बुद्धिशाली व चतुर दिमाग वाला होगा।
5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ गुरु जातक को राजा तुल्य वैभवशाली बनायेगा।
6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ शुक्र होने से जातक की किस्मत विवाह के बाद चमकेगी।
7. **केतु+शनि**–केतु के साथ शनि जातक को व्यापार प्रिय बनायेगा। जातक प्राय: ठेकेदार होगा।

नवम् भाव में केतु का उपचार–

1. रंग-बिरंगे कपड़े न पहनें।
2. तिल, तैल, काले-नीले पुष्प, कस्तूरी व काले वस्त्रों का दान शनिवार के दिन करें।
3. केतु शान्ति का प्रयोग करें।

मेषलग्न में केतु की स्थिति दशम स्थान में



मेषलग्न के दशम स्थान में केतु मकर राशि का होगा। मकर राशि पृथ्वी तत्त्व प्रधान एवं चरसंज्ञक है। ऐसा जातक नौकर-चाकर सेवकों से युक्त सुखी व्यक्ति होता है। जातक खेलों का शौकीन एवं दक्ष खिलाड़ी होगा। जातक के भाई-बन्धु इसकी दौलत को बरबाद करेंगे फिर भी जातक उनको माफ करता रहेगा। उनकी मदद करता रहेगा। जातक चाल-चलन का नेक एवं साफ दिल होगा।

अनुभव–'भोज संहिता' के अनुसार मकर राशिगत दशमस्थ केतु जातक को राज्य (सरकार) में पद प्राप्ति हेतु लालायित बनाए रखता है। अथवा सरकार से ठेका, वजीफा, सम्मान प्राप्ति हेतु जीवन भर प्रयत्नशील रहेगा।

निशान–चुपचाप अपने रास्ते पर चलने वाला मौकाबाज। ऐसे जातक के घुटने पर शहद जैसे रंग का तिल या दाग होता है।

दशा–केतु की दशा शुभ रहेगी। केतु यहां शनि तुल्य फल देगा अत: शनि की स्थिति का अध्ययन करने के बाद ही केतु की दशा का सही फलादेश हो पाएगा।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

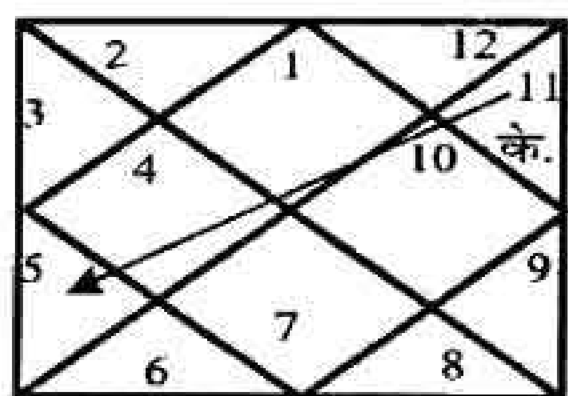
1. **केतु+सूर्य–**केतु के साथ सूर्य जातक को राजसुख देगा। उत्तम विद्या देगा।
2. **केतु+चन्द्र–**केतु क साथ चन्द्रमा माता की सम्पत्ति दिलायेगा। वाहन का सुख दिलायेगा।
3. **केतु+मंगल–**केतु के साथ उच्च का मंगल **'रुचक योग'** की सृष्टि करेगा। जातक राजा तुल्य पराक्रमी व ऐश्वर्यशाली होगा।
4. **केतु+बुध–**केतु के साथ बुध जातक को बुद्धिशाली एवं परिवार का शुभ चिन्तक बनायेगा।
5. **केतु+गुरु–**केतु के साथ गुरु का होगा ऐसा जातक आध्यात्मक राह का पथिक एवं धर्मध्वज होगा।
6. **केतु+शुक्र–**केतु के साथ शुक्र जातक को उत्तम वाहन मुख देगा। नौकरी विवाह के बाद लगेगी।

7. **केतु+शनि**–केतु के साथ शनि **'शश योग'** बनायेगा। ऐसा जातक माता के समान पराक्रमी, ऐश्वर्यशाली एवं प्रतिष्ठित होगा।

दशम भाव में केतु का उपचार–

1. चितकबरे कुत्ते को सात दिन तक दूध-रोटी खिलावें।
2. चितकबरी गाय को चार खिलावे। इससे अचानक आई विपत्ति दूर होगी।
3. राजयोग की प्राप्ति अभीष्ट हो तो शनिवार के दिन अभिमंत्रित जल से औषध स्नान करें।

मेषलग्न में केतु की स्थिति एकादश स्थान में



मेषलग्न के एकादश स्थान में केतु कुम्भ राशि का होगा। कुम्भ राशि वायु तत्त्व प्रधान एवं स्थिर स्वभाव की राशि है। जातक राजदरबार में इज्जत-सम्मान पाने वाला, आने वाले समय को ध्यान में रखकर प्लानिंग के साथ काम करने वाला, धनवान, अच्छी किस्मत वाला, लम्बी यात्रा से लाभ पाने वाला होता है। प्रथम सन्तति प्राय: विलम्ब से होती है।

अनुभव–'भोज संहिता' के अनुसार कुम्भ राशिगत एकादशस्थ केतु जातक को सदैव लाभ प्राप्ति हेतु लालायित रखेगा।

निशान–गीदड़ स्वभाव कुत्ता। जातक के पिंडलियों, टांगों पर शहद जैसे रंग का तिल या दाग होगा। न संतान मुर्दा पैदा होगी।

दशा–केतु की दशा शुभ फल देगी। केतु शनि की मूलत्रिकोण कुम्भ राशि में है अत: कुण्डली में शनि की शुभ-अशुभ स्थिति का अध्ययन करने के बाद केतु की दशा पर सही फलादेश हो सकेगा।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

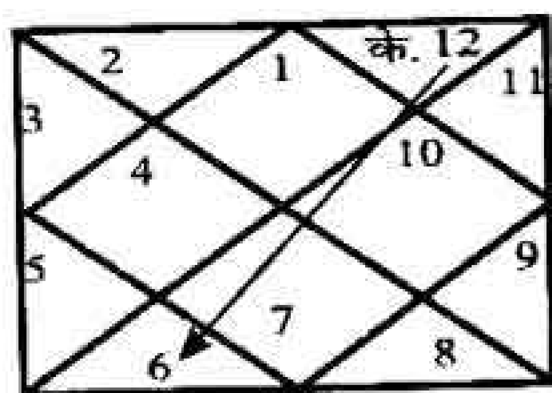
1. **केतु+सूर्य**–केतु के साथ सूर्य जातक को उच्च शैक्षणिक उपाधि दिलायेगा।
2. **केतु+चन्द्र**–केतु के साथ चन्द्रमा माता की सम्पत्ति देगा। प्रखर कल्पनाशक्ति देगा।
3. **केतु+मंगल**–केतु के साथ मंगल को पुरुषार्थ का लाभ देगा।
4. **केतु+बुध**–केतु के साथ बुध जातक को प्रखर बुद्धिशाली बनायेगा।
5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ गुरु जातक को सौभाग्यशाली बनायेगा।
6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ शुक्र जातक को उत्तम विद्या, सम्मान एवं स्त्री सुख देगा।
7. **केतु+शनि**–केतु के साथ शनि जातक को उद्योगपति बनायेगा। जातक व्यापार प्रिय होगा।

एकादश भाव में केतु का उपचार–

1. घर में छिपकली न घूमने दे।
2. लकड़ी से बनी चारपाई या पलंग दान करें।

3. अश्वगंधा की जड़ को अभिमंत्रित कर लॉकेट में धारण करें।
4. मृत संतान यदि पैदा होती हो तो सफेद मूली स्त्री के सिरहाने रखकर, शनिवार के सवेरे धर्म स्थान में दान देने से नर संतान खुशहाल रहेगी।

मेषलग्न में केतु की स्थिति द्वादश स्थान में



मेषलग्न में द्वादश स्थान में केतु मीन राशि का होता है। मीन राशि जलसंज्ञक एवं द्विस्वभाव राशि होती है। ऐसा जातक जमीन-जायदाद का स्वामी, जातक का गृहस्थ जीवन सुखी होगा। जातक ऐश्वर्यवान व धनवान होगा। जातक सन्तान से सुख पाने वाला, शत्रुओं पर विजय पाने वाला पराक्रमी व्यक्ति होगा।

अनुभव–'भोज संहिता' के अनुसार मीन राशिगत द्वादशस्थ केतु जातक को नित-नूतन वस्तु की जानकारी एवं बाहरी यात्राओं हेतु लालायित रखेगा।

निशानी–ऐशो आराम जद्दी विरासत। पांव में ऐड़ी के पास शहद जैसे रंग का तिल का दाग होगा।

दशा–केतु की दशा में जातक तीर्थयात्राएं करेगा। परोपकार के कार्य करेगा। दशा शुभ रहेगी, परन्तु गुरु की स्थिति ज्यादा सटीक फलादेश में सहायक होगी।

विशेष–सत्यजातकम् अध्याय 12 श्लोक। के अनुसार केतु बारहवें जातक को अपनी दशा में धनवान बनाता है।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+सूर्य**–केतु के साथ सूर्य जातक को विद्या में, संतान में, खासकर पुत्र सुख में बाधा पहुंचाएगा।
2. **केतु+चन्द्र**–केतु क साथ चन्द्रमा जातक को माता के सुख से वंचित करेगा।
3. **केतु+मंगल**–केतु के साथ मंगल कुण्डली को **'डबल मंगलीक'** कर देगा। जातक के विवाह में विलम्ब होगा।
4. **केतु+बुध**–केतु के साथ बुध **'पराक्रमभंग योग'** बनायेगा। जातक धनवान एवं समाज का प्रभावशाली व्यक्ति होगा पर मानभंग का भय बना रहेगा।
5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ गुरु **'विपरीत राजयोग'** बनायेगा। जातक धनवान एवं ऐश्वर्यशाली होगा।
6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ शुक्र जातक को फिजूलखर्ची बनायेगा। जातक परोपकारी व दानी होगा।
7. **केतु+शनि**–केतु के साथ शनि **'व्यापारभंग योग'** बनाता है। जातक का जमा-जमाया व्यापार एक बार उखड़ेगा।

द्वादश भाव में केतु का उपचार–

1. केतु कवच का नित्य पाठ करें।
2. 12 दिन तक निरन्तु गुरुवार को शुरू करके 12 केले प्रतिदिन धर्मस्थान से भेंट करने पर केतु का अशुभत्व नष्ट होता है।
3. 12 दिन तक निरन्तर 12 बार प्रतिदिन दूध व शहद में अंगूठा भिगोकर चूसने से केतु अनुकूल होता है ऐसा लाल किताब वाले कहते हैं। केतु के तांत्रिक मंत्रों का जाप करें।
4. केतु के तांत्रिक मंत्रों का जाप करें।

❑❑❑

मंगलवार व्रत कथा

मंगल बहादुरी व साहस के देवता हैं। ये भय तथा शत्रुओं का नाश करने वाले हैं। मंगलवार का व्रत व पूजन करने से सब प्रकार के अनिष्टों से मुक्ति होती है। मंगलवार के व्रत का नियम-पूर्वक पालन करने से धन-संपत्ति की प्राप्ति होती है।

मंगल की दशा कड़ी होने, तथा मंगलदेव की शांति हेतु इस उपवास को इक्कीस मंगलवार तक किया जाता है।

मंगल का तांत्रिक मंत्र–ॐ ह्रीं श्रीं भौमाय नमः।

विधि विधान– यह व्रत मंगलवार को रखा जाता है तथा दिन में एक ही बार मीठा भोजन करना चाहिए। भोजन सूर्यास्त से पहले कर लेना चाहिए। प्रातः काल शय्या त्याग कर नित्यकर्मों से निवृत्त हो स्वच्छ वस्त्र धारण करें तत्पश्चात शुद्ध स्थान पर मंगलदेव की प्रतिमा स्थापित कर लाल चंदन, सिंदूर, लाल पुष्पों द्वारा मंगल देव की पूजा करें तथा मंगल के तांत्रिक मंत्र द्वारा इक्कीस बार जाप करें तथा व्रत कथा का पाठ करें।

व्रत कथा–एक नगर में एक ब्राह्मण दम्पत्ति रहते थे। किन्तु वे निःसन्तान थे। इसी कारण दोनों पति-पत्नी दुःखी रहते थे। पुत्र प्राप्ति की इच्छा से ब्राह्मण वन में हनुमान जी की उपासना व तपस्या करने चला गया।

ब्राह्मण की पत्नी भी प्रत्येक मंगलवार को मंगल का उपवास व पूजन करती थी। मंगलवार को व्रत के लिए वह प्रेम से भोजन पकाती तथा फिर वह निष्ठापूर्वक हनुमान जी को भोग लगाती तथा फिर श्रद्धा व प्रेम से स्वयं एक समय भोजन करती थी।

एक बार पड़ोस में कोई शादी होने के कारण ब्राह्मणी को वहां जाना पड़ गया इसलिए उस दिन ब्राह्मणी भोजन न पका सकी और सारा दिन वहीं विवाह में व्यस्त रही। घर पर भोजन न पका सकने के कारण ब्राह्मणी ने हनुमान जी को भी भोग नहीं लगाया। वह अपने मन में ऐसा प्रण करके सो गई कि अब अगले मंगलवार को ही भोग लगाकर, अन्न ग्रहण करूंगी।

वह भूखी-प्यासी छः दिन तक पड़ी रही। मंगलवार के दिन उसे मूर्च्छा आ गई। हनुमान जी उसकी लगन और निष्ठा को देखकर प्रसन्न हो गए। उन्होंने उसे दर्शन दिए और कहा– ''मैं तुमसे अति प्रसन्न हूं। मैं तुम्हें एक सुन्दर बालक देता हूं, जो तेरी बहुत सेवा किया करेगा।

सुन्दर बालक पाकर ब्राह्मणी अति प्रसन्न हुई। ब्राह्मणी ने बालक का नाम मंगल रखा। कुछ समय पश्चात ब्राह्मण वन से लौटकर आया। एक प्रसन्नचित्त सुन्दर बालक को घर में क्रीड़ा

करते देखकर, ब्राह्मण ने अपनी पत्नी से पूछा–"यह बालक कौन है?" पत्नी ने कहा–"मंगलवार के व्रत से प्रसन्न हो हनुमान जी ने दर्शन देकर मुझे यह बालक दिया है।" ब्राह्मण को पत्नी की बात पर विश्वास नहीं हुआ। उसने सोचा यह कुल्टा, व्यभिचारिणी अपनी कलुषता छिपाने के लिए बात बना रही है।

एक दिन ब्राह्मण कुएं पर पानी भरने गया तो ब्राह्मणी ने कहा कि मंगल को भी अपने साथ ले जाओ। ब्राह्मण मंगल को साथ ले गया परन्तु वह उस बालक को नाजायज मानता था इसलिए वह बालक को कुएं में डालकर पानी भरकर घर वापस आ गया। ब्राह्मणी ने ब्राह्मण से पूछा कि मंगल कहां है। तभी मंगल हंसता हुआ घर वापस आ गया। उसे वापस आया देखकर ब्राह्मण बहुत आश्चर्यचकित हो गया। उसने सोचा, अभी तो मैं इसे कुएं में धक्का देकर आया था फिर यह कहां से आ गया? रात्रि को उसे स्वप्न में हनुमान जी ने दर्शन दिए और कहा–"यह बालक मेरा दिया हुआ है। तुम अपनी पत्नी पर व्यर्थ ही लांछन क्यों लगाते हो?" ब्राह्मण को सत्य जानकर बड़ी ग्लानि हुई। उसने अपनी पत्नी से क्षमा मांगी और फिर ब्राह्मण-दम्पत्ति मंगलवार का व्रत करते हुए आनन्दपूर्वक जीवन व्यतीत करने लगे। इस प्रकार जो भी मंगलवार का व्रत रखता है, उसकी समस्त मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं और वह सब कष्टों से मुक्ति पाता है।

मंगलवार व्रत की दूसरी कथा

एक वृद्धा मंगलवार को अपना इष्टदेव मानती थी और प्रत्येक मंगलवार को व्रत रखती व मंगल देव का पूजन करती। उसका एक पुत्र था जिसका नाम मंगलिया था। मंगलवार को वह न घर लीपती न ही पृथ्वी खोदती थी। एक दिन स्वयं मंगलदेव उसकी श्रद्धा की परीक्षा लेने के लिए साधु का रूप धारण कर आए और उसके द्वार पर आकर आवाज दी। बुढ़िया घर से बाहर आई और साधु को खड़ा देख हाथ जोड़कर बोली–"महाराज क्या आज्ञा है?" साधु ने कहा–"मुझे बहुत भूख लगी है, भोजन बनाना है। इसके लिए तू थोड़ी-सी पृथ्वी लीप दे तो तेरा पुण्य होगा।" यह सुन बुढ़िया ने कहा–"महाराज आज मैं मंगलवार की व्रती हूं इसलिए मैं चौका नहीं लगा सकती। कहें तो जल का छिड़काव कर दूं। वहां पर भोजन बना लें।" साधु ने कहा–"मैं गोबर से ही लिपे चौके पर खाना बनाता हूं।" बुढ़िया ने कहा–"पृथ्वी लीपने के अलावा और कोई सेवा हो तो मैं वह करने के लिए उपस्थित हूं।" साधु ने कहा–"सोच समझकर उत्तर दो। जो कुछ भी मैं कहूंगा वह तुमको करना होगा।" बुढ़िया कहने लगी–"महाराज पृथ्वी लीपने के अलावा जो भी आप आज्ञा करेंगे उसका मैं अवश्य पालन करूंगी" बुढ़िया ने ऐसा वचन तीन बार दिया। तब साधु ने कहा–"तू अपने लड़के को बुलाकर औंधा लिटा दे, मैं उसकी पीठ पर भोजन बनाऊंगा।" साधु की बात सुनकर बुढ़िया चुप रह गई। तब साधु ने कहा–"बुला लड़के को, अब सोच-विचार क्या करती है?" बुढ़िया

'मंगलिया...मंगलिया' कहकर अपने पुत्र को पुकारने लगी। थोड़ी देर बाद उसका लड़का आ गया। बुढ़िया ने कहा–''जा बेटे तुझको साधु महाराज बुला रहे हैं।'' लड़के ने मां की बात सुनकर उसकी आज्ञा का पालन किया और बाबा के पास जाकर कहा–''महाराज क्या आज्ञा है?'' साधु ने कहा–''जा, जाकर अपनी माता को ले आओ।'' जब माता आ गई तो साधु ने कहा कि इसे जमीन पर लिटा दे। बुढ़िया ने कहा ठीक है और मंगलदेव का स्मरण करके लड़के को उल्टा लिटा दिया और उसकी कमर पर अंगीठी रख दी। तब वृद्धा दुःखी मन से बोली–''महाराज अब आपको जो कुछ करना है करो, मैं जाकर अपना काम करती हूं।'' साधु ने अंगीठी में आग जलाई और उस पर भोजन बनाया। जब भोजन बन गया तो साधु ने वृद्धा से कहा कि आओ माई तुम भी भोग लगा लो और अपने पुत्र को भी बुलाओ कि वह भी भोजन ले जाए। वृद्धा ने दुःखी मन से कहा–''बाबा जी यह क्या कहते हो? आपने खुद ही तो अभी उसकी पीठ पर आग जलाई है और उसी को बुला रहे हैं। अब आप मुझे उसकी याद न दिलाओ। वह तो कब का मर चुका होगा। आप भोजन करके जहां जाना हो चले जाइए।'' साधु ने कहा–''तू आवाज तो लगा।'' वृद्धा ने कहा–ठीक है महाराज, जैसी आपकी इच्छा।'' और जैसे ही उसने मंगलिया कहकर पुकारा वैसे ही मंगलिया दौड़ता हुआ आ गया। साधु ने कहा–''माता तुम्हारा व्रत सफल हुआ। तेरी निष्ठा पक्की है, अब तुझे कभी कोई कष्ट नहीं होगा।''

❑❑❑

मंगलवार की आरती

आरती कीजै हनुमान लला की।
दुष्ट दलन रघुनाथ कला की।।
जाके बल से गिरिवर कांपै।
रोग-दोष जाके निकट न झांपै।।
अंजनि पुत्र महाबल दाई।
संतन के प्रभु सदा सहाई।।
दे बीरा रघुनाथ पठाये।
लका जारि सिया सुधि लाये।।
लंका सो कोट समुद्र सी खाई।
जात पवनसुत बार न लाई।।
लंका जारि असुर संहारे।
सियारामजी के काज संवारे।।
लक्ष्मण मूर्च्छित पड़े सकारे।
लाए संजीवन प्राण उबारे।।
पैठी पाताल तोरि जम कारे।
अहिरावण की भुजा उखारे।।
बाएं भुजा असुर दल मारे।
दाहिने भुजा संत जन तारे।।
सुर नर मुनि आरती उतारें।
जय जय जय हनुमान उचारें।।
कंचन थार कपूर लौ छाई।
आरती करत अंजना माई।।
जो हनुमान जी की आरती गावै।
बसि बैकुंठ परमपद पावै।।
लंक विध्वंस कीन्ह रघुराई।
तुलसीदास प्रभु कीरति गाई।।

❑❑❑

कर्जनाशक व दाम्पत्य सुख कारक मंगलयन्त्र

जन्म पत्र के 1, 4, 7, 8, 12 भावों में मंगल हो तो कुण्डली मंगलीक बनती है। पुरुष की कुण्डली में इस स्थिति वाले मंगल को "मोलिया मंगल" एवं स्त्री की कुण्डली में होने से इसे "चुनरी मंगल" कहते हैं। यह देखने में आता है कि इस प्रकार की ग्रह स्थिति वाले लड़कियों की शादी प्राय: नहीं होती, होती भी है तो बहुत देरी से, तथा होने के बाद भी यह देखने में आता है कि उनका दाम्पत्य जीवन कलह पूर्ण होता है। जन्मपत्र हो चाहे न हो उपरोक्त स्थितियां जब भी जीवन में आती हैं उसका मुख्य कारण मंगल ग्रह का दूषित होना है। चाहे यह गोचर प्रभाव हो या जन्म स्थिति से।

विवाह योग्य कन्या या पुत्र के विवाह में बाधा आना, विवाहित दम्पति के जीवन में दीर्घकाल तक सन्तानभाव रहना, गर्भपात होकर सन्तान हाथ न लगना, मनुष्य का ऋण लेते हुए कर्जग्रस्त होने के बाद, कर्ज चुकाने के आसार से निराश हो जाना, इन तीनों दु:खों को दूर करने के लिए ज्योतिष शास्त्र में मंगल व्रत का विधान है।

मंगल व्रत का नाम सुनते ही जन साधारण एक समय भोजन कर, हनुमान जी का दर्शन करके छुट्टी मना लेते हैं फिर काम पूर्ण न होने पर धन्य देव को पकड़ते हैं। यह सब जानकारी के अभाव में होता है।

कर्मकाण्ड शास्त्र ज्योतिष शास्त्र से प्रदर्शित अनिष्ट का निवारण करवाता है। कर्मकाण्ड के अंग-उपासना, जप, पूजन, यज्ञादि हैं। अत: शास्त्रीय पद्धति से किया हुआ कार्य कभी भी निष्फल नहीं जाता। गीता में कहा है-

"तस्मात् शास्त्रं प्रमाणं ते" "ज्ञात्वा शास्त्र विधानोक्तम् कर्म कतुं मिहार्हसि।" यत्न करने पर भाग्य भी फलता है, बनता है और संचित होता है। यत्न करने पर भी कार्य न हो तो "यत्ने कृते यदि न सिद्ध्यति कोऽत्रदोष:" कार्य के यत्न में कहीं त्रुटि है ऐसा शास्त्रकार ने कहा है उसे निकालकर यत्न करे तो काम बन ही जाता है।

मंगल भूमि पुत्र और ग्रहों का सेनापति है। मंगल के व्रत में "मंगल मन्त्र" के पूजन का विधान है। प्राचीन समय में कई घरों में यह मंत्र पाया जाता रहा है, परन्तु आने वाली पीढ़ी अज्ञान वश उसके पूजन एवं विधान से अनभिज्ञ है।

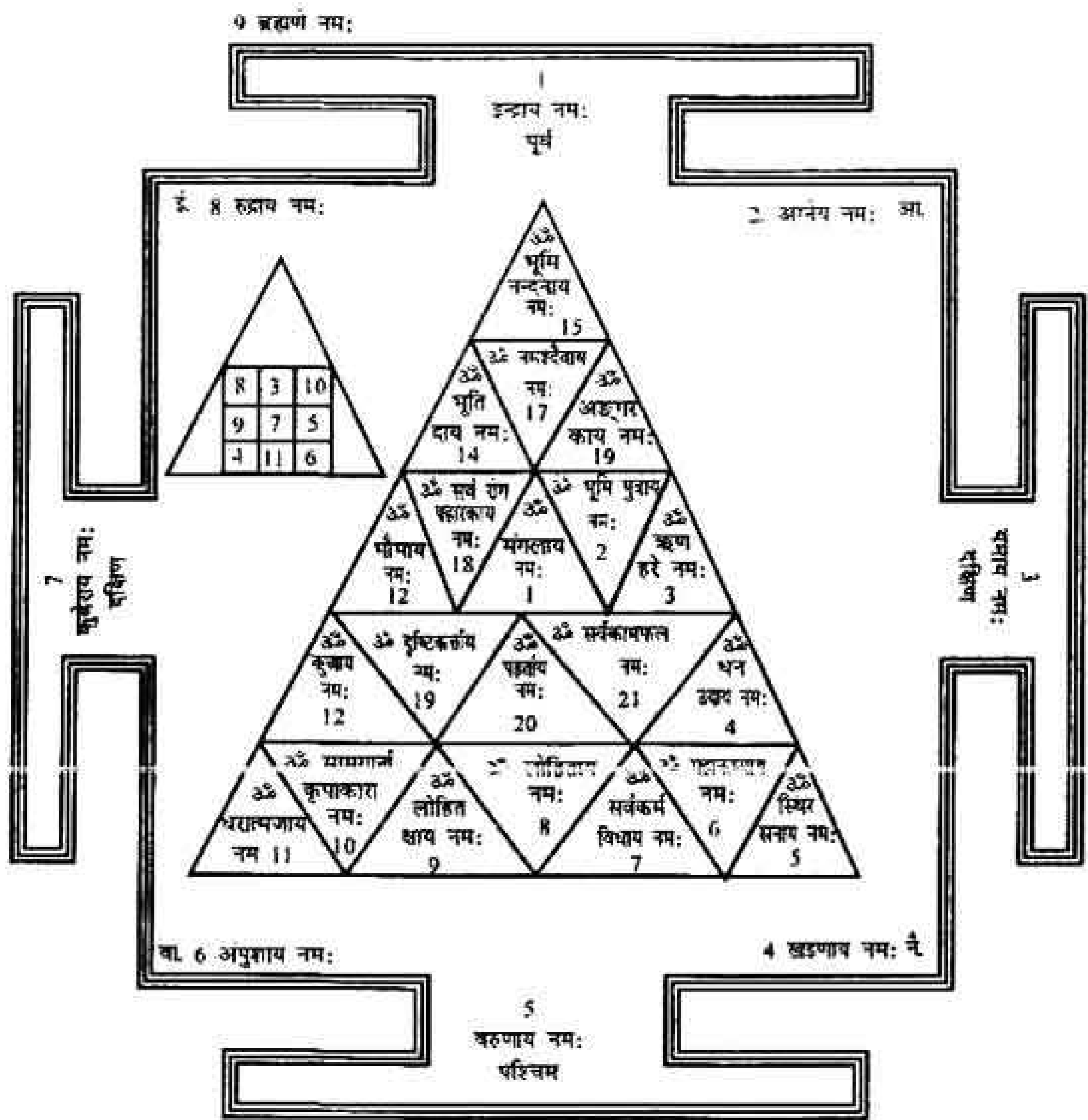
हमारे कार्यालय में ऐसे अनेक केस आते हैं कि लड़कियां 30 से 40 वर्ष की आयु तक

पहुंच जाती हैं परन्तु मंगलीक दोष के कारण विवाह तो दूर, सगाई तक नहीं बैठती। दूसरी ओर वर पक्ष से ऐसे-ऐसे उदाहरण आते हैं कि दो-दो, तीन-तीन विवाह कर लिए परन्तु 'मंगली दोष' के कारण पत्नी का सुख नहीं। मंगली दोष से व्यक्ति कर्जदार होता और कर्जदार भी ऐसा कि उसका कर्जा उसकी मृत्यु पर्यन्त उसके साथ रहता है। ऐसे जातकों की भी कमी नहीं जो आमूलचूल कर्ज से डूबे हुए हैं, उन्होंने लक्ष्मी साधना, श्रीमन्त्र एवं रुपया की प्राप्ति हेतु कई या व अनुष्ठान भी किए परन्तु पैसा आता है वह चला जाता है, रुकने का नाम नहीं लेता। ऐसे जातकों को पहले 'मंगल मन्त्र' की साधना से अपने मंगलीक दोष की निवृत्ति करनी चाहिए। हमने प्रयोग किए और पाया कि 'मंगल मन्त्र' की विधिवत उपासना के पश्चात, 21 मंगलवार पूर्ण होते-होते लोगों को अपने-अपने अभीष्ट कार्यों में बराबर सफलता मिली है। कई परिवारों में विवाह के पश्चात सन्तान बाधा हेतु भी इसके प्रयोग किए। सभी को अनुकूल लाभ हुए। यदि किसी जातक का पंचमेश मंगल हो, या पंचम भाव में मंगल हो या मंगल की दृष्टि हो तो तेजस्वी पुत्र संतान की प्राप्ति हेतु 'मंगल मन्त्र' का सहारा लेना चाहिए।

सर्वजन हित मंगल व्रत और मंगल यन्त्र पूजन की सम्पूर्ण विधि संस्कृत के साथ-साथ, अत्याधिक सरल ढंग से हिन्दी में भी दी जा रही है ताकि साधारण पढ़े-लिखे लोग भी इसका लाभ ले सकें।

मंगल यन्त्र का चित्र यहां दिया हुआ है। ऐसा चित्र तांबे की प्लेट पर बनवा दे। तांबा मंगल की मुख्य धातु है। परन्तु ध्यान रहे तांबे की प्लेट पर मन्त्र खुदा हुआ नहीं होना चाहिए। उत्कीर्ण (खुदा) हुआ यन्त्र शास्त्रानुसार निकृष्ट होता है। आप चाहे तो भोजपत्र पर अष्टगन्धा से लिखकर भी इस यन्त्र को बना सकते हैं। अष्टगन्धा में शुद्ध कस्तूरी, केसर, गोरोचन, कंकुम, चन्दन का ही प्रयोग लेना चाहिए। यदि असुविधा हो तो यह दोनों प्रकार यन्त्र कार्यालय में सम्पर्क साध कर प्राप्त किए जा सकते हैं।

पूजन विधि—हर मंगलवार के दिन पूजन सूर्योदय बेला में सुन्दर रहता है, परन्तु दोपहर बारह बजे के पहले पूजन कर लेना चाहिये। स्नान करके धुले हुए वस्त्र पहने, लाल वस्त्र हो तो उत्तम, नहीं तो लाल ऊन का आसन जरूरी है। पूजन सामग्री में धूप, दीप के अलावा लाल फूल, लाल चावल कंकुम में किए हुए या लाल चंदन जरूरी है। गुड़ का भोग लगावे, लाल फल रखें। मौली चढ़ावें, फिर पंचामृत से फिर शुद्ध जल से धोकर, लाल वस्त्र से पोंछ ले पश्चात् यंत्र में एक दो के क्रम से 21 बिंदिया लगावें। ककुं गुलाल डालकर वस्त्र दीप नैवेद्य फल दक्षिणा धरे तब प्रार्थना करें। इस तरह 21 मंगलवार व्रत रखने से काम पूर्ण रूप से हो जाता है या प्रगति पर आ जाता है। एक कामना लेकर, श्रद्धा विश्वास से व्रत करें, एक कामना पूर्ण होने पर उद्यापन करके, तब कोई दूसरी इच्छा हो तो उसके हेतु व्रत पुनः शुरू करें। एक ही कामना से व्रत आरंभ करने के बाद उसमें दूसरी इच्छाएं नहीं जोड़ना चाहिए। यंत्र प्राण प्रतिष्ठा युक्त लें या घर पर बनवायें तो विद्वान् ब्राह्मण से प्राण-प्रतिष्ठा करवा लें।



संकल्प–दायें हाथ में जल लेकर संकल्प करें। **"ॐ अद्य पूर्वोच्चरितस्य गुण विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्य तिथौ मम (अमुक) स्थाने स्थित भौम जनित दोष परिहारार्थं तथाच आजन्म पर्यन्तं स्त्रीसुख प्राप्त्यर्थं अनेन भैमजोपाख्येनकर्मणा भगवान् भौमः प्रीयताम्।"**

हिन्दी भाषा में इस प्रकार करें–मैं (अपना नाम) आज (अमुक) वर्ष के (अमुक) मास (अमुक) तिथि (अमुक) बार को श्री मंगल देवता को प्रसन्न करने हेतु तथा मेरी कुण्डली में अमुक स्थान में स्थित मंगल दोष के निराकण हेतु, भक्ति के साथ (अमुक कामना) की पूर्ति हेतु 'मंगलयंत्र' का पूजन और व्रत करता हूं (कहकर जल छोड़ दे) फिर न्यास, ध्यान के साथ यन्त्र में यन्त्रस्थ देवता का आह्वान कर, यन्त्र की पूजा करें। उसके बाद कवच व स्तोत्र का पाठ करना होता है।

न्यास–

ॐ ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नम:। ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यांनम:
ॐ ह्रू मध्यमाभ्यांनम:। ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यांनम:

ॐ ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यांनम:। ॐ ह्र: करतलपृष्ठाभ्यांनम:।
ॐ ह्रां हृदयायनम:। ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा।
ॐ ह्रूं शिखाये नम:। ॐ ह्रीं कवचाय हुम्॥
ॐ ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्॥ ॐ ह्र: अस्त्राय फट्॥
ॐ खंख: इति दिग्बन्ध:॥

न्यास–सबसे पहिले न्यास करें यानि मूल में जो न्यास के मंत्र लिखे हैं उन मंत्रों को बोलते जाएं और उन-उन अंगों को स्पर्श करते जाए जो कि, मूल-मंत्रों में ही लिखें हैं। हाथ की पांचों अंगुलियों का नाम संस्कृत में क्रम से 1 अंगुष्ठ (अंगूठा) 2 तर्जनी (अंगूठे के पास की उंगली) 3 मध्यमा (बचली) 4 अनामिका (चौथी) कनिष्टिका, सबसे छोटी अंगुली कही जाती है। करतल हथेली तथा पृष्ठ, हाथ की पीठ कही जाती है। हृदय-छाती, शिर-खोपड़ी, शिखा-चोटी, कवच-भुजाएं, नेत्रय तीन नेत्र कहे जाते हैं। इन संस्कृत के शब्दों वाले पदों से इनका स्पर्श होता है। ये दोनों करन्यास और अंगन्यास कहलाते हैं। "अस्त्राय फट्" कहर अपने दोनों ओर हाथ घुमा ताली बजाने तथा ओम् खंख: कहकर चुटकी बजाने से दिग्बन्ध हो जाता है।

ध्यानम्–

एह्ये हि भगवन्भौम अङ्गारक महाप्रभो॥
त्वयि सर्व समायातं त्रैलोक्यं सचराचरम्॥
भौममावाहयिष्यामि तेजोमूर्ति दुरासदम्॥
रूद्ररूपमनिर्देश्चवक्त्रचं रुधिरप्रभम्॥
विनियोग–अग्निमूर्धाङ्गिरसो विरूपोऽङ्गारको गायत्री।
मङ्गलावाहने विनियोग:॥

ध्यानम्–रक्तमाला पहिने, शक्ति शूल और गदा हाथ में लिए हुए चतुर्भुजी तथा मेंढ़े की सवारी रखने वाले धरानन्दन वर दिया करते हैं, इस प्रकार ध्यान करें। हे अंगारक महाप्रभो भौम! पधारिये, आपके आने से चराचर समेत तीनों लोक आ गए; लोहू जैसा लाल-लाल मुख, साक्षात रुद्ररुपी तेजोमूर्ति दुरासद मंगल का आह्वान करता हूं।

मंगल आह्वान–ॐ अग्निर्मूर्धा:॥ ॐ नमो भगवते धनसमृद्धिदाय मंङ्गलाय नम:॥ मंगलमावाह्यामि इत्यावाह्य अग्निर्मूर्धेति मन्त्रेण मंगलगायत्र्या वा आसनादि पुष्पान्तं पूजयित्वा यन्त्रस्थैकविशंतिकोष्ठेष्वढ.गान्येकविंशतिनामभि: पूजयेत्॥

मंगल आह्वान–"अग्निर्मूर्धा" इस मंत्र के आंगिरस विरूप ऋषि है; मंगल देवता है, गायत्री छन्द है, मंगल के आह्वान में विनियोग होता है। "ओम् अग्निमूर्धा दिव: ककुत्पति: पृथिव्यां अयम्। अपांघू रेतांघुसि जिन्वति।" यह पृथ्वी का पुत्र भौम, दिवका मूर्धा तथा सबका अग्रणी है। सबका पालक तथा सबसे श्रेष्ठ है, यही पानी के सारों को पुष्ट करता या व्यापकों

को बल देता है। इस मंत्र से अथवा धन समृद्धि देने वाले भगवान् मंगल के लिए नमस्कार करता हूं! मंगल का आह्वान करता हूं, इस मन्त्र से आह्वान हुआ।

अंग पूजा–1. ॐ मंगलाय नम: पादौ पूजयामि 2. भूमि-पुत्राय नम: गुल्फौ पूजयामि। 3. ऋणहर्त्रे नम: जंघौ पूजयामि 4. धानप्रदाय नम: जानुनी पूजयामि। 5. स्थिरासनाय नम: उरुं ॐ पूजयामि। 6. महाकायाय नम: कटीं पूजयामि। 7. सर्वकर्मावरोधकाय नम: नाभिं पू.। 8. लोहिताय उदरं पू.। 9. लोहिताक्षाय हृदयं पूजयामि। 10. सामगानांकृपाकराय करौ पू.। 11. धारात्मजाय नम: बाहु पूजयामि। 12. कुजाय स्कन्धौ पू.। 13. भौमाय नम: कण्ठं पूजयामि 14. भूतिदाय हनुं पू.। 15. भूमिनंदनाय मुखं पूजयामि। 16. अङ्गारकाय नासिके पू.। 17. यमाय नम: कर्णौ पूजयामि 18. सर्वरोगापहारकाय नम: चक्षुषी पू.। 19. वृष्टिकत्रे नम: ललाटं पूजयामि। 20. वृष्टिहत्रे नम: मूर्धानं पूजयामि। 21. सर्वकामफलप्रदाय नम: शिखाम् पूजयामि।।

ततो धूपादिपुष्पांजल्यन्तं कृत्वा एतैरेव नामभिरेकविंशत्यर्ध्यन्दिद्यात्।।

अंग पूजा–"अग्निमूर्धा" इस मन्त्र से तथा "ॐ अंगारकाय विद्महे शक्ति हस्ताय धीमहि तननौ भौम: प्रचोदयात्" इस मंगल गायत्री से आसन से लेकर पुष्प समर्पण तक की पूजा करें। मन्त्र को गंगा जल में धोएं फिर मन्त्र के जिस कोष्ठ में जो नाम मन्त्र लिखे जाते हैं, उन्हीं इक्कीस नाम मंत्रों में उन-इन कोष्ठों में क्रमश: अंगों का पूजन करते हुए बिन्दिया लगाएं। बिन्दी लगाते समय सर्वत्र ॐ शब्द एवं उन-उन कोष्टकों के नाम मन्त्रों का उच्चारण करें। अंगपूजा-मंगल के लिए नमस्कार चरणों को पूजता हूं, भूमिपुत्र के लिए गुल्फों को ऋण हर्ता के लिए जंघाओं को, धन देने वाले के लिए जानुओं को, स्थिरासन के लिए उरूओं को, महाकाय के लिए कटि को, सब कर्मों के अवरोध के लिए नाभि को, लोहित के लिए उदर को, लोहिताक्ष के हृदय को, साम के जानने वालों पर कृपा करने वालों के लिए हाथों को, धारात्मज के लिए बाहुओं को, कुज के लिए स्कन्धों को, भौम के लिए कंठ को, भूति के देने वाले के लिए हनु को, भूमिनन्दन के लिए मुख को, अंगारक के लिए नासिकाओं को, यम के लिए कर्णों को, सब रोगों के नष्ट करने वाले के लिए नेत्रों को, दृष्टि के करने वाले के लिए ललाट को, वृष्टि के हर्ता के लिए मूर्धा को, सब कामों के फल देने वाले के लिए नमस्कार शिखा को पूजता हूं। अंग पूजा के पश्चात दश दिशाओं में भी बिन्दिया लगाएं, पुष्प लगाएं।

मगल कवच–

शिखायां मंगल: पातु भूमिपुत्रश्च मूर्धनि।।
ललाटे ऋणहर्ता व चक्षुषीश्च धनप्रद:।।
स्थिरासन: श्रोत्रयोश्च महाकायश्च नासिके।।
आस्यदन्तोष्ट जिह्वासु सर्वकर्माविरोधक:।।
हनौ मे लोहित: पातु लोहिताक्षश्च कण्ठके।
स्कन्धयोरूभयो रक्षेत्सामगानां कृपाकर:।।

धरात्मजो भुजौ पातु कुजो रक्षेत्करद्वयम्॥
भौमो मे हृदयं पातु भूतिदस्तु तथोदरे॥
भूमिनन्दनो नाभौ तु गुह्ये त्वङ्गारकोऽवतु॥
उरू मम यमो रखेञ्जान रोगापहारकः॥
जंघयोर्वृष्टिकर्ता च अपहर्ता च गुल्फयोः॥
पादांगुष्टा च गुल्फौ च सर्वकामफलप्रदः॥
शक्तिर्मे पूर्वतो रक्षेच्छूलं रक्षेच्च दक्षिणे॥
पश्चिमे च धनुः पातु उत्तरे च शरस्तथा॥
उर्ध्वं पिण्डाननः पातु अधस्तात्पृथिवी मम॥
एवं न्यस्तशरीरोऽसौ चिन्तयेद्भूमिनन्दनम्॥

मंगल कवच—शिखा की मंगल रक्षा करें। भूमिपुत्र मूर्धा की, ऋणहर्ता ललाट की, धनप्रद नेत्रों की, स्थिरासन श्रोत्रों की, नासिकाओं की महाकाय, सर्व कर्माविरोधक मुख, दन्त, ओष्ठ और जिह्वा की, लोहित हनु की, लोहिताक्ष कंठ की, सांमगों पर कृपा करने वाला दोनों स्कन्धों की, धारात्मज भुजाओं की, कुज दोनों हाथों की, भौम हृदय की, भूतिद उदर की, भूमिनन्दन नाभि की, अंगारक गुह्य की, यम उरूओं की, रोगापहारक जानुओं की, वृष्टिकर्ता जांघों की, अपहर्ता गुल्फों की सर्वकाम फलप्रद, पाद अंगुष्ठ और गुल्फों की रक्षा करें। शक्ति मेरी पूर्व से रक्षा करें। दक्षिण में शूल रक्षा करें। पश्चिम में धनुष रक्षा करे। उत्तर में शर रक्षा करे, ऊपर पिण्डानन तथा नीचे पृथ्वी रक्षा करे, इस प्रकार शरीर में न्यास या रक्षा के लिए इन रूपों को यहां बिठा कर मंगल का ध्यान करे। (ये न्यास कहे हुए अंगों पर रक्षा के लिए किए जाते हैं इस कारण हमने सीधा रक्षा करें यह अर्थ कर दिया है।) इस प्रकार कवच का पाठ करें।

मंगल गायत्री—

ॐ अंङ्गारकाय विद्महे शक्ति हस्तायधीमहि।
तन्नो भैमः प्रचोदयात्॥

मंगल गायत्री—अंगार के समान रक्त वर्णीय, दोनों हाथों में शक्ति धारण करने वाले तेजस्वरूप तेजस्वी मंगल ग्रह को नमस्कार है। अथवा यहां 'ॐ ह्रीं भौमाय नमः' की एक माला फेरें। इसके बाद मंगल स्तोत्र का पाठ करें।

मंगल स्तोत्र—

मंगलो भूर्मिपुत्रश्च ऋणहर्ता धनप्रदः।
स्थिरासनो महाकायः सर्वकर्माविरोधाकः॥
लोहितो लोहिताक्षश्च सामगानां कृपाकरः।
धारात्मजः कुजो भौमो भूतिदो भूमिनन्दनः॥
अंङ्गारको यमश्चैव सर्वरोगापहारकः।
वृष्टिकर्ताऽपहर्ता च सर्वकामफलप्रदः॥

एतानि कुजनामानि नित्यं यः प्रयतः पठेत्।
ऋणं न जायते तस्य सन्तानं वर्धते सदा॥
एकविंशतिनामनि पठित्वा तु दिनान्तके।
रूपवान् धनवांश्चैव जायते नात्र संशयः॥
एककालं द्विकालं वा यः पठेत्सुसमाहितः।
एवं कृते न सन्देहो ऋणं हित्वा सुखी भवेत्॥

मंगल स्तोत्र–मंगल, भूमिपुत्र, ऋणहर्ता, धनप्रद, स्थिरासन, महाकाय, सर्वकर्मावरोधक, लोहित, लोहितताक्ष, सामगानां कृपाकर, धरात्मज, कुज, भौम, भूतिद, भूमिनन्दन, अंगारक, यम, सर्वरोगापहारक, वृष्टिकर्ता, वृष्टिअपहर्ता, सर्वकामफलप्रद, ये मंगल के 21 नाम हैं। जो रोज सावधानी के साथ इन्हें पढ़ता है, उस पर कष्ट नहीं होता, सदा सन्तान की वृद्धि होती है। सायं-काल के समय इन इक्कीस नामों को पढ़कर, रूपवान और धनवान हो जाता है। इसमें सन्देह नहीं है। एक बार या दो बार एकाग्र चित्त हो पढ़े, इस प्रकार नित्य करने पर ऋण को चुका, व्यक्ति सुखी हो जाता है। रुचि के अनुसार काव्यात्मक इस स्तोत्र को भी पढ़ सकते हैं।

काव्यात्मक मंगल स्तोत्र

भारद्वाज कुल उज्ज्वल कर, उज्जैन में वास लिया तुमने, हे चारभुजाधारी, मंगल। हे शूलशक्ति घर भौम कुजे। करते स्तुति देव सदा मिलकर, दानव गंधर्व सदा भजते, करता कल्याण सदा उनका, जो पूर्ण मनोरथ से भजते॥ धरणी गर्भ से जन्म लिया, बिजली सी चमक उससे पाई हे! सेनापति देवों के, विजय देव हे! सुखदाई। है रक्त वर्ण, है लाल नैत्र, मीढ़ा है वाहन मनभाया, हे मंगल! शक्ति हाथ तेरे, कर मम मंगल सुखदाया॥ मैं नमन करूं अब बार-बार, तुमने भक्तों को दिया तार, तुम नष्ट करो ऋण सब मेरा, कर दो अपनी करुणा अपार। मम रोग हरो, भव, ताप हरो, अपमृत्यु हरो मेरी सांई, हरो दरिद्रता इस जन की, वरदो! सन्तान, बड़े भाई॥ धान दो, सब पाप मिटे मेरे, करदो मम सन्तान सगाई, हे ऋणहर्ता है, नमस्कार, सुख, सौभाग्य, मुझे दे दो। दो पुत्र मुझे, जिससे सुख हो, हे देव-देव भक्ति तब दो, हे धारणी नन्द! हे मंगल, हे बाल कुमार विनय सुन ले तेरी पूजा से जन-जन-मन, पाते मंगल, मगल कर दो।

नमस्कार–

धारणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं च मंगलं प्रणमाम्यहम्॥

नमस्कार–भूमि के गर्भ से उत्पन्न होने वाले की कान्ति के समान प्रभा वाले, शक्ति हाथ में लिए कुमार मंगल को बारम्बार प्रणाम करता हूं। इस प्रकार कहकर हाथ जोड़कर नमस्कार करें।

तीन रेखाओं का प्रयोग–

(खदिरांगारेजा रेखात्रयं कृत्वा)–

अंङ्गारक महीपुत्र भगवन्भक्तवत्सल

त्वां नमस्यामि मेऽशेषं ऋणमाशु विनाशय।।1।।
ऋणरोगादिदारिद्रयपापक्षुधापमृत्यव:
भवक्लेशमनस्तापा नश्यन्तु मम सर्वदा।।2।।
ऋणदु:ख विनाशाय पुत्रसन्तानहेतवे।
मार्जयाम्यसिता रेखास्तिस्त्रे जन्मसमुद्‌भवा:।।3।।
दु:खदौर्भाग्यनाशाय सुखन्तानहेतवे।।
कृतं रेखात्रयं वामपादेन मार्जयाम्यहम्।।4।।

तीन रेखाओं का प्रयोग–इसके बाद आरती उतारकर खैर की लकड़ी के कोयले से अथवा खेजड़ी कोयले से तीन रेखाएं जमीन पर खींचे, फिर उन रेखा को बाएं पैर से उपरोक्त मंत्र या हिन्दी के पद को बोलते हुए मिटाएं। खैर के अंगार से तीन रेखा करके कहे–हे भगवन् अंगारक! हे महीपुत्र! हे भक्तवत्सल! मैं आपको नमस्कार करता हूं, मेरा समस्त ऋण नष्ट करिए, ऋण रोगादि, दारिद्र, पाप, क्षुद्रता, अपमृत्यु, भव के क्लेश, मन के ताप ये मेरे सदा नष्ट हों! ऋण के दु:ख को नष्ट करने तथा पुत्र और सन्तान के लिए, तीन जन्म से होने वाली तीनों ग्रसित रेखाओं का मार्जन करता हूं। जिससे दु:ख और दुर्भाग्य का नाश तथा सुख और संतान की प्राप्ति हो, दुर्भाग्य सूचक तीनों रेखाओं का बाएं पैर से मार्जन करता हूं, इन मंत्रों से रेखाओं का मार्जन करें।

रेखाओं को मिटाते वक्त बोलने का पद–

हे अंगारक ! हे महीपुत्र, भगवान् भक्तों के प्यारे,
मैं नमस्कार करता तुमको, जो नमें उन्हें, तुमने तारे।
तीन जन्म की ये रेखाएं, मेरी भाग्य बाधक प्यारे,
काली रेखा ऋण-रोगों की, दुर्भाग्य मिटाता हूं प्यारे।
सुख सन्तान बढ़े मेरे, या दे दो सुन्दर पति/पत्नी तुम प्यारे,
कन्या मेरी अब बढ़ी हुई, उसको पति दो तुम प्यारे।।

मंगल प्रार्थना–

ऋणहत्रे नमस्तेऽस्तु दु:खदारिद्र्यनाशक।
सुखसौभाग्यधनदो भव मे धरणी:सुत:।।
ग्रहराज नमस्तेऽस्तु सर्वकल्याणकारक:।
प्रसादात्तव देवेश सदा कल्याणभाजन:।।
देवदानवगन्धार्वयक्षराक्षसपन्नगा:।
प्राप्नुवन्ति शिवं सर्वे सदा पूर्णमनोरथा:।।
प्रसादं कुरु मे भौम सौभाग्यं मंगलप्रद:।।
बाल: कुमारको वसतु स भौम: प्रार्थितो मया।।

उज्जयिन्यां समुत्पन्नो, नमो भौम चतुर्भुज।
भरद्वाजकुले जात: शूलशक्तिगदाधर:।।

मंगल प्रार्थना–हे दु:ख और दरिद्रता के नाश करने वाले तुझ ऋणनाशक के लिए नमस्कार है। हे धरणी के पुत्र! मुझे सुख और सौभाग्य का देने वाला बन जा, हे सबके कल्याण के करने वाले! तुझ ग्रहराज के लिए नमस्कार है। हे देवेश! आपकी कृपा से सदा कल्याण हो, क्योंकि आप सदा ही कल्याण के भाजन हैं। देव दानव, गन्धर्व, दक्ष, राक्षस, पन्नग ये सब सदा ही पूर्ण मनोरथ होकर कल्याण को पाते हैं। हे भौम! मुझ पर कृपा करिए, हे मंगल के देने वाले! सौभाग्य दे। जो चतुर्भुज बालकुमार उज्जयनी में उत्पन्न हुआ है उसी से प्रार्थना कर रहा हूं। उसी के लिए मेरी ये नमस्कारें भी हैं। जो भरद्वाज के कुल में पैदा हुआ है। शक्ति शूल और गदा धारण करने वाला हैं। यह प्रार्थना करके फिर स्त्रोत्र पढ़ना चाहिये।

वायन्दानम्–

तिलगुड मिश्रितेनैकविंशतिलड्डूकान्
गोधूमभवान्फल दक्षिणासहितान्वेदविदे दद्यात्।।

वायनदानम्–तिल गुड़ मिले हुए गेहूं के इक्कीस लड्डू फल और दक्षिणा के साथ वेद के जानने वाले ब्राह्मण को दें, सब मंगलों के देने वाले तुझ मंगल के लिए नमस्कार है। इस से संतुष्ट होकर मेरे मनोरथों को पूरा करिए, "देवस्य त्व." इस मन्त्र को बोलकर कहे कि, इस दान से मंगल देव प्रसन्न हो; पीछे दे दें। यह वायने के दान का मन्त्र है। यदि सन्तान की चाहना हो तो 21 लाल रंग की गोलियां छोटे-छोटे बच्चों को बांटे। यदि ऋण उतारना हो तो गाय को गुड़ खिलावें। यदि रोग मिटाना हो तो ब्राह्मण व साधु को तृप्त भोजन कराएं, उसके बाद भोग लगाकर स्वयं भोजन करें। कार्य की सिद्धि हो जाने पर उद्यापन में 21 लाल रंग की वस्तु, लाल पुष्प या लड्डू सत्पुरुषों में बांट दें। दशांश हवन करें। हवन करने पर ब्राह्मण भोजन अवश्य कराएं।

दानमन्त्र–

मंगलाय नमस्तुभ्यं सर्वमंगलदायक।।
बायनेन च संतुष्ट: कुरु मे त्वं मनोरथान्।।
देवस्यत्वेति मन्त्रेण मंङ्गल: प्रीयतामिति दद्यात्।।
(आवाहनं न जानामि. इति पूजनम्)

फल स्तुति–

तस्य वै ग्रहपीड़ा च न भवंतु कदाचन।।
भूतवेतालशाकिन्यौ न भवन्ति च हिंसका:।। 1।।
दारद्य्र नश्यते तस्य पुत्रपौत्राश्च वर्धते।।
एवमुक्त्वा च तत्रैव मंगलोऽपि दिवं गत:।। 2।।

एवं व्रतं समाख्यातं सर्वसौख्यप्रदायकम्।।
इदं व्रतं करिष्यन्ति तेषां पीडा न जायते।। 3।।
स्त्रीभिर्व्रतं प्रकर्त्तव्यं पुरुषैश्च विशेषत:।।
तेषां मुक्तिर्भवत्येव स्वर्गवासो न संशय:।। 4।।

फल स्तुति–उसे कभी ग्रहपीड़ा नहीं होगी। उसे भूत प्रेत बेताल की बाधा और दारिद्र्य नष्ट हो जाता है और बेटा नातियों के साथ वृद्धि को प्राप्त होता है। यह कह कर मंगल देव अन्तरिक्ष में चले गए। यह सब सुखों का देने वाला व्रत मैंने कह दिया है। जो इस व्रत को करेंगे उन्हें कभी भी ऋण की पीड़ा नहीं होगी। इस व्रत को स्त्रियों को करना चाहिए। विशेष करके पुरुष भी इसी व्रत को करें। उनकी मुक्ति और स्वर्गवास होगा इसमें सन्देह नहीं है। यह प्रयोग हर प्रकार से सुख सम्पत्ति व प्रसन्नता को देने वाला कहा गया है।

दीर्घायु, रोग निवारण एवं उत्तम स्वास्थ्य हेतु

1. चन्द्रमा का जीवन रत्न मोती सवा पांच रत्ती और जीवन शक्तिदायक मंगल का रत्न 'मूंगा' सवा पांच रत्ती संयुक्त रूप से लॉकेट बनाकर गले या अंगूठी में धारण करें। यह लॉकेट 'महालक्ष्मी योग' का भी काम करने के कारण दोहरे चमत्कार वाला साबित होगा।



बीसा यंत्र में ये दोनों रत्न 'लक्ष्मी योग' को प्रबल करते है। बीसा यंत्र में कोई भी रत्न प्रतिकूल कार्य नहीं करता और जातक का वांच्छित धन लाभ देता है। जिन लोगों के हाथ में पैसा नहीं टिकता एवं जिन लोगों के धन स्थान में राहु बैठा हो तो, धन के घड़े में छेद हो, उन लोगों को यह यंत्र अवश्य धारण करना चाहिए। यह हमारा अनुभूत प्रयोग है कि कुण्डली जन्म दुर्बल योग, दरिद्रयोग इस यंत्र के धारण करने से नष्ट हो जाते है। संकट योग, धनहीन योग एवं केमद्रुम योग में जन्म लेने वाले जातक के लिए यह यंत्र अमृततुल्य उपादेय औषधि है।

2. रुदाक्ष की माला पर महामृत्युंजय मंत्र का नित्य जाप करे।
3. बालारिष्ट व अकाल मृत्यु से बचने हेतु बच्चे के गले में मोतीयुक्त चांदी का चन्द्रमा अभिमंत्रित करके पहनाएं।
4. अनिष्ट चन्द्रमा के कारण बालारिष्ट की शान्ति हेतु चन्द्रकवच पढ़ें, चन्द्रमा के वैदिक मंत्रों का 11000 या 44000 हजार जप, दशांश हवन कर, बच्चे के गले में रक्षा सूत्र या चन्द्रमा पहनाएं।
5. चांदी के बर्तन में रात को सिरहाने पर दूध रखना तथा प्रात:काल बिना कुछ बोले कौंकर,

पीपल या बिल्व वृक्ष में दूध ''ऊं नम: शिवाय'' मंत्र का जाप करते हुए डाले वो तत्काल कष्ट दूर होगा।

6. शिवजी की नित्य उपासना एवं सोमवार का व्रत रखें।
7. सोम प्रदोष का व्रत रखने में शिव-पार्वती शीघ्र प्रसन्न होते हैं।
8. प्रत्येक जन्मदिन या पुष्य नक्षत्र पर दूध व गंगाजल से रुद्राभिषेक कराएं एवं वैदिक मंत्रों के साथ अभिषेक लें।
9. विशेष अवस्था में रोग निवारण हेतु मंत्रपूत औषधियों के साथ पुष्य नक्षत्र स्नान करें।
10. माता (सास), मासी, मामी एवं घर में बुजुर्ग औरतों का आशीर्वाद लें।
11. मरणासन्न व्यक्ति के लिए जहां दवाइयों ने काम करना कर दिया हो। बीमारी गम्भीर व लाईलाज हो वहां त्रिविध तापों के नाश हेतु महामृत्युंजय का सवालक्ष जप, दशांश हवन एवं कवच पाठ अमोघ फल को देने वाला है।
12. चन्द्रमा की निर्बलता में कैलशियम की विशेष कमी पाई जाती है। अत: केला, इत्यादि सेवन बच्चों के लिए हितकर रहता है।
13. आषाढ़ कृष्ण (योगिनी) एकादश का व्रत नियमित करना चाहिए। इससे शरीर स्वस्थ हो जाता है।

योगिनी एकादशी–यह एकादशी आषाढ़ कृष्ण पक्ष में मनाई जाती है। इस दिन व्रत रखकर भगवान नारायण की मूर्ति को स्नान कराके भोग लगाते हुए पुरुष, धूप, दीप से आरती उतारनी चाहिए। गरीब ब्राह्मणों को दान देना परम श्रेयस्कर है। इस एकादशी के प्रभाव से पीपल वृक्ष के काटने से उत्पन्न पाप नष्ट हो जाते हैं और अन्त में स्वर्ग लोक की प्राप्ति होती है।

कथा–प्राचीन समय की बात है अलकापुरी में धनव कुबेर के यहां एक हेम नामक माली रहता था। वह भगवान शंकर के पूजनार्थ नित्य प्रति मानसरोवर से फूल लाया करता था। एक दिन की बात है वह कामोन्मत हो अपनी स्त्री के साथ स्वच्छन्द विहार करने के कारण फूल लाने में प्रमाद कर बैठा तथा कुबेर के दरबार में विलम्ब से पहुंचा। क्रोधी कुबेर के शाप से वह कोढ़ी हो गया। कोढ़ी रूप में जब वह मार्कण्डेय ऋषि के पास पहुंचा तब उन्होंने योगिनी एकादशी व्रत रहने का आज्ञा दी। व्रत के प्रभाव से उसका कोढ़ समाप्त हो गया तथा दिव्य शरीर वाला होकर स्वर्गलोक को गया।

14. इसी प्रकार निर्जला एकादशी ज्येष्ठ शुक्ल को करनी चाहिए इससे दीर्घायु की प्राप्ति होती है।

निर्जला एकादशी–ज्येष्ठ शुक्ल पक्षीय एकादशी को निर्जला एकादशी या 'भीमसेनी एकादशी' कहते हैं, क्योंकि वेदव्यास के आज्ञानुसार भीमसेन ने इसे धारण किया था। शास्त्रों के अनुसार इस एकादशी के व्रत से दीर्घायु तथा मोक्ष मिलता है. इस दिन जल

नहीं पीना चाहिए। इस एकादशी का व्रत रखने से वर्ष की पूरी (24) एकादशियों का फल मिलता है। यह व्रत करने के पश्चात् द्वादशी को ब्रह्म-बेला में उठकर स्नान, दान तथा ब्राह्मण को भोजन कराना चाहिए। इस दिन 'ऊं नमो भगवते वासुदेवाय' मंत्र का जाप करके गोदान, वस्त्रदान, छत्र, फल आदि दान करना वांछनीय है।

कथा–एक समय की बात है भीमसेन ने व्यास जी से कहा कि हे भगवान्! युधिष्ठर, अर्जुन, नकुल, सहदेव, कुन्ती तथा द्रौपदी सभी एकादशी के दिन उपवास करते हैं। तथा मुझसे भी यह कार्य करने को कहते हैं, मगर मैं कहता हूं कि मैं भूख बर्दाश्त नहीं कर सकता। मैं दान देकर तथा वासुदेव भगवान की अर्चना करके उन्हें प्रसन्न कर लूंगा। बिना व्रत किए जिस तरह से हो सके मुझे एकादशी व्रत का फल बताइए। मैं बिना काया क्लेश के ही फल चाहता हूं।

इस पर वेद व्यास बोले–हे वृकोदर! यदि तुम्हें स्वर्गलोक प्रिय है तथा नरक जाने से सुरक्षित रहना चाहते हो तो दोनों एकादशियों का व्रत रखना होगा।

भीमसेन बोले–हे देव! एक समय का भोजन करने से तो मेरा काम न चल सकेगा। मेरे उदर में वृक नाम अग्नि निरन्तर प्रज्वलित रहती है। पर्याप्त भोजन करने पर भी मेरी क्षुधा शांत नहीं होती है। हे ऋषिवर! आप कृपा करके मुझे ऐसा व्रत बतलाइए कि जिसके करने मात्र से मेरा कल्याण हो सके।

व्यासजी बोले–हे भद्र! ज्येष्ट की एकादशी का निर्जल व्रत कीजिए। तुम जीवन पर्यन्त इस व्रत का पालन करो। इससे तुम्हारे पूर्वकृत समस्त एकादशियों के अन्न खाने का पान समूल विनष्ट हो जाएगा। व्यासाज्ञानुसार भीमसेन में बड़े साहस के साथ निर्जला का यह व्रत किया जिसके परिणामस्वरूप प्रातः होते-होते संज्ञाहीन हो गये। तब पांडवों ने गंगाजल तुलसी चरणामृत प्रसाद देकर उसकी मूर्च्छा दूर की। तभी से भीमसेन पाप मुक्त हो गए।

15. आयुष्य, आरोग्य की वृद्धि हेतु 'रविप्रदोष' का व्रत करना चाहिए। परन्तु रोगों से मुक्ति हेतु उत्तम स्वास्थ्य के लिए 'मंगलप्रदोष' का व्रत करना चाहिए।

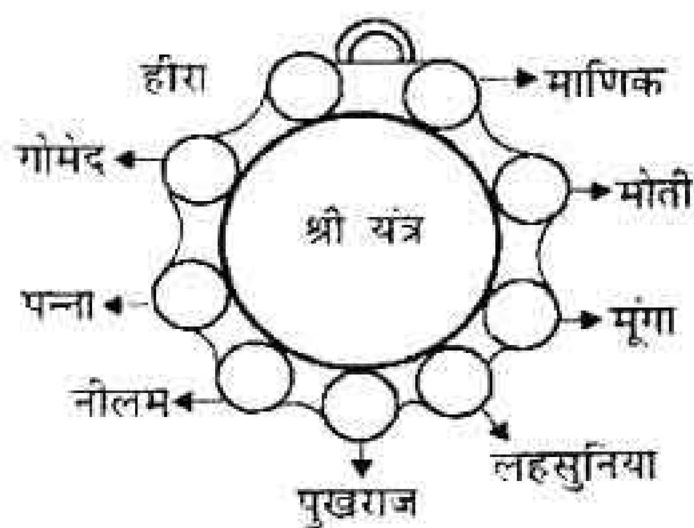
ऋण मुक्ति, धन प्राप्ति, स्थिर लक्ष्मी की प्राप्ति हेतु–

1. स्थाई लक्ष्मी हेतु माणिक्य सवा पांच रत्ती, मोती सवा पांच रत्ती, और मूंगा सवा पांच रत्ती का लॉकेट बनाकर धारण करें।
2. प्रति पूर्णिमा को श्रीसूक्त का हवन, गोघृत, कर्पूर एवं खोपरे व मिष्ठान या खीर से करें।
3. चन्द्रमा यदि नीच का पंचम भाव में हो तो चन्द्रमा की चीजों का दान न लें।
4. चन्द्रमा यदि उच्च का लाभ स्थान हो तो चन्द्रमा की चीजों का दान न दें।
5. छत पर पानी की टंकी हो तो उसकी निममित सफाई 3-4 महीनों में कराते रहें। घर में

कहीं भी पानी के पड़ने से चन्द्रमा रुष्ट रहता है। जिसका चन्द्रमा दूषित हो उनको अपने घर के आगे कीचड़ या गन्दे पानी का जमाव नहीं होने देना चाहिए।

6. घर में खड़ी लक्ष्मी की तस्वीर का पूजन न करें।
7. लक्ष्मीजी की तस्वीर या श्रीयंत्र कागज, एल्युमीनियम या कांच के न हों।
8. श्रीयंत्र कभी भी तांबे या पीतल का न हो।
9. गृहलक्ष्मी से नित्य बहस या कलह करने से घर का ऐश्वर्य एवं लक्ष्मी दोनों ही नष्ट हो जाते हैं।
10. भूलकर भी प्रमादवश माता का मातृतुल्य औरतों का अपमान न करें, इससे चन्द्रमा शीघ्र अप्रसन्न हो जाता है।
11. गन्दे एवं पसीने वाले वस्त्रों के धारण से भी चन्द्रमा शीघ्र नाराज होकर प्रतिकूल हो जाता है।
12. घर की स्त्रियां यदि 'श्रीसूक्त' का पाठ करें तो लक्ष्मी जल्दी प्रसन्न होती हैं।
13. दुकान, फैक्ट्री या कामर्शियल स्थल पर श्रीयंत्र-कुबेर यंत्र-कनकधारा यंत्र एक फ्रेम में जडवाकर नित्य धूप अगरबत्ती दें। श्रीसूक्त का नियमित पाठ करें
14. नवरत्न जड़ित 'श्रीयंत्र' गले में धारण करें।

इस यंत्र को लॉकेट के रूप में धारण करने से व्यक्ति को अनन्त ऐश्वर्य व लक्ष्मी की प्राप्ति होती है।



व्यक्ति को ऐसा आभास होता है जैसे लक्ष्मी उसके साथ है नवग्रह श्रीयंत्र से बंधे हुए होने के कारण ग्रहों की प्रतिकूल दशा का असर धारण करने वाले व्यक्ति पर नहीं होता। गले में होने के कारण यह यंत्र पवित्र रहता है एवं स्नान करते समय इस यंत्र से स्पर्श होकर जो जल बिन्दु शरीर को लगते हैं वह गंगा जल के समान पवित्र हो जाते हैं। अपरोक्ष रूप से एक प्रकार से व्यक्ति का नित्य प्रति रत्न स्नान भी हो जाता है। इसलिए यह सबसे पावरफुल श्रीयंत्र कहलाता है। जिस प्रकार अमृत से ऊपर कोई औषधि नहीं उसी प्रकार लक्ष्मी प्राप्ति के लिए इस श्रीयंत्र से बढ़िया अन्य कोई यंत्र संसर में नहीं है। इस प्रकार के श्रीयंत्र शुभ मुहूर्त में प्राण प्रतिष्ठित करके हमारे कार्यालय में बनाए जाते हैं।

15. कर्ज अधिक हो तो 'दरिद्रतानाशक' अंगूठी धारण करें।

दरिद्रता नाशक अंगूठी– यदि हाथ में भाग्य रेखा छिन्न-भिन्न अवस्था में है। धनरेखा गायब है, तथा जीवन में रुपयों- पैसों की कमी लगातार बनी रहती है तो यह अंगूठी धारण करना बहुत जरूरी है। तंत्रोक्त 'शारदा तिलक' के अनुसार–

तारताम्र सुवर्णानांअर्क षोडशखेन्दुभि:।
पुष्यार्के घटिका मुद्री ऋणदारिद्र्य नाशिनी॥

अर्थात् सोलह रत्ती तांबा, बारह रत्ती चांदी एवं दस रत्ती सुवर्ण इन तीनों धातु की अंगूठी पुष्य नक्षत्र के घंटीपल में बनाकर मंत्रपूत करके पहनी जाएं तो कैसी भी दरिद्रता हो धीरे-धीरे नष्ट हो जाती है, कैसा भी कर्ज हो उतर जाता है। यह अनुभूत है। इस अंगूठी को धार्मिक भाषा में 'पवित्री' भी कहते हैं। यह धातु स्पर्श चिकित्सा का सबसे चमत्कारी पहलू है। किसी भी प्रकार की असुविधा होने पर उपर्युक्त सभी सामग्रियां हमारे जोधपुर कार्यालय से प्राप्त की जा सकती हैं।

16. वैशाख पूर्णिमा को व्रत, हवन एवं तीर्थ स्नान करने से स्थाई धन की प्राप्ति होती है।

वैशाखी पूर्णिमा–वैशाखी पूर्णिमा स्नान लाभ की दृष्टि से अंतिम पर्व है। इस दिन गंगा जैसी पवित्र नदी में स्नान करना चाहिए। दान के लिए मिष्ठान, सत्तू, वस्त्र आदि का विशेष महत्त्व है। श्रीकृष्ण के बचपन के सहपाठी दरिद्र ब्राह्मण सुदामा जब द्वारिका उनसे मिलने गए तो उन्होंने सत्य विनायक व्रत का उनको विधान बताया। इसी व्रत के प्रभाव से सुदामा की सब दरिद्रता जाती रही तथा वह अत्यन्त ऐश्वर्यशाली हो गए।

17. अभीष्ट सिद्धि हेतु घर की स्त्रियों को 'सोमप्रदोष' का व्रत करना चाहिए।

सोम त्रयोदशी प्रदोष व्रत–सूत जी बताने लगे–'सोम त्रयोदशी प्रदोष व्रत से शिव-पार्वती प्रसन्न होते हैं। व्रती के समस्त मनोरथ पूर्ण होते हैं।'

एक नगर में एक ब्राह्मणी रहती थी। उसके पति का स्वर्गवास हो गया था। उसका अब कोई आश्रयदाता नहीं था, इसलिए प्रात: होते ही वह अपने पुत्र के साथ भीख मांगने निकल पड़ती थी। भिक्षाटन से ही वह स्वयं व पुत्र का पेट पालती थी। एक दिन ब्राह्मणी घर लौट रही थी तो उसे एक लड़का घायल अवस्था में कराहता हुआ मिला। ब्राह्मणी दयावश उसे अपने घर ले आई।

वह लड़का विदर्भ का राजकुमार था। शत्रु सैनिकों ने उसके राज्य पर आक्रमण कर उसके पिता को बन्दी बना लिया था और राज्य पर नियंत्रण कर लिया था, इसलिए वह मारा-मारा फिर रहा था। राजकुमार ब्राह्मण पुत्र के साथ ब्राह्मणी के घर रहने लगा। एक दिन अंशुमति नामक एक गंधर्व कन्या ने राजकुमार को देखा और उस पर मोहित हो गई। अगले दिन अंशुमति अपने माता-पिता को राजकुमार से मिलाने लाई। उन्हें भी राजकुमार भा गया। कुछ दिनों बाद अंशुमति के माता-पिता को शंकर भगवान ने स्वप्न में आदेश दिया कि राजकुमार और अंशुमति का विवाह कर दिया जाए। उन्होंने वैसे ही किया। ब्राह्मणी प्रदोष व्रत करती थी। उसके व्रत के प्रभाव और गंधर्वराज की सेना की सहायता से राजकुमार ने विदर्भ से शत्रुओं को खदेड़ दिया और पिता के राज्य को पुन: प्राप्त कर आनन्दपूर्वक रहने लगा। राजकुमार ने ब्राह्मण पुत्र को अपना प्रधानमंत्री बनाया।

ब्राह्मणी के प्रदोष व्रत के महात्म्य से जैसे राजकुमार और ब्राह्मण पुत्र के दिन फिरे, वैसे ही शंकर भगवान अपने दूसरे भक्तों के दिन फेरते हैं।

आकर्षण बढ़ाने हेतु, यश प्राप्ति एवं पराक्रम वृद्धि हेतु

1. स्फटिक माला डॉयमण्ड कटिंग वाली गले में धारण करें। इसे आकर्षण मंत्रों द्वारा अभिमंत्रित करके पहनें तो शीघ्र प्रभाव होगा।
2. तृतीयेश बुध का रत्न पन्ना कनिष्टिका अंगुली में सवा छ: रत्ती का धारण करें। कर्क लग्न में बुध दो अशुभ भावों तृतीय एवं द्वादश का स्वामी होता है। अत: यह रत्न सुवर्ण धातु में पहनना चाहिए चांदी में नहीं।
3. यदि कुण्डली में शुक्र की स्थिति अच्छी हो तो पन्ने के साथ हीरा या जिरकॉन भी समान वजन के पहन सकते हैं।
4. भगवती जगदम्बा को सौ सुगन्धित मालती के पुष्प 'चन्द्र कवच' को पढ़ते हुए चढ़ाएं।
5. जेब में सफेद रुमाल रखें।
6. चमेली या मालती का अत्तर या स्प्रे प्रति सोमवार काम में लिया करें।
7. सोमवार को जब भी घर से बाहर निकलें कांच में मुंह देखकर निकलें।

माता, मकान एवं घर में सुख शान्ति हेतु

1. आपकी कुण्डली की चतुर्थेश शुक्र का रत्न 'हीरा' या 'जिरकान' सवा पांच रत्ती, सवा चार रत्ती मोती के साथ 'बीसा यंत्र' में धारण करें तो माता के सुख, मकान के सुख, नौकर-चाकर के सुख, वाहन के सुख में अकल्पनीय वृद्धि होगी।
2. चन्द्रमा के पौराणिक मंत्र का मोती की माला पर जप करें।
3. 28 सोमवार का नियमित व्रत करें।
4. दुर्गासप्तशती का पाठ वैदिक चन्द्रमा के मंत्रों से सम्पुष्टित करके हवन करें तो तीन माह के भीतर नए मकान की प्राप्ति होती है।
5. सवा चार रत्ती का मोतीयुक्त चन्द्रमा गले में धारण करें तो घर में कलह नहीं होगी।

सन्तान प्राप्ति हेतु

1. मूंगा सवा पांच रत्ती एवं मोती सवा पांच रत्ती दोनों रत्न शुद्ध सुवर्ण धातु में 'बीसा यंत्र' के साथ जड़वा कर मंत्रपूत करके गले में धारण करें।
2. प्रदोष व्रत के साथ शिवजी की विशिष्ट उपासना अनुष्ठान प्रारम्भ करें।
3. सन्तान गोपाल स्रोत का पाठ करें।
4. पंचमेश का रत्न मूंगा सवा आठ रत्ती का धारण करना चाहिए।

5. श्रावण शुक्ला पंचमी (नागपंचमी) को व्रत रखना चाहिए। नाग की पूजा करनी चाहिए। दूध-खीर का भोग लगाना चाहिए। इससे सर्प दोष, पितृ दोष एवं कालसर्पजनिक दोष की शान्ति होकर 'पुत्र रत्न' की प्राप्ति होती हैं।

नागपंचमी–श्रावण शुक्ल पंचमी को नाग पंचमी कहते हैं। इस दिन नागों की पूजा की जाती है। गरुड़ पुराण में ऐसा सुझाव दिया गया है कि नागपंचमी के दिन घर के दोनों बगल में नाग की मूर्ति खींचकर अनन्तर प्रमुख महानागों का पूजन किया जाए।

पंचमी नागों की तिथि है, ज्योतिष के अनुसार पंचमी तिथि के स्वामी नाग हैं। अर्थात् शेष आदि सर्पराजों का पूजन पंचमी को होना चाहिए। सुगंधित पुष्प तथा दूध सर्पों को अति प्रिय है। गांवों में इसे 'नागचैया' भी कहते हैं। इस दिन ग्रामीण लड़कियां किसी जलाशय में गुडियों का विसर्जन करती है। ग्रामीण बच्चे तैरती हुई इन निर्जीव गुड़ियों को डंडे से खूब पीटते भी हैं। तत्पश्चात् बहन उन्हें रुपयों की भेंट तथा आशीर्वाद देती है।

कथा–प्राचीन दन्त-कथाओं से ज्ञात होता है कि किसी ब्राह्मण के सात पुत्रवधुएं थी। सावन मास लगते ही छः बहुएं तो भाई के साथ मायके चली गई, परन्तु अभागी सातवीं के कोई भाई ही न था कौन बुलाने आता? बेचारी ने अति दुखित होकर पृथ्वी को धारण करने वाले शेषनाग को भाई रूप में याद किया। करुणायुक्त, दीन वाणी को सुनकर शेष जी वृद्ध ब्राह्मण के रूप में आए, और उसे लिवाकर चल दिए। थोड़ी दूर रास्ता तय करने पर उन्होंने अपना असली रूप धारण कर लिया। कुल परम्परा में नागों के बहुत से बच्चों ने जन्म लिया। उस नाग बच्चों को सर्वत्र विचरण करते देख शेष नागरानी ने उस वधू को पीतल का एक दीपक दिया तथा बताया कि इसके प्रकाश से तुम अंधेरे में भी सब कुछ देख सकोगी। एक दिन अकस्मात् उसके हाथ से दीपक नाग टहलते हुए नाग बच्चों पर गिर गया। परिणामस्वरूप उन सबकी थोड़ी पूंछ कट गई।

यह घटना घटित होते ही कुछ समय बाद वह ससुराल भेज दी गई। जब अगला सावन आया तो वह वधू दीवाल पर नामदेवता को उरेह कर उसकी विधिवत् पूजा तथा मंगल कामना करने लगी। इधर क्रोधित नाग बालक माताओं से अपनी पूंछ काटने का आदिकारण इस वधू को मारकर बदला चुकाने के लिए आए थे, लेकिन अपनी ही पूजा में श्रद्धावनत देखकर वे सब प्रसन्न हुए और उनका क्रोध समाप्त हो गया। बहन स्वरूपा उस वधू के हाथ से प्रसाद रूप में उन लोगों ने दूध तथा चावल भी खाया। नागों ने उसे सर्पकुल से निर्भय होने का वर तथा उपहार में मणियों की माला दी। उन्होंने यह भी बताया कि श्रावण मास के शुक्ल पक्ष की पंचमी को हमें भाई रूप में जो पूजेगा उसकी हम रक्षा करते रहेंगे।

6. श्रावण शुक्ला एकादशी एवं पौष शुक्ला एकादशी, पुत्रदा एकादशी कहलाती है। इस दिन विष्णु भगवान की पूजन कर व्रत रखने से 'पुत्र रत्न' की प्राप्ति होती हैं।

पुत्रदा एकादशी–यह एकादशी सावन शुक्ल पक्ष में 'पुत्रदा एकादशी' के नाम से मनाई जाती है। इस दिन भगवान विष्णु के नाम पर व्रत रख कर पूजा करनी चाहिए। तत्पश्चात वेदपाठी ब्राह्मणों को भोजन कराके दान देकर आशीर्वाद लेना चाहिये। सारा दिन भगवान के वंदन, कीर्तन में बिताएं तथा रात्रि में भगवान की मूर्ति के पास ही सोना चाहिए। इस व्रत को रखने वाले नि:संतान व्यक्ति को पुत्ररत्न की प्राप्ति होती है।

कथा–प्राचीन समय में महिष्मती नगरी मे महीसित नामक राजा राज्य करते थे। अत्यन्त धर्मात्मा, शान्ति प्रिय तथा दानी होने पर भी उनके कोई संतान नहीं थी। इसी से राजा अत्यन्त दु:खी थे। एक बार राजा ने अपने राज्य के समस्त ऋषियों को बुलाया तथा संतान प्राप्ति का उपाय पूछा। इस पर परम ज्ञानी लोमश ऋषि ने बताया कि आपने पिछले सावन मास की एकादशी को अपने तालाब से प्यासी गाय को पानी पीने से हटा दिया था। उसी के शाप से आपके कोई संतान नहीं हो रही है। इसलिए आप सावन माह को पुत्रदा एकादशी का नियमपूर्वक व्रत रखिए तथा रात्रि जागरण कीजिये, पुत्र अवश्य प्राप्त होगा। ऋषि के आज्ञानुसार राजा सहित एकादशी व्रत रहा और पुत्ररत्न प्राप्त हुआ।

7. कार्तिक शुक्ला एकादशी को तुलसी विवाह करने से भी व्यक्ति को उत्तम संतति की प्राप्ति होती है।
8. हरिवंश पुराण की कथा का विधिपूर्वक श्रवण करने से भी उत्तम संतति की पुत्र प्राप्ति होती है। जिनके संतान होकर जीवित न रहती हो उन्हें आश्विन कृष्ण अष्टमी को जीवित पुत्रिका व्रत व कथा करनी चाहिए।
9. पुत्र सन्तान की प्राप्ति हेतु घर की स्त्रियों को 'शनिप्रदोष' का व्रत करना चाहिये।

शनि त्रयोदशी प्रदोष व्रत–सूत जी बोले–

'पुत्र कामना हेतु यदि, हो विचार शुभ शुद्ध।
शनि प्रदोष व्रत परायण, करे सुभक्त विशुद्ध॥'

कथा–प्राचीन समय की बात है। एक नगर सेठ धन-दौलत और वैभव से सम्पन्न था। वह अत्यन्त दयालु था। उसके यहां से कभी कोई भी खाली हाथ नहीं लौटता था। वह सभी को जी भरकर दान-दक्षिणा देता था। लेकिन दूसरों को सुखी दीखने वाले सेठ और उसकी पत्नी स्वयं काफी दु:खी थे। दु:ख का कारण था–उनके संतान का न होना। संतानहीनता के कारण दोनों घुले जा रहे थे। एकदिन उन्होंने तीर्थयात्रा पर जाने का निश्चय किया और अपने काम-काज सेवकों को सौंप कर चल पड़े। अभी वे नगर से बाहर ही निकले थे कि उन्हें एक विशाल वृक्ष के नीचे समाधि लगाए, एक तेजस्वी साधु दिखाई पड़े। दोनों ने सोचा कि साधु महाराज से आशीर्वाद लेकर आगे की यात्रा शुरू की जाए। पति-पत्नी दोनों समाधिलीन साधु के सामने हाथ जोड़कर बैठ गए और उनकी समाधि टूटने की प्रतीक्षा करने लगे। सुबह से शाम फिर रात हो गई। लेकिन साधु की समाधि नहीं टूटी। मगर सेठ पति-पत्नी धैर्यपूर्वक हाथ जोड़े पूर्ववत् बैठे रहे।

अंतत: अगले दिन प्रात: काल साधु समाधि से उठे। सेठ पति-पत्नी को देख मन्द-मन्द मुस्कराए और आशीर्वाद स्वरूप हाथ उठाकर बोले-"मैं तुम्हारे अंतर्मन की कथा भांप गया हूं वत्स! मैं तुम्हारे धैर्य और भक्तिभाव से अत्यन्त प्रसन्न हूं। साधु ने संतान प्राप्ति के लिए उन्हें शनि प्रदोष व्रत करने की विधि समझाई और शंकर भगवान की निम्न वन्दना बताई-

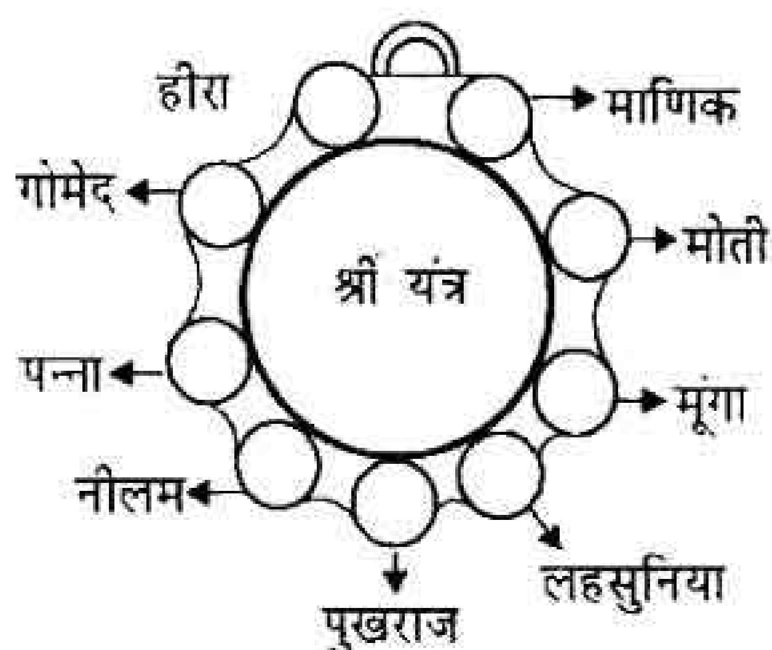
हे! रुद्रदेव शिव नमस्कार। शिव शंकर जगद्गुरु नमस्कार।।
हे! नीलकंठ सुर नमस्कार। शशि मौलि चन्द्र सुख नमस्कार।।
हे! उमाकान्त सुधि नमस्कार। उग्रत्व रूप मन नमस्कार।।
ईशान ईश प्रभु नमस्कार। विश्वेश्वर प्रभु शिव नमस्कार।।

तीर्थयात्रा के बाद दोनों वापस घर लौटे और नियमपूर्वक शनि प्रदोष व्रत करने लगे। कालान्तर में सेठ की पत्नी ने एक सुन्दर पुत्र को जन्म दिया। शनि प्रदोष व्रत के प्रभाव से उनके यहां छाया अंधकार लुप्त हो गया। दोनों आनंदपूर्व रहने लगे।

गुप्त एवं प्रकट शत्रु नाश तथा मुकदमे में विजय के लिए-

1. नित्य चन्द्र कवच एवं चन्द्रमा के अठाईस नामों वाले स्रोत का पाठ करें।
2. बगुलामुखी का जाप दशांश हवन अनुष्ठान करें।
3. बगुलामुखी यंत्र गले में धारण करें।

इस यंत्र को लॉकेट के रूप में धारण करने से व्यक्ति अपने शत्रु को नष्ट करने में सक्षम व समर्थ हो जाता है। व्यक्ति को ऐसा आभास होता है जैसे कोई गुप्त शक्ति उसके साथ चल रही है। इस यंत्र को हर समय नहीं पहनना चाहिए। रात्रिकाल में गृहस्थ के समय इसको उतार लेना चाहिए। इस यंत्र को पहनकर व्यक्ति कोर्ट में खड़ा हो जाए तो मन में बगलामुखी यंत्र का उच्चारण करता रहे तो प्रतिकूल मजिस्ट्रेट (न्यायाधीश) भी उसके खिलाफ फैसला नहीं दे सकता। कहने का तात्पर्य यह है कि इसे पहन कर व्यक्ति यदि जलती आग में भी कूद जाए एवं शत्रुओं के बीच में भी घुस जाए तो उस का बाल बांका नहीं होता है, यह अनुभूत है।



4. खोया हुआ राज्य पुन: प्राप्त हो जाए एवं सभी शत्रु नष्ट हो जाएं इसके लिए भाद्र शुक्ल एकादशी, परिवर्तनी एकादशी का व्रत व कथा करनी चाहिए।

परिवर्तनी एकादशी–भाद्रपद शुक्ल पक्ष की एकादशी को पद्मा एकादशी भी कहते हैं यह श्रीलक्ष्मी जी का परम आह्लादकारी व्रत है। इस दिन भगवान विष्णु क्षीर सागर में शेष शय्या पर शयन करते हुए करवट बदलते हैं। इसीलिए इसे करवटनी एकादशी भी कहा जाता है। इस दिन लक्ष्मी पूजन करना श्रेष्ठ है, क्योंकि देवताओं ने अपने पुनः राज्य को पाने के लिए महालक्ष्मी का ही पूजन किया था।

5. चन्द्रमा कुण्डली में कमजोर हो, नीच का हो, पद्च्युत हो, तो चन्द्रमा को बलवान व प्रसन्न करने के लिए मार्गशीर्ष पूर्णिमा को व्रत एवं हवन करना चाहिए।
6. इसी प्रकार कोर्ट-कचहरी व मुकदमों में विजय प्राप्त करने के लिए माघ शुक्ला एकादशी 'विजया एकादशी' का व्रत रखकर हवन करना चाहिए।

विजया एकादशी–यह व्रत फाल्गुन कृष्ण पक्ष एकादशी को किया जाता है। इस दिन भगवान विष्णु की पूजा करने से अत्यन्त पुण्य होता है। पूजन में धूप, दीप, नैवेद्य, नारियल आदि चढ़ाया जाता है।

सप्त अन्न युक्त घट स्थापन किया जाता है। जिसके ऊपर विष्णु की मूर्ति रखी जाती है। इस तिथि को 24 घंटे कीर्तन करके दिन-रात बिताना चाहिये। द्वादशी के दिन अन्न भरा घड़ा ब्राह्मण को दिया जाता है। इस व्रत को प्रभाव से दुःख दारिद्रय दूर हो जाते हैं, समग्र कार्य में विजय प्राप्त होती है। इसकी कथा भगवान राम की लंका विजय से सम्बन्धित है।

7. शत्रुनाश हेतु घर के स्त्री-पुरुषों को 'शुक्र प्रदोष' का व्रत करना चाहिए।

शीघ्र विवाह, सुयोग्य सुन्दर जीवन साथी की प्राप्ति एवं दाम्पत्य सुख में वृद्धि हेतु

1. आपकी कुण्डली में शनि सप्तमेश है अतः जीवन साथी की प्राप्ति हेतु शनि का रत्न 'नीलम' अभिमंत्रित करके नीले रंग के रुमाल के साथ दो माह तक जेब मे रखें। शनि की वस्तुओं का दान करें। कर्क लग्न वालों को नीलम तो भूल कर भी नहीं पहनना चाहिए क्योंकि वह सप्तम (मारक स्थान) और अष्टम (दुःख स्थान) का स्वामी होने के कारण अशुभ है।
2. ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्या को बट्-सावित्री पूजन, कथा करने से सुहागिन स्त्रिओं के पति को दीर्घायु की प्राप्ति होती है।
3. श्रावण मास में जितने भी मंगलवार आते हैं उनका व्रत मंगलागौरी व्रत कहलाता है यह प्रायः सुहागिन स्त्रियां अपने पति की दीर्घायु के लिए करती हैं। यदि कंवारी कन्या भी करें तो उत्तम पति की प्राप्ति होती है।
4. भाद्रशुक्ल तीज हरितालिका तीज कहलाती है। इस दिन उपवास रखने पर पति प्रसन्न हो जाता है। पति पत्नी के मध्य प्रेम बढ़ जाता है।

5. कार्तिक कृष्ण चतुर्थी करवा चौथ का व्रत करने से पति की आयु बढ़ती है। यह व्रत विवाहित स्त्री के लिए है।
6. माघ शुक्ल एकादशी 'जया एकादशी' का व्रत रखने पर गुस्सैल पत्नी भी अनुकूल हो जाती है। यह व्रत केवल पुरुषों के लिए है।

जया एकादशी—यह व्रत माघ शुक्ल पक्ष एकादशी को किया जाता है। इस तिथि को भगवान केशव (कृष्ण) की पुष्प, जल, अक्षत, रोली तथा विशिष्ट सुगंधित पदार्थों से पूजन करके आरती उतारनी चाहिए। भगवान को भोग लगाये गए प्रसाद को भक्त स्वयं खाये।

कथा—एक समय की बात है इन्द्र की सभा में एक गंधर्व गीत गा रहा था, परन्तु उसका मन अपनी नवयौवाना सुन्दरी में आसक्त था। अतएव स्वर-लय भंग हो रहा था। यह लीला इन्द्र को बहुत बुरी तरह खटकी, तब उन्होंने क्रोधित होकर कहा—हे दुष्ट गंधर्व! तू जिसकी याद में मस्त है वह राक्षसी हो जाएगी। यह शाप सुनकर वह बहुत घबराया और इन्द्र से क्षमा याचना करने लगा। इन्द्र के कुछ न बोलने पर वह घर चला आया, यहां आकर देखने पर उसकी पत्नी सचमुच पिशाचिनी रूप में मिली। शाप निवृत्ति के लिए उसने करोड़ों यत्न किए, परन्तु सब असफल रहे तब हार कर बैठ गया। अकस्मात एक दिन उसका साक्षात्कार ऋषि नारद से हो गया। तब उन्होंने दु:ख का कारण पूछा। गंधर्व ने सब बातें यथावत् बता दीं। वह सुनकर नारद ने माघ शुक्ल पक्ष की जया-एकादशी का व्रत तथा भगवत कीर्तन करने को कहा। गंधर्व ने एकादशी का व्रत किया जिसके प्रभाव से उसकी पत्नी अत्यन्त सौन्दर्यशाली हो गई।

7. पति-पत्नी में मनमुटाव हो जाए, तलाक की नौबत आ जाए तो कार्तिक कृष्ण एकादशी 'रम्भ एकादशी' का व्रत रखने से दोनों में प्रेम हो जाएगा।
8. सौभाग्य एवं स्त्री की समृद्धि हेतु पुरुष जातक को 'शुक्र प्रदोष' का व्रत करना चाहिए।

नौकरी प्राप्ति, व्यापार-व्यवसाय में उन्नति एवं शीघ्र भाग्योदय हेतु

1. भाग्योदय हेतु मूंगा सवा पांच रत्ती एवं भाग्येश गुरु का रत्न 'पुखराज' सवा पांच रत्ती का पैण्डल सुवर्ण धातु में 'बीसा यंत्र' के साथ बनवाकर गले में पहनना चाहिए।



बीसा यंत्र में यह दोनों रत्न गजकेसरी योग को प्रबल पुष्ट करते हैं। जिन लोगों को परिश्रम करने पर भी मेहनत का बराबर फल नहीं मिलता जिनका प्रमोशन पदोन्नति नहीं हो रहा हो, अथवा जिनको अपने राजनैतिक व सामाजिक महत्त्व का पूरा लाभ नहीं मिल रहा हो, उनको यह यंत्र अवश्य धारण करना चाहिए। यह हमारा अद्भुत प्रयोग है कि इस यंत्र को धारण करने से व्यक्ति का प्रभाव, पराक्रम, प्रभुत्व बढ़ जाता है। ऐसा व्यक्ति दूसरों को

शीघ्र प्रभावित करके अपना कार्य दूसरों से निकलवाने में सक्षम व समर्थ हो जाता है। महत्वाकांक्षी लोगों के लिए यह यंत्र अमृततुल्य उपादेय औषधि है जो ताकत की कार्यकुशलता को कई गुना बढ़ा देता है।

2. चाहे तो उपरोक्त संयुक्त रत्नों की अंगूठी भी तर्जनी या अनामिका अंगुली में धारण कर सकते हैं।
3. मूंगा सवा चार रत्ती, पुखराज सवा चार रत्ती, मोती सवा चार रत्ती इन तीनों रत्नों को त्रिलौह धातु या शुद्ध सुवर्ण में लॉकेट बनाकर मंत्रपूरित करके पहले तो मार्ग रुकावट दूर होकर शीघ्र भाग्योदय होगा।
4. चार श्वेत पुष्प प्रति सोमवार एवं पूर्णिमा को कुएं या बहते पानी में प्रवाहित करें। ऐसा 28 बार करने से कई बार अचानक भाग्योदय हो जाता है।
5. चांदी के बर्तनों में भोजन करें, जल पियें।
6. प्रत्येक सोमवार को बिल्व वृक्ष में दूध चढ़ावें।
7. नवरत्न जड़ित स्पेशल पावरफुल 'श्रीयंत्र' सुवर्ण में धारण करें।

पिता सुख, राज्य व व्यापार में तरक्की हेतु

1. नित्य शिवजी का पूजा करें। शिवरात्रि का व्रत एवं जागरण रखें।

महाशिवरात्रि व्रत–फाल्गुन कृष्ण पक्ष चतुर्दशी को शिवरात्रि का महोत्सव मनाया जाता है। त्रयोदशी को एक बार भोजन करके चतुर्दशी को दिन भर अन्न ग्रहण करना नहीं चाहिए। काले तिलों से स्नान करके रात्रि में विधिवत् शिव पूजन करना चाहिए। शिव पूजन विधान से बेलपत्र सबसे प्रमुख है। शिवजी पर पका आम चढ़ाने से विशेष फल प्राप्त होता है। शिवलिंग पर चढ़ाए गए पुष्प, फल तथा जल को नहीं ग्रहण करना चाहिए।

2. अमरनाथ की यात्रा अथवा द्वादश ज्योतिर्लिंगों की यात्रा करें।
3. घर की छत के नीचे कुआं या हैण्ड पम्प न लगाना।
4. चन्द्र दोष पीड़ित व्यक्ति को प्रदोष व्रत एवं श्रावण के सोमवार को रुद्राभिषेक, शिव पूजन अवश्य करना चाहिए।
5. पंचमुखी रुद्राक्ष को पूजा स्थान पर रखकर नियमित पूजन करें।
6. 'ऊं नमः शिवाय' पंचाक्षर मंत्र की माला का नित्य जाप करें।

भागीदारी एवं मित्रों से लाभ प्राप्ति हेतु

1. सोलह सोमवार की कथा करें।
2. चावल, चांदी, दूध का दान छोटे-बच्चों को करें।
3. सवा चार रत्ती सच्चे मोती की अंगूठी, चांदी में बनवाकर अभिमंत्रित करके पहनें।

4. ग्यारह ब्राह्मणों से दुग्ध-भांग मिश्रित रुद्राभिषेक करवा कर, ब्राह्मणों को खीर का भोजन कराएं।
5. शिव चालीसा का नियमित पाठ करें।

मानसिक तनाव कम करने, आत्मबल में वृद्धि एवं सुखपूर्वक नींद प्राप्त करने हेतु–

1. शुद्ध, सच्चे एवं गोल मोतियों की माला गले में धारण करें।
2. माला यदि मंत्रों द्वारा प्राणप्रतिष्ठित–अभिमंत्रित करके पहनें तो ज्यादा लाभ होगा।
3. चांदी की चार कीलें पलंग के सिरहाने वाले पाए पर लगाएं।
4. शयन करने के पूर्व हाथ-पांव धोकर 'रात्रि सूक्त' का पाठ करें।
5. शयनकक्ष मे ऊटपटांग चित्र, डरावने फोटो, मूर्तियां, लाल रंग की बत्ती वगैरा नहीं होनी चाहिए।
6. तनाव रहित जीवन जीने हेतु, सर्वकामना सिद्धि हेतु घर के स्त्री-पुरुषों को 'बुध प्रदोष' का व्रत करना चाहिए।

बुध त्रयोदशी प्रदोष व्रत–सुत जी आगे बोले–'बुध त्रयोदशी प्रदोष व्रत से सर्व कामनाएं पूर्ण होती हैं। इस व्रत में हरी वस्तुओं का प्रयोग करना चाहिए। शंकर भगवान की आराधना धूप, बेल-पत्रादि से करनी चाहिए।'

व्रत कथा–एक पुरुष का नया-नया विवाह हुआ। विवाह के दो दिनों बाद उसकी पत्नी मायके चली गई। कुछ दिनों बाद वह पुरुष पत्नी को लेने उसके यहां गया। बुधवार को जब वह पत्नी के साथ लौटने लगा तो ससुराल पक्ष ने उसे रोकने का प्रयत्न किया कि विदाई के लिए बुधवार शुभ नहीं होता। लेकिन वह नहीं माना और पत्नी के साथ चल पड़ा। नगर के बाहर पहुंचने पर पत्नी को प्यास लगी। पुरुष लोटा लेकर पानी की तलाश में चल पड़ा। पत्नी एक पेड़ के नीचे बैठ गई। थोड़ी देर बाद पुरुष पानी लेकर वापस लौटा, उसने देखा कि उसकी पत्नी किसी के साथ हंस-हंसकर बातें कर रही है और उसके लोटे से पानी पी रही है। उसको क्रोध आ गया। वह निकट पहुंचा तो उसके आश्चर्य का कोई ठिकाना न रहा। उस आदमी की सूरत उसी की भांति थी। पत्नी भी सोच में पड़ गई। दोनों पुरुष झगड़ने लगे। भीड़ इकट्ठी हो गई। सिपाही आ गए। हमशक्ल आदमियों को देख वे भी आश्चर्य में पड़ गई। उन्होंने स्त्री से पूछा–'उसका पति कौन है?' वह किंकर्तव्यविमूढ़ हो गई। तब वह पुरुष शंकर भगवान से प्रार्थना करने लगा–'हे भगवान् हमारी रक्षा करें। मुझसे बड़ी भूल हुई कि मैंने सास-श्वसुर की बात नहीं मानी और बुधवार को पत्नी को विदा कर लाया। लोकोक्ति भी प्रचलित है–बुध बेटी, कभी ने भेंटी। मैं भविष्य में ऐसा कदापि नहीं करूंगा। जैसे ही उसका प्रार्थना पूरी

हुई, दूसरा पुरुष अंतर्धान हो गया। पति-पत्नी सकुशल अपने घर पहुंच गए। उस दिन के बाद से पति-पत्नी नियमपूर्वक बुध त्रयोदशी प्रदोष व्रत रखने लगे और सुखपूर्वक रहने लगे।

आह्वान–

ऋषिभिः स्तूयमानं च भौममावह्याम्यहम्।। 1।।
उज्जयिन्यां समुत्पन्नो भोभो भौमश्चतुर्भुजः।
भारद्वाजकुले जातः शूलशक्तिगदाधारः।। 2।।
वरदो मेषमारूढः स्कन्दप्रावृड्तडित्प्रभो।
स्योना पृथ्वीति मन्त्रेण दलेयाम्ये प्रतिष्ठितः।। 3।।
ॐ स्योनापृथिवीनोभवान्नृक्षरानिवेशनी–
पुच्छानः शर्म्मसप्रथाः।। 4।।
दक्षिणे भौमं स्थापयामि–

धूमकेतु नामाग्नि, समिधा, खैर (खादिर), फल-सुपारी मंगल यंत्र की स्थापना करें।

मंगल ग्रह की प्रतिष्ठा का वैदिक मन्त्र

ॐ अग्निमूर्द्धादिवः ककुत्पतिः पृथिव्याऽअयम्।
अपाः रेताः सिजिन्वति।।

तान्त्रिक मन्त्र

ॐ क्रॉं क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः।

मंगल अरिष्ट नाशन के विविध उपाय

1. मंगलकृत अरिष्ट निवारणार्थ मंगल व्रत सहित मंगल मन्त्र का विधिवत अनुष्ठान करना चाहिए।
2. समर्थ गुरु के निर्देशन में भैरव (विशेष रूप से आयु वृद्धारक बटुक भैरव) मन्त्र का प्रयोग पापक्रान्त या नीच राशिस्थ भौम के लिए अयोग्य है।
3. सिंह और धनु राशिस्थ मंगल के लिए कार्तिकेय एवं द्विस्वभाव (3, 6, 12) राशिस्थ मंगल के लिए चामुण्डा की उपासना करनी चाहिए।
4. संयमी और शुद्र चरित्र का व्यक्ति हनुमान जी की भी साधना कर सकता है।
5. मंगल की दशान्र्तदशा में आचार्य शंकर कृत सुब्रद्हमण्यम भुजंग स्तोत्र या कार्तिकेय स्तोत्र का पाठ एवं कुमार कार्तिकेय की पूजा लाभदायक रहती है। इसके साथ 11 प्रदोष तिथियों में रुद्राभिषेक करना चाहिए।
6. शत्रुबाधा अथवा अभिचार पीड़ा में भगवती प्रत्यौगरा अथवा पीताम्बरा के पंचाग का प्रयोग करना चाहिए।
7. वंश वृद्धि के लिए मंगल यंत्र को प्राण प्रतिष्ठित कर उसका विधिवत जप और पूजन करें।
8. ऋण और धान नाश की स्थिति में ऋण मोचन अंगारक स्तोत्र एवं वाल्मीकि रामायण के सुन्दर काण्ड का पाठ लाभदायक रहता है।
9. कन्याओं के मंगली दोष में श्रीमद् भागवत के अठाहरवें अध्याय के नवम श्लोक का जप करें।
10. रक्त पुष्पों से मंगल की पूजा 'तब जनक पाय वशिष्ठ आयसु हंकारि के' इस सम्पुट के साथ तुलसी रामायण के सुन्दर काण्ड का पाठ, गौरी पूजन सहित अभीष्ट प्रद है।
11. मंगल यंत्र अथवा कवच और निर्दोष गूंगा धारण करना एवं यथा शक्ति दान भी हितकारी सिद्ध होता है।
12. सामान्य मंगल पीड़ा बजरंग बाण एवं हनुमान जी के मंदिर में दीपदान से भी दूर होती है।
13. लक्ष्मी स्तोत्र, देवी कवच, गणपति स्तोत्र अथवा मोचन स्तोत्र में से किसी भी एक का नियमित वाचन करें।
14. 21 मंगलवार, 21 संकटीव्रत तथा 21 विनायकी व्रत करें।
15. ताम्रपात्र से जल पीएं।

16. मसूर की दाल तथा गुड़ अवश्य ही मंगलवार को ग्रहण करें।
17. श्री गणेश जी के दर्शन करें।
18. देवी भगवत का पाठन अथवा श्रवण करें।
19. लाल पुष्पों को जल में प्रवाहित करें।
20. तुलसी पत्र का भक्षण करें। कालीमिर्च भी खाएं।
21. तुलसी के पौधों में जल चढ़ाएं।
22. मंगल के होरा में निर्जल रहें।
23. वृष या तुला लग्न में मंगल छठे, आठवें, बारहवे हो या कुण्डली मंगलीक हो तो भावी वैवाहिक जीवन की मंगल कामना के लिए, विवाह समय दो बराबर वजन के मूंगे लें। फिर संकल्पपूर्वक एक मूंगा पानी में बहा दें तथा दूसरा मूंगा अपने पास रखें। जब तक यह मूंगा व्यक्ति के पास रहेगा। उसको मंगल का अशुभ प्रभाव स्पर्श नहीं करेगा तथा उसका वैवाहिक जीवन पूर्णतः सुखी रहेगा।
24. मंगलवार का नियमित 28 बार व्रत रखना। ध्यान रहे बीच में नियम टूटने पर पुनः 28 मंगलवार करने पड़ेगे। कार्य सिद्ध होने पर मंगल का उद्यापन अनिवार्य है।
25. महागायत्री का पाठ करना, हनुमान जी को सिन्दूर लगाना। एवं खुद भी हनुमान जी के पैरों में रखे हुए सिन्दूर को लगाएं।
26. दाल मसूर, मूंगा, शहद या सिन्दूर आदि का दान देना या जल प्रवाह करना चाहिए।
27. खाने के बाद मेहमानों को मीठा (सौंफ-चीनी या मिश्री) खिलाना चाहिए।
28. मंगल (अशुभ हो तो) रेवड़ियां (गुड़+तिल) जल प्रवाह करनी चाहिए।
29. मंगल (शुभ हो तो) मिठाई-मीठा भोजन का दान या पताशे चलते पानी में बहाएं।
30. मूंगा (लाल) धारण करें, मूंगे के आभाव में तांबा धारण करें।
31. भाई की सेवा करना।
32. मृगशाला (हिरण की खाल) पर सोएं।
33. जौ (अनाज) गऊ पेशाब से धोकर लाल कपड़े में बांधा कर रखें।
34. लाल वस्त्र धारण करना या लाल रुमाल पास रखें।
35. चांदी खालस धारण करना।
36. ढेक, काना, काला, गंजा, निःसन्तान से दूर रहें।
37. मंगल उच्च हो तो उसकी चीजों का दान न दें।
38. मंगल नीच या अशुभ हो तो उसकी चीजों का दान न लें। उपरोक्त उपाय 5, 11 या 43 दिन या सप्ताह या मास लगातार करने चाहिए।
39. मंगल को शक्तिशाली बनाने के लिये "मंगलयन्त्र" धारण करें।
40. जिसको सुयोग्य जीवन साथी की अभिलाषा हो वे "मंगलयन्त्र" धारण करके, 28 मंगलवार का व्रत रखें निश्चय लाभ होगा।
41. निवृत्ति की इच्छा के साथ जस जातक को धनसंग्रह की कामना हो तो "मंगलयन्त्र" में मूंगे के साथ मोती लगाए तो लक्ष्मीदेवी की कृपा हो जाएगी।

42. कर्जा अधिक बढ़ गया है, उतर नहीं रहा हो तो ''ऋणमोचन मंगल स्तोत्र'' का नियमित पाठ करें।

43. मंगल पीड़ा की विशेष शान्ति हेतु बेलफल, जटामांसी, मुसली, बदुलचंदन, बला, लाख पुष्प एवं हिंगलू मिला कर 8 मंगलवार तक स्नान करें।

44. यदि सन्तान प्रतिबन्धक ग्रह मंगल हो तो ग्रामदेवता, भगवान कार्तिक स्वामी, अथवा भाई-कुटम्बीजनों के शाप के कारण जातक को सन्तान सुख नहीं होता। ऐसे में मंगल के वेदाक्त मन्त्र का दस हजार जप करना चाहिए। मंगल सम्बन्धी वस्तुओं का दान करते हुए, मंगलवार का नियमित व्रत रखना चाहिए।

45. हरिवंश पुराण के अनुसार ऐसे जातक को महारुद्र या अतिरुद्र यज्ञ कराना चाहिए।

46. बाधक मंगल यदि गुणों से युक्त हो तो कुछ पताशे लेकर बहती नदी में डालें। श्रेष्ठफल देगा।

47. मंगल का अनिष्ट फल समाप्त करने हेतु मृगचर्म का आसन नित्य प्रयोग में लाएं।

48. मीठी रोटियां गरीबों में बांटें।

49. यवों को दूधा में धोकर, चलते पानी में बहाएं।

50. यदि जातक की कुण्डली में मंगल चौथे स्थान में हो, कुण्डली में ''मंगलीक दोष'' हो, माता, सास व दादी का स्वास्थ्य चिन्ता का विषय हो, घर में अशान्ति, आर्थिक नुकसान रहता हो, वैवाहिक चिन्ता रहती हो तो जातक सुबह उठते ही नित्य कुएं के जल से दांतुन किया करें।

51. मीठे दूध, बड़ की जड़ व जमीन की मिट्टी से मिश्रित तिलक को ललाट पर लगाएं, ऐसा करने से पेट की बीमारी को शीघ्र आराम मिलेगा।

52. यदि अग्निभय रहता हो तो शक्कर की बोरी छत पर डाल दे तथा छत के सबसे ऊपरी हिस्से पर कुछ शक्कर डाल दें।

53. यदि बीमारी की वजह से संतान व पत्नी के आयु का भय हो तो एक बर्तन में शहद डालकर शमशान घाट पहुंचा दे।

54. लम्बी बीमारी से बचने के लिए मृगचर्म अधिक से अधिक काम में लें तथा घर के दक्षिण द्वार की ओर लोहे के नाखून लटका दें या रख दें।

55. यदि मंगल आठवें स्थान में हो, जातक शत्रुओं से पीड़ित हो अथवा लम्बी बीमारी भुगत रहा हो तो मीठी रोटियां अथवा पराठे में मांस डालकर (लाल) कुत्तों को खिलाना चाहिए।

56. यदि पापी मंगल एकादश स्थान में हो, तीसरा घर खाली हो तो, जातक को पैतृक सम्पत्ति नुकसानदायक साबित होती है, कर्जदार जिन्दगी बीतती है। ऐसे जातक को घर में कुत्ता पालना लाभदायक रहता है।

57. मंगल द्वादश में हो, बुध 3, 8, 9, व 12 हो, तो जातक को द्वादश मंगल के दुष्परिणाम अवश्य भुगतने पड़ते हैं। ऐसी स्थिति में दूध में शहद डालकर दान करना चाहिए। कुत्तों को मीठी रोटी तथा हनुमान के मन्दिर में बताशे चढ़ाने चाहिए ।

दृष्टांत कुण्डलियां

देवाधिदेव भगवान शंकर जी

1	सू. मं.
2	चं.
3	रा.
4	गु.
5	
6	
7	
8	
9	के.
10	श.
11	
12	शु. बु.



गुरु श्री गोविन्द सिंह जी

1	
2	
3	रा.
4	
5	
6	
7	
8	के.
9	सू.
10	बु. श. मं.
11	शु.
12	गु. चं.



श्री रामानुजाचार्य

1	
2	
3	
4	रा. श.
5	
6	मं.
7	
8	गु. शु.
9	बु. सू.
10	कं.
11	
12	चं.



सिकन्दरे-आजम

1 | 2 श. | 3 मं. | 4 बु. | 5 के. सू. शु. | 6 | 7 गु. चं. | 8 | 9 | 10 | 11 रा. | 12



जन्म 22.9.356 BC, रात्रि 10.00 बजे, मेसडोनिया का राजा विश्व विजेता सिकन्दर ने, थेबन, परसिया, साईरा, इजिप्त, मिस्र, फोनेसिया इत्यादि देशों को जीता। फिर भारत आया और 326 BC में इसकी भारत से लौटते वक्त मृत्यु हुई, इसकी कब्र बेबीलोन में रखी गई।

सरदार वल्लभभाई पटेल (लौहपुरुष)

1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 के. | 7 सू. बु. गु. शु. | 8 | 9 चं. | 10 श. मं. | 11 | 12 रा.



जन्म 31.10.1875, समय 17.25 बजे, भारत के प्रथम गृहमंत्री

श्री चन्द्रबाबू नायडू

1 मं. सू. बु. | 2 शु. | 3 | 4 | 5 के. | 6 रा. | 7 | 8 | 9 चं. | 10 | 11 रा. | 12 गु.



मुख्यमंत्री तमिलनाडु, प्रधानमंत्री के दावेदार, जन्म 27.4.1951, समय 6.30 बजे प्रातः।

सुभाषचन्द्र बोस



जय हिन्द फौज के निर्माता, भारत को आजादी दिलाने वाले महान क्रान्तिकारी वीर पुरुष एवं राजनीतिज्ञ, मृत्यु रहस्यमय। जन्म 23.1.1897, 12.00 बजे दोपहर, जन्म-उड़ीसा।

अभिनेता अशोक कुमार



फिल्मी दुनिया के सबसे धनी व्यक्ति एवं लम्बी आयु वाले व्यक्ति। जन्म 13.10.1911, समय 20.00 बजे, जन्म स्थल-भागलपुर, मृत्यु-दिसम्बर 2001।

महाराजा कंस



जैक्वस शिराक

2
1
12
11 रा.
3
4
10 श.
मं. 5 बृ. के.
शु. 7
9 चं.
6
8 सू. बु.



फ्रांस के भूतपूर्व प्रधानमंत्री, जन्म पेरिस, 29.11.1932, समय 16.00।

महाराजा त्रावनकोर

2 के.
1 सू. बु.
12
11
3 शु.
4 गु.
10 मं.
चं.
5
7
9 श.
6
8 रा.



बहुत धनी महाराजा थे।

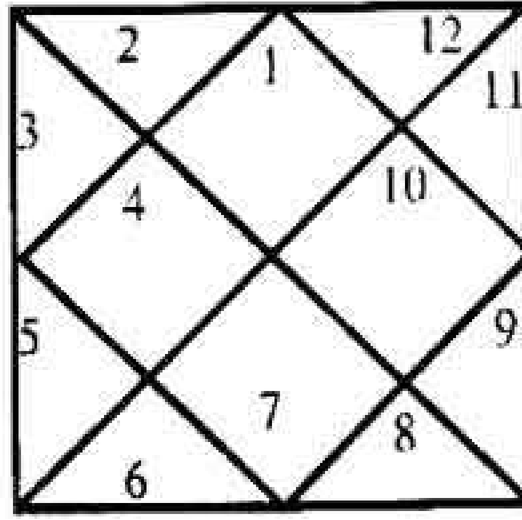
महारानी विक्टोरिया

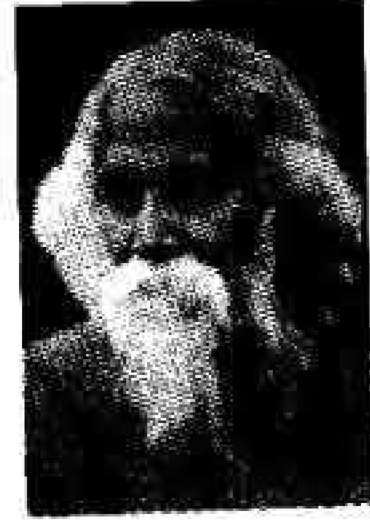
चं. 2 सू.
1 बु. शु.
श. मं. 12 रा.
11
3
4
10 गु.
5
7
9
6 के.
8



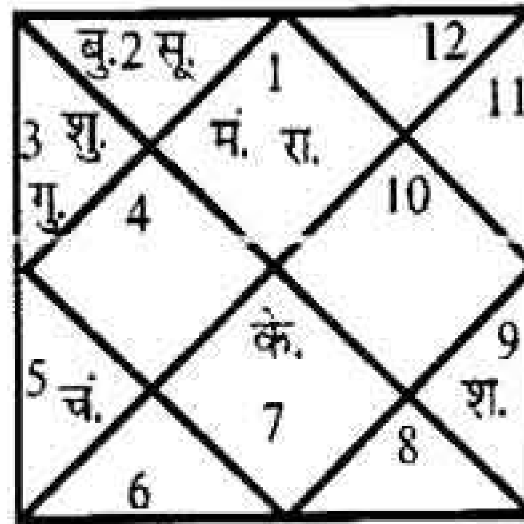
इंग्लैण्ड की प्रथम ब्रिटिश शासिका, जन्म 24.5.1819 समय 4.15 बजे प्रात: मृत्यु 22.1.1901 समय 8.30 बजे रात्रि, जिसके राज्य में ब्रिटिश का सूर्य कभी अस्त नहीं हुआ।

विश्वकवि रवीन्द्रनाथ टैगोर





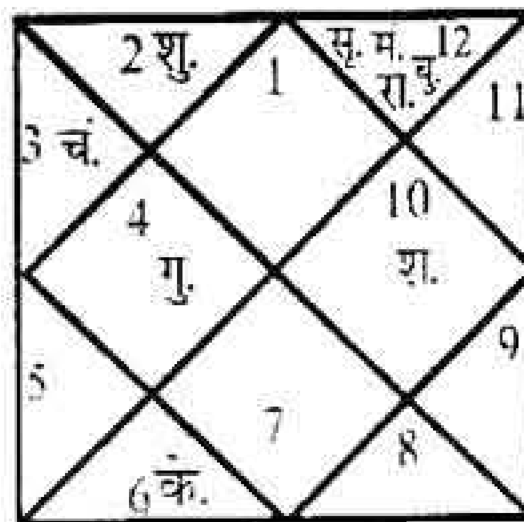
जार्ज फर्नांडीस





भारत के रक्षामंत्री, जन्म 3.6.1930, प्रात: 4.30 बजे, मैंगलोर (मैसूर) में।

कांशीराम





दलित नेता मुख्यमंत्री मायावती के गॉडफादर, जन्म 12.4.1932 प्रात: 7.30 बजे, जन्मभूमि-अबोहर (पंजाब)।

के.पी.एस. गिल



डायरेक्टर जनरल पुलिस (पंजाब), जन्म-लाहौर, 29.12.1934, समय 14.00 आंतकवादियों के शत्रु, जिसने पंजाब को आंतकवाद से मुक्त कराया।

लालू प्रसाद यादव



बिहार के भूतपूर्व मुख्यमंत्री, जन्मभूमि-फुलवरिया (बिहार) 11.6.1948, समय प्रात 4.00 बजे

गुलजारी लाल नन्दा



भूतपूर्व उपप्रधानमंत्री भारत।

श्री चन्द्रशेखर पूर्व प्रधानमंत्री

2 शु. | 1 सू. | 12 बु. | 11 गु. | 10 | 3 मं. रा. | 4 | 5 | 6 | 7 चं. | 8 श. | 9 कें.



भारत के भूतपूर्व प्रधानमंत्री, जन्मभूमि-गाजीपुर (उत्तरप्रदेश) जन्म 17.4.1927, समय प्रात 6.15 बजे।

अभिनेत्री हेमामालिनी

2 | 1 रा. | 12 चं. | 11 | 10 | 3 | 4 | 5 शु. | 6 बु. | 7 कें. सू. | 8 मं. | 9 गु.



भारत के रक्षामंत्री, जन्म 3.6.1930, प्रात: 4.30 बजे, मैंगलोर (मैसूर) में।

अभिनेत्री रीनाराय

2 चं. मं. | 1 | 12 | 11 | 10 | 3 बु. सू. गु. कें. | 4 | 5 शु. | 6 | 7 | 8 | 9 श. रा.



दलित नेता मुख्यमंत्री मायावती के गॉडफादर, जन्म 12.4.1932 प्रात: 7.30 बजे, जन्मभूमि-अबोहर (पंजाब)।

अभिनेता दिलीप कुमार

2 | 1 के. | श. 12 | 11 | 3 | 4 | 10 चं. | रा. | 9 | 5 | 7 मं. | गु. शु. | 6 | सू. 8 बु.



पूर्णकालसर्पयोग।

अभिनेत्री डिम्पल कापड़िया

2 सू. बु. | 1 के. | 12 | 11 | मं. 3 शु. | 4 | 10 | रा. 7 | 9 | 5 | चं. 6 गु. | 8 श.



अभिनेत्री स्मिता पाटिल

2 के. | 1 | 12 | 11 | 3 | 4 | 10 | श. शु. 7 सू. चं. | 9 | 5 गु. | बु. 6 मं. | 8 रा.



अल्पआयु का अनुपम उदाहरण, जन्म 17.10.1935, सांय 16.45, मृत्यु 1986, पूर्ण कालसर्पयोग।

गोविन्दा

2 1 गु. 12 11
3 रा. चं.
4 10 शु.
श.
बु. 9
5 सू. म.
के.
7 8
6



जन्म स्थान–मुम्बई, जन्म–21.12.1963 समय–14.00 रात्रि।

श्री जहीर खान

2 1 के. 12 11
3
4 10
गु.
9
5 श. शु.
सू. 7 मं. चं.
रा.6 बु. 8



जन्म स्थान–श्रीराम पुर, जन्म–7.10.1978, जिला–अहमदनगर (महाराष्ट्र), समय–12.00 रात्रि।

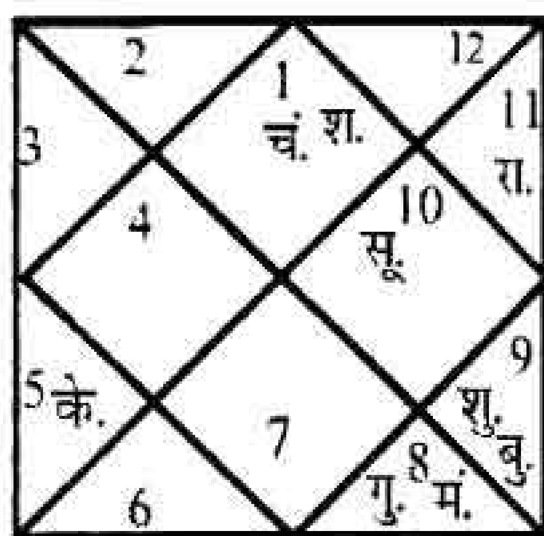
अभिषेक बच्चन

2 1 गु. 12
मं. चं. 11
3 के.
4 10
श. सू.
5 9
7 रा. बु.
8 शु.
6



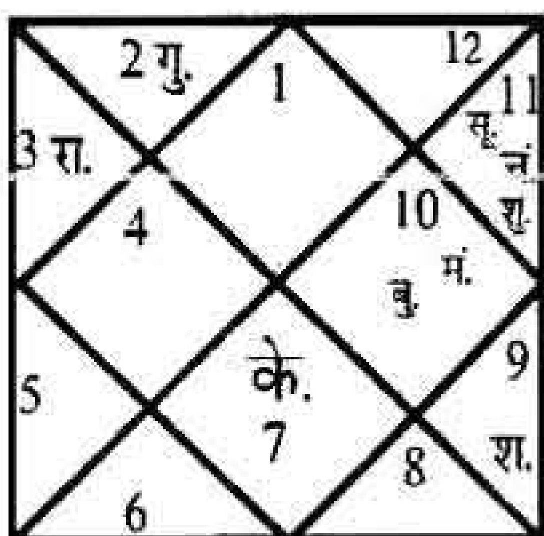
जन्म स्थान–मुम्बई, जन्म–5.12.1976, समय–12.00 रात्रि।

श्री अजय जाडेजा





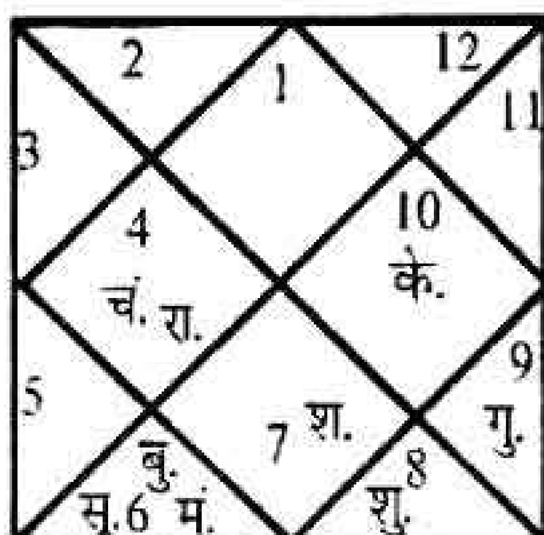
श्री आर.पी. गोयनका





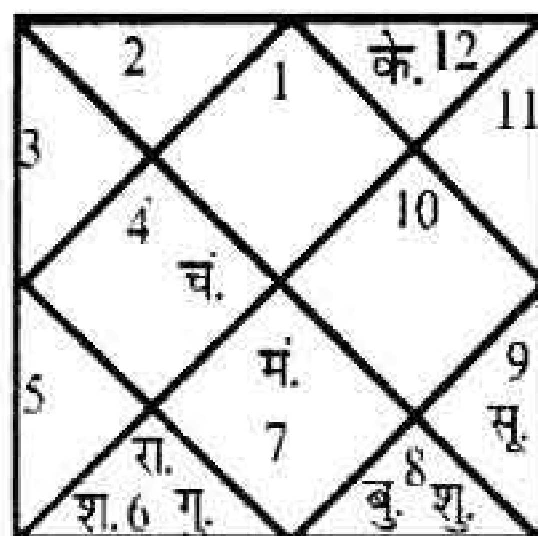
धनाढ्य व्यक्ति, 1.3.1930 समय–8.45 प्रातः।

श्री हीरालाल देवपुरा



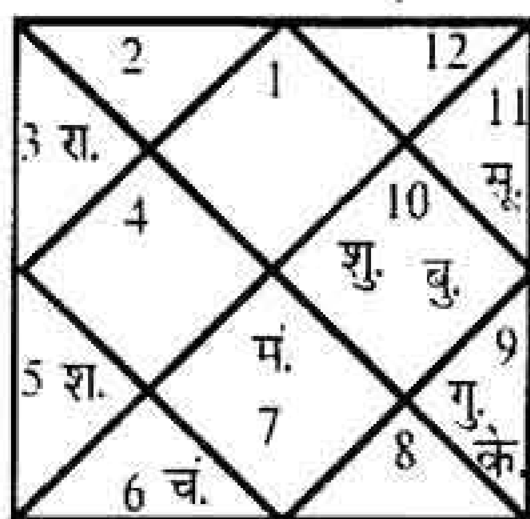
मुख्यमंत्री, राजस्थान सरकार।

श्री हरिदेव जोशी

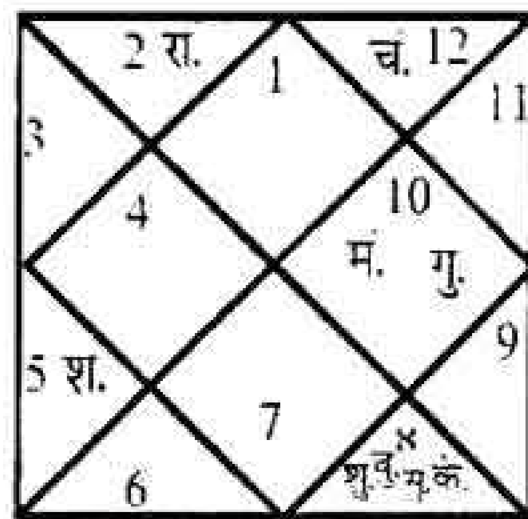


राजस्थान के मुख्यमंत्री, जन्म 17 दिसम्बर 1921, गांव खान्दू (बासवाण)

सम्राट पृथ्वीराज चौहान

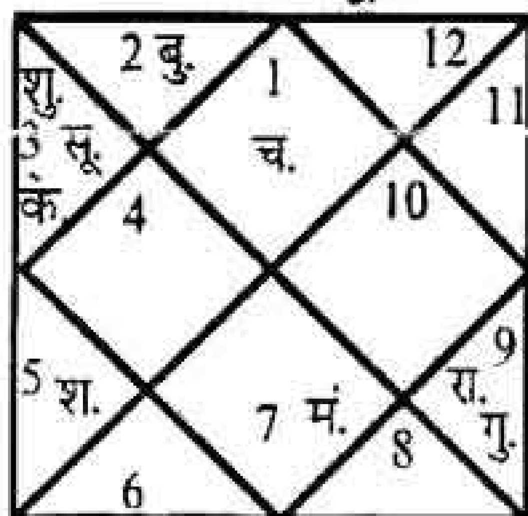


जनरल दिगाल (फ्रांस)

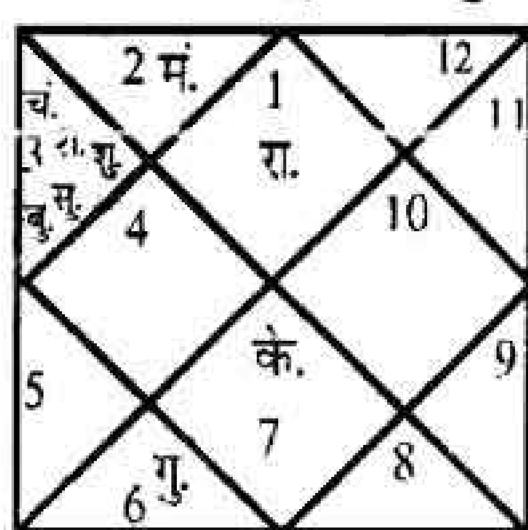


फ्रांस के राष्ट्रपति

राज्यपाल सम्पूर्णानन्द



पाकिस्तान राष्ट्र की कुण्डली



15.8.1947 समय 12.00 मध्यरात्रि, करांची, भारत की कुण्डली वृषभ स्थिर लग्न की है। पाकिस्तान की कुण्डली मेष लड़ाकू लग्न की कुण्डली है।

❑❑❑